आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-018/2006-08
वर्ष : 65 ★ अंक : 7 ★ मूल्य : 10 रु.
15 जुलाई, 2008 ★ आषाढ सं. 2065

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

नमस्कार महामंत्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं ॥
एसो पंच णमोक्कारो,
सव्व-पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं,
पढमं हवइ मंगलं ।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर

मंगल-मूल, धर्म की जननी,
शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी,
फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी' ॥

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

जयगुरु हस्ती
जयगुरु हीरा
जयगुरु मान
भारतवर्ष का स्वर्णतीर्थ
यह श्रेष्ठतम अलंकार प्रकृति ने बनाएँ है...
और यह शुध्दतम अलंकार हम ने...
पीयें धोवन पानी, बोलें मीठी वाणी यही कहे जिनवाणी।
रतनलाल सी.बाफना ज्वेलर्स
सोना • चांदी
औरंगाबाद
आकाशवाणी चौक,
☎ ०२४०-२२४४५२०,२२
जलगाँव
सुभाष चौक,
☎ ०२५७-२२२५९०३,३९०३
हिरे • मोती
Malhar - 08
औरंगाबाद शोरुम शनिवार छुट्टी। | जहाँ विश्वास ही परंपरा है। | जलगाँव शोरुम रविवार छुट्टी।

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'।।

卐 संरक्षक

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन नं. 2636763

卐 संस्थापक

श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 प्रकाशक

प्रेमचन्द जैन, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नम्बर 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003 (राज.),
फोन नं. 0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

卐 सम्पादक

प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन
3 K 24-25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड
जोधपुर- 342005, फोन नं. 0291-2730081
E-mail : jinvani@yahoo.co.in

卐 सह-सम्पादक

नौरतन मेहता, जोधपुर

卐 भारत सरकार द्वारा प्रदत्त

रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं. RJ/JPC/M-018/2006-08

卐 सदस्यता

स्तम्भ सदस्यता-रू.11000/- संरक्षक सदस्यता-रू.5000/
वार्षिक सदस्यता- रू. 50/- त्रिवर्षीय सदस्यता- रू.120/-
आजीवन सदस्यता देश में - रू. 500/-
विदेश में- रू. 5000/-
इस अंक का मूल्य रू. 10/-

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

चउरंगं दुल्लहं नच्चा,
संजमं पडिवज्जिया।
तवसा धुयकम्मंसे,
सिद्धे हवइ सासए।।

— उत्तराध्ययन सूत्र 3.20

दुर्लभ चारों अङ्ग जानकर,
संयम -गुण में चित्त धरें।
तप से कर्म-मैल धो करके,
शाश्वत शिवपद प्राप्त करें।।

जुलाई २००८
वीर निर्वाण संवत् २५३४
आषाढ़ २०६५

वर्ष ६५ अंक ७

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन: 2562929

ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर प्रकाशक के उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

नोट : यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

सम्पादकीय -	उत्पीड़न	-डॉ. धर्मचन्द जैन	५
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-संकलित	९
	विचार-वारिधि	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	१०
प्रवचन-	श्रावक व्रत की महिमा भारी	-उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा.	११
शोधालेख-	ज्ञातृधर्मकथा में बिम्बविधान	-डॉ. प्रभावती चौधरी	१९
	Global Food Crisis	Dr. Jeoraj jain	२६
युवा-स्तम्भ-	तनाव का कारण: राग- द्वेष	-मोनिका बैराठी	३३
अंग्रेजी स्तम्भ-	Guruvandana Sūtra	Dr. Priyadarshana Jain	३९
चिन्तन-	कैसा हो स्वाध्यायी?	-डॉ. चंचलमल चोरड़िया	४२
तत्त्व-चर्चा-	आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ (४३)	- श्री धर्मचन्द जैन	४९
धारावाहिक-	जम्बूकुमार (५०)	-जैन दिवाकर श्री चौथमल जी म.सा.	५२
उपन्यास-	भाई-बहन (९)	-उपाध्याय श्री केवलमुनिजी म.सा.	५७
नारी-स्तम्भ-	स्त्री का कर्तव्य	- आचार्यश्री विजयरत्नसून्दरसूरि जी म.सा.	६०
बाल-स्तम्भ-	निराला स्वप्न	-डॉ. धर्मेन्द्र कुमार काँकरिया	६१
कविता-	वे और हम	-डॉ. दिलीप धींग	२४
	करले आत्म का उत्थान	-श्री अनराज बोथरा	३२
	बेटी	-श्री प्रवीणकुमार जैन	१०१
विचार-	पीयूष- वाक्	-तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.	२५
	स्वाध्यायियों का मागदर्शन	-संकलित	४८
	संथारा	-डॉ. सुरभि भण्डारी	६८
प्रेरक प्रसंग-	सत्य एवं सुन्दर का समन्वय	-श्री प्रबोधकुमार जैन	४१
गुणानुवाद-	अष्टम पट्टधर का गुणानुवाद		६५
साहित्य समीक्षा-	नूतन साहित्य	-डॉ. धर्मचन्द जैन	६७
युवक परिषद्-	आओ स्वाध्याय करें प्रतियोगिता (१८)		६९
	आओ स्वाध्याय करें प्रतियोगिता(१७)का परिणाम		७१
	आचार्य मेधावी छात्रवृत्ति योजना		८३
चातुर्मास सूची-	रत्नसंघ के संत-सतियों का चातुर्मास		७४
समाचार विविधा-	समाचार संकलन		८५
	साभार- प्राप्ति-स्वीकार		१०२

सम्पादकीय

उत्पीड़न

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

हम 'नारी-उत्पीड़न' शब्द से परिचित हैं। नारी-उत्पीड़न से आशय है नारी को जानबूझ कर पीड़ा देना, सताना, दुःखी करना। अंग्रेजी में इसे torture करना कहते हैं। यह उत्पीड़न शारीरिक एवं मानसिक दोनों स्तरों पर हो सकता है। नारी-उत्पीड़न को रोकने हेतु सरकार ने भी कुछ नियम बनाये हैं तथा उन्हें सख्ती से लागू किया गया है। यह उत्पीड़न कभी दहेज को लेकर, कभी पुरुष की अहंप्रवृत्ति के कारण, कभी सासू एवं ननद की धृष्टता के कारण तो कभी किसी अन्य कारण से बहू को भोगना होता है। आज नारी उत्पीड़न के कई रूप प्रकट हो रहे हैं। बहुत से युवक किशोरियों एवं युवतियों को मोबाइल फोन के माध्यम से उत्पीड़ित कर रहे हैं।

यह उत्पीड़न किशोरी या नारी के प्रति ही हो एवं बहू या पत्नी के प्रति ही हो यह आवश्यक नहीं है। एक बहू भी सासू को एवं एक पत्नी भी पति को उत्पीड़ित कर सकती है। उत्पीड़न पुरुष का भी हो सकता है एवं नारी का भी। जो अधिक समर्थ एवं शक्तिशाली है प्रायः वह कम शक्तिशाली एवं असमर्थ को उत्पीड़ित करता है। यही कारण है कि एक अधिकारी अपने अधीनस्थ कर्मियों का उत्पीड़न करता दिखाई देता है। इसी प्रकार एक मालिक अपने मातहतों का शोषण या उत्पीड़न करने में संकोच नहीं करता। कभी अधीनस्थ कर्मचारी संगठित होकर अधिकारी को उत्पीड़ित करते हैं तो कभी मजदूर वर्ग एक होकर अपने मिल मालिक को पीड़ित करते दिखाई देते हैं। इसलिए नारी-उत्पीड़न के स्थान पर पर-उत्पीड़न शब्द का प्रयोग करें तो अधिक व्यापक एवं युक्तिसंगत होगा, क्योंकि उत्पीड़न नारी का हो या पुरुष का, बालक का हो या वृद्ध का, सासू का हो या बहू का, नणद का हो या भाभी का, अधीनस्थ का हो या अधिकारी का, मातहत का हो या मालिक का, शिष्य का हो या गुरु का, प्रजा का हो या नेता का सब अमानवीय एवं वर्जनीय है।

किसी को शारीरिक यातना देना, पीटना, भूखा-प्यासा रखना, क्षमता से अधिक कार्य कराना आदि शारीरिक उत्पीड़न है। शारीरिक उत्पीड़न से मानसिक उत्पीड़न भी होता है। मानसिक उत्पीड़न बिना शारीरिक उत्पीड़न के भी हो सकता

है, यथा- किसी का बार-बार तिरस्कार एवं अपमान करना, बार-बार उसे अयोग्य करार देना, अकारण अपशब्दों का प्रयोग करना, बात-बात में तानें मारना, समुचित व्यवहार न करना, भयभीत करना अदि। उत्पीड़न किसी भी प्रकार का क्यों न हो, वह उत्पीड़न ही है। यह मनुष्य की स्वतन्त्र सत्ता एवं आत्मसम्मान को ठेस पहुँचाता है। मनुष्यों की समानता के मौलिक अधिकार को खण्डित करता है।

पर-उत्पीड़न असंवेदनशीलता एवं निर्दयता का द्योतक है। जब हम दूसरों की चेतना एवं उसमें घटित होने वाले सुख-दुःख के प्रति संवेदनशील नहीं होते तब ही उत्पीड़न के लिए प्रवृत्त हुआ जाता है। पर-उत्पीड़न मानवीय चेतना एवं संवेदनशीलता को कुण्ठित बनाता है। धीरे-धीरे यह उत्पीड़न क्रूरता में भी परिणत हो सकता है।

अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए अथवा अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए व्यक्ति दूसरों को उत्पीड़ित करता है, किन्तु उसका परिणाम होता है टकराव, द्वन्द्व एवं दुःख। दूसरों को पीड़ा देने वाला स्वयं सुखी नहीं रह सकता। वह विविध तनावों एवं आशंकाओं से घिरा रहता है। उत्पीड़ित से भी उसे दुराशीष ही प्राप्त होते हैं, इसलिए किसी भी प्रलोभन या द्वेष के कारण पर-उत्पीड़न को उत्पीड़क के लिए भी हितकारी नहीं कहा जा सकता।

जिसको जो योग्यता, सामर्थ्य या शक्ति प्राप्त है वह उसका सदुपयोग करता है तो वह दूसरों की पीड़ा हरता है तथा जो अपनी योग्यता, सामर्थ्य या शक्ति का दुरुपयोग करता है वह दूसरों के लिए उत्पीड़न में संलग्न होता है। अज्ञानी या अविवेकी व्यक्ति यह नहीं जान पाता है कि दूसरों को पीड़ा या दुःख देने के पूर्व उसे स्वयं अशान्त या दुःखी होना ही पड़ता है। आत्मतुल्यभाव अथवा आत्मवद्भाव के अनुभव का अभाव भी उत्पीड़न का एक प्रमुख कारण है।

कभी-कभी व्यक्ति दूसरों के द्वारा उत्पीड़ित न किए जाने पर भी अपने अज्ञान के कारण दुःखी होता रहता है एवं दोष दूसरे पर मढ़ता रहता है। अधिकतर तो ऐसा ही होता है। व्यक्ति की स्वयं की आदतें ही ऐसी होती हैं कि वह हर परिस्थिति में दुःख का अनुभव करता है। ज्ञानी एवं विवेकशील व्यक्ति तो दूसरों के द्वारा उत्पीड़ित किए जाने पर भी दुःखी नहीं होता। वह जानता है कि दुःख आने पर

भी उद्विग्न एवं दुःखी न होना मेरे अपने हाथ में है। दूसरा दुःखी है, उसके पास मात्र दुःख है इसलिए मुझे दुःख बांट रहा है, किन्तु मुझे इसे स्वीकार नहीं करना है। उत्पीड़क स्वयं की चिड़चिड़ाहट, झुंझलाहट, असंतोष, तनाव आदि की अभिव्यक्ति दूसरों को उत्पीड़ित करके करता है। कोई अपना आतंक बनाये रखने के लिए भी ऐसा करता है, किन्तु यह सब तब व्यर्थ हो जाता है जब कोई उससे अप्रभावित रह जाए।

गृहस्थ जीवन में तो उत्पीड़न के अनेक उदाहरण मिलते ही हैं, किन्तु संयमी-जीवन में भी जब उत्पीड़न के कोई उदाहरण दृष्टिपथ में आते हैं तो श्रावकवर्ग को घोर निराशा होती है। किन्तु उन्हें यह विचार करना चाहिए कि साधु-साध्वी भी मनुष्य हैं, उनमें भी हमारी भाँति ईर्ष्या-द्वेष हो सकता है, अतः कदाचित् उनमें भी उत्पीड़न की प्रवृत्ति उत्पन्न हो सकती है। हाँ, स्वाध्याय, आगमवाणी एवं आत्मार्थी सन्तों की संगति से जब उनकी विचारशुद्धि होती है, चिन्तन की धारा बदलती है तो उत्पीड़न का कार्य विराम भी पा लेता है। फिर परस्पर आत्मीय प्रेम से वे एक-दूसरे को आगे बढ़ाने एवं एक-दूसरे का हित सोचकर उन्हें उसमें नियोजित करने में संलग्न भी होते हैं। सहनशीलता या सहिष्णुता का विकास अपने स्थान पर है, किन्तु सम्यग्ज्ञान एवं विचारशुद्धि के बिना कोई उत्पीड़न से पूर्णतः अप्रभावित रह सके, यह संभव नहीं है। उत्पीड़न एक प्रकार की हिंसा है तथा उसमें क्रोध, मान, माया, लोभ, कषाय भी संपृक्त होते हैं, अतः इस प्रकार की प्रवृत्ति का संयमी जीवन में पूर्णतः लोप ही सबको प्रिय होता है। गृहस्थ एवं श्रावकवर्ग भी स्वयं इस प्रवृत्ति से जितना बचेगा, वह साधु-साध्वियों के विचारों की निर्मलता एवं आचार की शुद्धि में उतना ही अधिक सहायक बन सकेगा।

यह भी ध्यान देने योग्य है कि संसार में केवल मनुष्य ही नहीं रहते। लाखों योनियों के जीव यहाँ रह रहे हैं। हमारी सबके प्रति संवेदनशीलता जाग्रत हो, किसी के भी प्रति मन में द्वेष न हो, किसी को हम उत्पीड़ित न करें, ऐसा भाव मन में वृद्धिंगत हो। अभी भारत में सरकार द्वारा ५५० नये कत्लखाने खोले जाने के समाचार पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो रहे हैं। यह उन प्राणियों के प्रति घोर निर्दयता एवं उत्पीड़न का निकृष्ट उदाहरण है।

कुछ लोग ऐसे हैं जिन्हें दूसरों को उत्पीड़न देकर ही प्रसन्नता होती है। उन्हें

जब कोई उत्पीड़ित करे तो ज्ञात होता है कि दूसरों को उत्पीड़न का क्या परिणाम होता है। कभी-कभी व्यक्ति का दूसरों को पीड़ित करने का मन में तनिक भी विचार नहीं होता, तथापि ईर्ष्या-द्वेष के कारण दूसरा दुःखी होता है तो इसे उत्पीड़न की श्रेणि में नहीं लिया जा सकता, क्योंकि इसमें व्यक्ति दूसरे को जानबूझ कर दुःखी नहीं करना चाहता, दूसरा स्वयं अपने कारणों से दुःखी हो रहा है। उत्पीड़न तो तभी कहा जाएगा जब दूसरे को दुःखी करने की भावना से उसे कष्ट दिया जाता है। कोई छात्र कक्षा में अपने श्रम से प्रथम स्थान पर उत्तीर्ण होता है, इससे यदि दूसरे को पीड़ा होती है तो यह उत्पीड़न नहीं है, क्योंकि कक्षा में प्रथम आने वाला छात्र अपने श्रम एवं योग्यता से प्रथम आया है, उसकी भावना दूसरों को पीड़ा पहुँचाने की नहीं है।

उत्पीड़न में दो पक्ष होते हैं- एक उत्पीड़क तथा दूसरा उत्पीड़ित। जो अपने को अधिक समर्थ, शक्तिशाली एवं योग्य मानता है वह अपने लाभ के लिए अथवा अपनी मिथ्या संतुष्टि के लिए लाचार या विवश व्यक्ति को उत्पीड़ित करता है। वह अपने से अधिक शक्तिशाली, अधिक समर्थ एवं अधिक योग्य को उत्पीड़ित करने का साहस नहीं कर पाता। इसलिए उत्पीड़ित पक्ष को भी उत्पीड़न से बचने के लिए अपनी वास्तविक क्षमताओं का विकास करना चाहिए।

उत्पीड़क बनने की बजाय परपीड़ा-हरण का कार्य हाथ में लें तो सहज आनन्द का अनुभव होगा। इससे दूसरे को भी प्रसन्नता प्राप्त होगी तथा वह पीड़ाहारक के लिए भी शुभकामनाएँ देगा। उत्पीड़न अज्ञान एवं अमानवता का सूचक है। परस्पर प्रेम, मैत्रीभाव एवं आत्मीयभाव से युक्त व्यक्ति उत्पीड़न के विचार एवं व्यवहार से कोसों दूर रहता है। उसे दूसरों को साता पहुँचाकर आनन्द आता है, असाता पहुँचा कर नहीं।

उत्पीड़न अधम कार्य है- परपीड़ा सम नहीं अधमाई। जैनागमों में प्राणिमात्र के प्रति संवेदनशील बनकर उनके प्रति आत्मवद्भाव जाग्रत करने का पदे-पदे संदेश मिलता है। अपनी चेतना के समान ही दूसरों की चेतना है। जो आचरण मुझे दुःखद लगता है वैसा आचरण मैं दूसरों के प्रति क्यों करूँ? इस प्रकार चिन्तन जब रग-रग में जाग्रत होगा तो करुणा एवं मैत्री का झरना अन्तस् में बहेगा, किन्तु उत्पीड़न का विचार भी मन में उद्भूत न होगा। इस प्रकार वह सहज ही प्राणिमात्र का अभयदाता बनने की योग्यता प्राप्त कर लेगा।

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

मूलाओ खंधप्पभवो दुमस्स, खंधाओ पच्छा समुर्विति साहा।
साहप्पसाहा विरुहंति पत्ता, तओ सि पुप्फं च फलं रसो य।।१।।
एवं धम्मस्स विणओ मूलं, परमो से मुक्खो।
जेण कित्तिं सुयं सिग्घं, णिस्सेसं चाभिगच्छइ।।२।।
जे य चंडे मिए थद्धे, दुव्वाई नियडी सढे।
वुज्झइ से अविणीअप्पा, कट्ठं सोयगयं जहा।।३।।
विणयम्मि जो उवाएणं, चोइओ कुप्पइ नरो।
दिव्वं सो सिरिमिज्जंतिं, दंडेण पडिसेहए।।४।।
तहेव अविणीअप्पा, उववज्झा हया गया।
दीसंति दुहमेहंता, आभिओगमुवट्ठिया।।५।।
तहेव सुविणीअप्पा, उववज्झा हया गया।
दीसंति सुहमेहंता, इड्ढिं पत्ता महायसा।।६।।

-दशवैकालिक सूत्र, अध्ययन ९, उद्देशक २, गाथा १-६

होता स्कन्ध विटप जड़ से, फिर शाखा और प्रशाखा भी।
पत्र फूल और फल होते, भर जाता है उसमें रस भी।।१।।
ऐसे ही विनय धर्म की जड़, उसका उत्कृष्ट मोक्ष है फल।
जिससे कीर्ति निधि शास्त्रों की, प्राप्ति रूप मिलता है फल।।२।।
जो क्रोधी अज्ञ दर्पी भीरु, दुर्वादी शठ कपटी होता।
अविनीत हृदय वह दारु तुल्य, जल धारा में खाता गोता।।३।।
सुनकर शिक्षा विनय धर्म की, कुपित हृदय जो हो जाता।
वह आती हुई दिव्यलक्ष्मी को, डंडा मार भगा देता।।४।।
अविनीत अश्व गज ज्यों जग में, केवल दुःख भार उठाते हैं।
प्रत्यक्ष बात वैसे ही ये अविनीत श्रमण दुःख पाते हैं।।५।।
जैसे विनम्र हाथी-घोड़े, भोजन भूषण सुख पाते हैं।
वैसे ही वे नम्र शिष्य, यश ऋद्धि और सुख पाते हैं।।६।।

अमृत-चिन्तन

विचार-वारिधि

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

- मूल में धर्म का स्वरूप अहिंसा, संयम और तप है।
- जिसमें दूसरे जीवों को सताया जाता है अथवा हैरान किया जाता है, कष्ट दिया जाता है, वह हिंसा है। उनको नहीं सताना, हैरान नहीं करना, उनका रक्षण करना, उनके जीवन को बचाना, अहिंसा है।
- इन्द्रियों का निग्रह और मन की वृत्तियों पर काबू करना संयम है।
- कष्ट पड़े तो कष्ट को सहन करना, इसका नाम तप है।
- धर्म आत्मा को दुःख से बचाने वाला है।
- कामना की पूर्ति का साधन अर्थ है और मोक्ष की पूर्ति का साधन धर्म है।
- अहिंसा, संयम और तप जहाँ है वहीं धर्म है।
- आलोचना और प्रतिक्रमण एक तरह से आत्मा का स्नान है।
- मकड़ी अपना जाल फैलाती है सुरक्षा के लिए, लेकिन वह जाल हो जाता है मकड़ी को उलझाने के लिए।
- बीज यदि जल जाय तो उसकी उत्पादन शक्ति नष्ट हो जाती है। फिर उसको भूमि में डालने पर और पानी की सिंचाई करने पर भी अंकुर पैदा नहीं होता।
- कर्मबंध का मूल कारण राग-द्वेष सूख गया, तो कर्मवृक्ष भी सूख जायेगा। झाड़ का मूल यदि सूख जाय तो ऊपर के पत्ते, डालियाँ, फूल, फल कितने दिन हरे भरे रहेंगे ?
- धन पर तुम सवार रहो, लेकिन तुम्हारे ऊपर धन सवार नहीं हो। यदि धन तुम पर सवार हो गया तो वह तुमको नीचे डुबो देगा।
- जिस तरह सूर्य की किरणें सब जगह पहुँचती हैं उसी तरह परमात्मा या सिद्ध का ज्ञान सब जगह पहुँचता है। इसलिये हम कहते हैं कि वे अन्तर्यामी हैं। वे त्रिभुवन के स्वामी हैं।

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

प्रवचन

श्रावक व्रत की महिमा भारी

उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा.

उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा के द्वारा घोडों का चौक, जोधपुर में २४ अगस्त; २००३ को फरमाए गए इस प्रवचन का आशुलेखन जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नौरतन मेहता द्वारा किया गया है। **-सम्पादक**

धर्मप्रेमी बन्धुओं!

भारतीय संस्कृति में पर्वों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। पर्व हमारी संस्कृति के सजग प्रहरी हैं। ये पर्व नहीं आते रहें तो हम संस्कृति को भूल जायें। पर्व याद दिला देते हैं, जगा देते हैं। यही कारण है कि बिना निमंत्रण के, बिना न्यौता दिये आज चारों जगह इसी तरह का ठाट लगा हुआ है। चारों जगह (जोधपुर में चार स्थानों पर धर्माराधना) व्यक्ति समा नहीं पा रहे हैं। आज हर व्यक्ति भावना से आया है इसलिए चार-चार स्थानों पर धर्माराधना होते हुए भी स्थान की कमी अनुभव हो रही है। कभी-कभी इतनी विशाल संख्या हो जाती है कि कुछ कहा नहीं जा सकता। जयपुर-चातुर्मास की समाप्ति के बाद में आचार्य भगवन्त ने चौड़ा रास्ते से विहार किया तो चौड़ा रास्ता भी संकड़ा पड़ गया। वह भक्ति का अतिरेक था। उन भगवन्त का अतिशय अब भी काम कर रहा है। भगवन्त का अतिशय प्रभाव आज भी परोक्ष रूप में वरदान के साथ चतुर्विध संघ को विकास की ओर ले जा रहा है।

पर्व दो तरह के हैं। एक लौकिक, दूसरे लोकोत्तर। आज लौकिक पर्व भी है तो लोकोत्तर पर्व भी। बच्छबारस लौकिक पर्व है। आओ म्हारा हंसराज, आओ म्हारा बच्छराज। लौकिक पर्व आमोद-प्रमोद, खाने-पीने, पहनने-ओढ़ने, घूमने-फिरने को लेकर होता है। भौतिकता को लेकर लौकिक पर्व मनाया जाता है तो लोकोत्तर पर्व आध्यात्मिकता को लेकर, आत्मा के उत्थान को लेकर, गुणों के विकास को लेकर मनाया जाता है। समय-समय पर आत्मोत्थान का सन्देश लेकर ये पर्व आते हैं।

आज पर्वाधिराज पर्युषण पर्व है। इसको पर्व नहीं, पर्वाधिराज कहा। एक

होता है 'महाराजा' और दूसरा होता है 'महाराजाधिराज'। जो कई महाराजों के ऊपर हैं वे महाराजाधिराज। दीपावली के पर्व पर जोधपुर के किले पर **लोंग लिव हिज-हाइनेस** लिखा रहता है। हमारे महाराजाधिराज चिरायु हों। जैसे महाराजाधिराज होते हैं वैसे ही पर्वों में सबसे ऊपर है पर्वाधिराज। पर्वाधिराज पर्युषण पर्व आत्म-विकास का पर्व है, साधना का पर्व है, जन्म-मरण के तापत्रय को शांत करने वाला पर्व है।

पर्वाधिराज पर्युषण पर्व आत्मा को पवित्र करने वाला पर्व है। सामायिक-स्वाध्याय, जप-तप, दया-पौषध आदि के साथ आध्यात्मिक गुण के विकास का पर्व है तथा अनन्त काल से कर्मों का कचरा जो इकट्ठा हो गया उसको साफ करने का पर्व है। इस पर्व पर महापुरुषों के चारित्र को लेकर अन्तकृत्दशांग सूत्र का वाचन होता है। क्यों होता है? कभी-कभी लोगों के मुँह से ऐसा प्रश्न सुनने को मिलता है कि हर साल यही का यही सूत्र क्यों पढ़ा जाता है। वही दस राजकुमार हर वर्ष सुनते हैं। जब तक हम सिद्धि स्थान को प्राप्त नहीं हो जाते तब तक तो सुनना ही है। सुनाना इसलिये है कि महापुरुषों के जीवन-चरित्र को सुनकर हमारी भी भावना बने, हम भी जगत् के दुःखों को छोड़कर शाश्वत सुख को प्राप्त करें। यही पर्व का सन्देश है और यही साधना का लक्ष्य है।

यह आत्मा विकारी अवस्था से, विभाव दशा से स्वभाव को प्राप्त हो। अनन्त काल बीत गया, फिर भी विभाव दशा से स्वभाव दशा में आना नहीं हुआ। जीव इसी कारण तो परिभ्रमण कर रहा है। पर्वाधिराज पर्युषण यही शिक्षा दे रहे हैं, पर्युषण शब्द का अर्थ है- चारों तरफ से ध्यान हटाकर आत्मा के नजदीक बसना। आपके नजदीक कौन? घर नजदीक है, दुकान नजदीक है। अभी घर-दुकान के नजदीक जाने की जरूरत नहीं। वह वर्षों से चल रहा है। तन की, धन की, परिजन की आराधना निरन्तर चल रही है। धन की आराधना में कभी आदमी तन को भूल जाता है। धन के लिए रात-दिन एक कर देता है। भोजन आया हुआ, याद नहीं रहता। दुकान पर भीड़ है टकसाल पड़ रही है, बच्चा कह रहा है भोजन करना है तो भी पिता कहता है रहने दे। सुबह की शाम हो जाती है, कई-कई तो दिन भर खा नहीं पाते। दिन भर नहीं खाया उसे कभी उपवास करने का कह दें तो उसे मंजूर नहीं। मजबूरी है, पर उपवास नहीं। दिन भर भूखे रहने मात्र से पर उपवास नहीं होता है। दुकान पर तो लोभ है, लालच है। उसमें निर्जरा का काम नहीं है। यहाँ बैठकर

सामायिक करें, स्वाध्याय करें, प्रवचन सुनें यह निर्जरा का कारण है। संवर करें, पौषध करें। पर्वाधिराज पर्युषण के दिनों में संवर-साधना से कोई वंचित नहीं रहे। मैं तो कहूँगा जो जाजम पर बैठे हैं वे कम से कम इन पर्व के दिनों में अपने वस्त्रों का परिवर्तन करके सामायिक की वेशभूषा में आकर सामायिक करने वालों के साथ सम्मिलित हों। आपको यहाँ उपकरण भी तैयार मिल रहे हैं।

आज साधन तो बहुत बढ़े हैं, पर साधना नहीं बढ़ रही है। आपको घर से बैठका लाने की जरूरत नहीं। किसी को दया करनी है, पौषध करना है तो भी साधन यहाँ उपलब्ध हैं। आज स्थानक भी नए बन गये हैं। पहले स्थानक पुराने थे, कच्चे थे। स्थानक कच्चे थे तब श्रावक पक्के थे, आज स्थानक पक्के हैं तो श्रावकों में कचावट आ गई है। जितने-जितने साधन बढ़े हैं उतनी-उतनी साधना बढ़नी चाहिये। मैं आपको वस्त्र परिवर्तन का संकेत कर रहा हूँ, यह भारी नहीं है। मूर्तिपूजक तो घर से वस्त्र परिवर्तन कर नंगे पांव जाते हैं। गुरुदेव फरमाते थे- यदि वस्त्र परिवर्तन नहीं होगा तो मन परिवर्तन कैसे होगा? सामायिक के वस्त्र पहनेंगे तो मन में यह भावना तो आयेगी कि अभी मैं सामायिक में हूँ।

आपने सिपाही देखा है। वह यदि सादे वेष में हो तो ? यदि सादे वेष में वह चौराहे पर हाथ ऊँचा-नीचा करे तो लोग उसे पागल समझते हैं और वही सिपाही वेशभूषा में है तो....? एक सिपाही लड़ाई के मैदान में सादे कपड़ों में जाय और एक ड्रेस में जाय तो ड्रेस का मन पर असर होता है। उसे जोश रहता है। आज आपके घर के कपड़े अलग हैं, रात में सोते वक्त अलग कपड़े हैं, कभी जीमने जावें तो कपड़े उस तरह के पहनते हैं। बारात में जाना हो तो.....? आप सांसारिक कार्यों में समय-समय पर वस्त्र बदलते रहते हैं तो धर्मस्थान में सामायिक के वस्त्र पहनने में हिचक क्यों? सामायिक की वेशभूषा एक पहचान है। संत इसी वेशभूषा के कारण पहिचाने जाते हैं। हजारों आदमियों के बीच में वे पहचान में आ जाते हैं। एक सरदार वेशभूषा में दूर से पहचान लिया जाता है कि वह सरदार है।आप अगर सामायिक की वेशभूषा में हैं उस समय कोई भी सरकारी आदमी पकड़ने के लिए भी आया है तो वह दूर खड़ा रहेगा। जब तक साधना चल रही है तब तक हथकड़ी डालना तो दूर हाथ तक नहीं लगायेगा।

कहने का आशय है कि धन के पीछे आदमी तन को भूल जाता है। धन के लिए वह कहाँ-कहाँ चला जाता है। खतरों के स्थान पर जाने में भी उसे चिंता नहीं

होती। कई हैं जो मुसलमानों के बीच में बैठे हैं कई विदेशों में जहाँ अपना कोई नहीं वहाँ जाकर रहते हैं। वे वहाँ क्यों गये? कहना होगा धन की इच्छा है। धन के लिए आदमी खतरों के बीच चला जाता है। तन पर आकर पड़े तो परिजनों को भूल जाता है। आप मरे तो बाप कीने याद आवे। पहले धन, फिर तन और उसके बाद परिजन। कभी कोई बीमार हो जाय तो महाराज के आए, नहीं भी आए, लेकिन अस्पताल चार बार जाना हो तो चला जायेगा। पर्वाधिराज पर्युषण के ये आठ दिन आराधन के दिन हैं। तन-धन-परिजन से ऊपर उठकर धर्म-साधना करने का समय है। तन-धन-परिजन को भूलकर धर्मस्थान में जायेंगे तो आपको कुछ सन्तोष का अनुभव होगा।

मानव देव-देवेन्द्र से महान् है। देवता आपकी तरह से उपवास नहीं कर सकते, दया-संवर, सामायिक-स्वाध्याय नहीं कर सकते, इसलिए आपका दर्जा देव-देवेन्द्र से ऊँचा है। देव व्रत अंगीकार नहीं कर सकते। देवता क्या, देवताओं का स्वामी इन्द्र भी धार्मिक व्यक्ति की बराबरी नहीं कर सकता। **देवावितं नमंसंति जस्स धम्मे सया मणो।** देवता भी धर्म साधना करने वाले मानवों को नमस्कार करते हैं। देव श्रावक के घर उत्पन्न होने की इच्छा करते हैं।

धर्म की साधना, दर्शन की आराधना और चारित्र की उपासना मानव कर सकता है,किन्तु देवताओं के लिए दुर्लभ है। इस मानव जीवन को प्राप्त करने के लिए देवता तरसते हैं। देवता श्रावक के घर जाकर उत्पन्न होना चाहते हैं। अगर मेरी इतनी पुण्यशालिता नहीं है तो मैं श्रावक के घर दास बन जाऊँ, दास का अनुदास बन जाऊँ। क्यों, तो श्रावक के घर सहज में बहुत सारी बुराइयों से बचाव हो जाता है। जो श्रावक मर्यादा का पालन करता है वह कभी दुर्गति में नहीं जाता। पाँचवें गुणस्थान में अयशःकीर्ति नाम कर्म का उदय है ही नहीं। श्रावक कभी ऐसा काम नहीं करता जिससे उसको कोई अंगुली निर्देश कर सके।

एक जाट ने दूसरे जाट को फँसा दिया, तीसरे पर इलजाम लगा दिया। उसने सौ गवाह तैयार कर लिये। जिसे फँसाया गया वह जाट जज के सामने पहुँचा। वाणी सुनकर जज पहचान गया कि इसे फँसाया गया है। अपराधी कौन, इसका सच्चाई के साथ निर्णय करना है। जज साहब ने पूछा-तुम्हारा कोई गवाह है क्या? हाँ मेरे पड़ौस में रहने वाला एक श्रावक साक्षी दे सकता है। जज ने कहा- अच्छा, उसे कल लेकर आओ। श्रावक को लेकर वह अदालत में उपस्थित हुआ। श्रावक

ने कहा- ''मैं विश्वास के साथ कहता हूँ कि यह कभी ऐसा काम नहीं कर सकता।'' जज ने सोचा श्रावक कभी झूठ नहीं बोलता, इसलिए दूसरी सारी गवाहियों को रद्द कर जज ने श्रावक की गवाही को स्वीकार किया। यह है श्रावक का जीवन! श्रावक का जीवन कितना ऊँचा होता है आप इस उदाहरण से समझ सकते हैं। देवता श्रावक के पास आते हैं, श्रावक को देवता के पास जाने की जरूरत नहीं। आज देव नहीं, यों ही पत्थर पर मालीपन्ने लगा रखें हैं, वहाँ पूजने चले जाते हैं।

खुद जावे देव पास, देव करे तारी आस।
मन में विचार कर, ये देवता है के लेवता।
कहे मुनि रिखबचन्द, मन में विचार कर।
यह तो आंधाणी री नाव में आंधणा ही खेवता।।

जिस श्रावक के भव के लिये देवता तरसते हैं, मानव आज जगह-जगह भटक रहा है। हमारे यहाँ चार जाति के देव माने गये हैं, वे तो फिर भी देव रूप में हैं, शेष इधर-उधर के देवता देव नहीं है। अभी एक भाई बोल गया-

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।

यह गीता का श्लोक है। कृष्ण कहते हैं- जब-जब धर्म की हानि होती है मैं आकर अवतार लेता हूँ। यह अवतारवाद का रूप वैष्णव परम्परा का है। एक बार भगवान् महावीर का जन्म-दिवस था। एक सती जी ने बातचीत में किसी से कह दिया कि जब-जब संकट आता है तो तीर्थंकर जन्म लेते हैं।आचार्य भगवन्त ने फरमाया कि संकट के आने पर तीर्थंकर जन्म लेते हैं, ऐसा नहीं है। यदि संकट आने पर तीर्थंकर जन्म लेते तो अभी कौनसा कम संकट है? आज हिंसा बढ़ रही है, व्यभिचार बढ़ रहा है, बुराइयाँ बढ़ रही हैं तो फिर तीर्थंकर क्यों नहीं जन्म लेते?

श्री कृष्ण हमारे यहाँ मर्यादा पुरुषोतम हैं, श्लाघनीय पुरुष के नाम से हैं, वासुदेव के नाम से हैं। उन्होंने धर्म दलाली करके तीर्थंकर गोत्र का बंध कर लिया, लेकिन वर्तमान में वे वासुदेव के नाम से प्रसिद्ध हैं। उन्होंने मर्यादा कायम की थी इसलिए मर्यादा पुरुषोतम हैं। उस समय जो भी पीड़ितजन थे उन्होंने उनकी पीड़ा मिटाने की कोशिश की। भगवान मारने वाले नहीं, तारने वाले होते हैं। लोग श्रीकृष्ण को भगवान कह देते हैं, पर वे वासुदेव थे, जिन्होंने अरिष्टनेमि के शासन में

धर्म की जाहोजलाली की। गौतम का अधिकार भी आपने सुना है। महापुरुषों के जीवन चरित्र सुनाने के पीछे यही कारण है कि हमारे अन्तर में कुछ शासन-सेवा की भावना जगे। भावना जगने पर दीक्षित होवें। आप दीक्षित नहीं हो सकते तो कम-से-कम जो दीक्षा ले रहें है उनकी अनुमोदना तो करें। त्याग और त्यागी के प्रति अनुमोदना का भाव जगायें। श्री कृष्ण स्वयं दीक्षित नहीं हो सके। वे तीन खण्ड के अधिपति कह रहे हैं- धन्य हैं जालिकुमार, मयालिकुमार, प्रद्युम्नकुमार। मैं अधन्य हूँ, अकृत पुण्य हूँ। छप्पन करोड़ यादवों का स्वामी जिनके पास साठ हजार दुर्दान्त सामन्त थे, साढ़े तीन करोड़ राजकुमारों का परिवार था, इतनी ऋद्धि और चतुरंगी सेना होते हुए भी अपने आपको अधन्य कह रहे हैं और जिन्होंने दीक्षा ली - दीक्षा ले रहे हैं, उनको धन्यवाद करते हैं। स्वयं दीक्षा नहीं ले सकते तब भी वे दूसरों को साज देकर कह रहे हैं कि जो कोई दीक्षा ले तो मैं उसकी सार-संभाल करूँगा। किसी का पुत्र नहीं तो मैं पुत्र की तरह सेवा करूँगा। आज दीक्षा में अड़चन डालने वाले कई मिल सकते हैं, किन्तु अड़चन मिटाने वाले कितने हैं? दीक्षा अंगीकार करने की जिसकी भावना है उसकी अड़चन दूर करना भी निर्जरा का कारण है। किसी की दीक्षा लेने की भावना है और उसके बच्चे छोटे हैं उन बच्चों को पाल-पोषकर बड़ा करना गलत नहीं है। जो भी दीक्षा लेने वाला था उसके पीछे रहे परिवार की श्री कृष्ण ने सब तरह से जबाबदारी ली।

श्री कृष्ण श्लाघनीय पुरुष थे। श्लाघनीय पुरुष किसे कहते हैं, जानते हैं आप? आप जबाब नहीं दे रहे हैं इसका कारण है आपका स्वाध्याय नहीं है। हम जब भी कोई बात पूछते हैं तो आप चुप हो जाते हैं। श्लाघनीय पुरुष वह होता है जो धर्मप्रधान, कर्मप्रधान और भोगप्रधान होता है। तीर्थंकर धर्मप्रधान होते हैं तो चक्रवर्ती भोगप्रधान होते हैं। चक्रवर्ती से बढ़कर भोग किसी के पास नहीं होते। कर्म-प्रधान वासुदेव होते हैं। ये तीन श्रेणियाँ हैं और ये तीनों श्लाघनीय पुरुष कहलाते हैं। श्लाघनीय पुरुष सब मोक्ष जाने वाली आत्माएँ होती हैं। चक्रवर्ती दीक्षा लेकर मोक्ष जाते हैं, वासुदेव तीर्थंकर गोत्र का बँध करते हैं। वे सम्यक् दर्शी होते हैं, इसलिए भविष्य में मोक्ष में जाने वाले हैं। सम्यक् दर्शन जिसको हो गया वे सबके सब भवी होते हैं। श्लाघनीय पुरुष भवी होते हैं शुक्ल पक्षी होते हैं, सम्यक्त्व वाले होते हैं भले ही नरक में हों। तीर्थंकरों के जन्म, दीक्षा, कैवल्य और निर्वाण कल्याणक पर देवता आते हैं, आठ दिन महोत्सव करते हैं।

कर्म आठ हैं तो सिद्धों के गुण भी आठ हैं। पर्युषण के आठ दिनों में आठ प्रवचन माता की आराधना करना, आठ मद छोड़ना है। आठवां अंग शास्त्र है अन्तगडदसा सूत्र। इसके आठ ही वर्ग हैं और आठ दिनों में इसकी वाचना होती है। पर्युषण पर्व के आठ दिनों में श्रावक का क्या कर्त्तव्य है-

यह पर्व पर्युषण आया, सब जग में आनन्द छाया रे।।
यह विषय कषाय घटाने, यह आतम गुण विकसाने
जिनवाणी का बल लायारे (पर्व)
ये जीव खुलो चहूँ गति में, ये पाप करण की रति में
निज गुण सम्पदा को खोया रे (पर्व)
तुम छोड़ प्रमाद मनाओ, नित धर्म ध्यान रम जाओ
लो भव भव दुःख मिटायारे (पर्व)
तप जप से कर्म खपाओ, देव दान द्रव्य फल पावो
ममता त्यागी सुख पाया रे (पर्व)

पर्व पर्युषण आते ही सारे जगत में आनन्द छा गया। देवता भी नंदीश्वर द्वीप जाकर भक्ति करते हैं। देवता उपवास-पौषध, सामायिक-स्वाध्याय, दया-संवर नहीं कर सकते। मोहनीय कर्म के उदय के कारण से वे अप्रत्याख्यानी हैं। देव सम्यक्दृष्टी तो बन सकते हैं, किन्तु व्रताराधन नहीं कर सकते। वे भक्ति कर सकते हैं। भक्ति करने का उनका साधन है नाचना, कूदना, गाना, नाटक, तमाशा। श्रावक को देवताओं से इसीलिए ऊँचा कहा गया है कि वह व्रताराधन कर सकता है। आप त्याग कर सकते हैं, तपस्या कर सकते हैं, ज्ञान-दर्शन-चारित्र की आराधना कर सकते हैं, साधु बन सकते हैं। दशार्णभद्र ने भक्ति बताई, पर इन्द्र ने आकर उसके गर्व को चूर कर दिया। इन्द्र ने कहा- ऐसी भक्ति तो मैं भी कर सकता हूँ। श्रावक ने जब दीक्षा की बात कही तो इन्द्र ने हार मान ली। देवता ने कह दिया कि यह ताकत मेरे में नहीं है। देव भी आठ दिन महोत्सव करते हैं। बाबाजी सुजानमल जी महाराज फरमाया करते थे-

भक्ति भगवान की बहुत बारीक है।
शीस सौंप्याँ बिना मुक्ति नाहिं।।

सच्ची भक्ति है त्याग में, तप में, स्वाध्याय में, संवर में। आज ज्ञानाराधना का दिन है, स्वाध्याय करने का दिन है। अज्ञान के अंधकार को हटाने का दिन है तो ज्ञान-ज्योति प्रकाशित करने का दिन है। एक वैष्णव संत थे। कॉलेज के कुछ

मनचले विद्यार्थियों ने उधर से निकलते महात्मा को देखा तो सोचा-चलो महात्मा जी से दो बातें कर लें। लड़कों ने कहा- बाबजी! दण्डवत्। महाराज ने आशीर्वाद दे दिया। आगे लड़कों ने कहा- "बाबजी! यह वेश आपने कब से धारण किया?" महात्मा ने कहा-" मैं जब छोटा था, पाँच-छः साल का था तब से यह वेश धारण कर लिया।" लड़कों ने पूछा-" बाबजी! आपने कभी सिनेमा देखा? बेटा, यह क्या चीज है, मैंने तो कभी नाम नहीं सुना।" लड़कों को कुतूहल था, बोले-" चलो बाबजी आज सिनेमा देखते हैं।" महाराज ने भी कहा-"ठीक है, चलो।" महाराज मस्त थे चल दिये। जाकर हॉल में बैठ गये। वहाँ जाकर लड़कों ने कहा- "महाराज! सामने जो पर्दा है उस पर देखते रहना।" थोड़ी देर में बत्तियाँ बन्द हुई। चलचित्र चालू हो गया। तीन घंटे तक फिल्म चलती रही। तीन घंटे बाद बाहर आये तो लड़कों ने पूछा-" बाबजी! क्या देखा? महाराज ने कहा और तो कुछ समझ में नहीं आया जब अंधेरा था तब उछल कूद चल रही थी, नाच हो रहा था, गाना चल रहा था बस यही देखा। बत्ती चालू हुई तो सब नाच कूद बन्द हो गया।"

यही बात है जब तक अज्ञान का अंधकार है तब तक यह नाचकूद है और ज्यों ही ज्ञान का प्रकाश हो गया तो सारी नाच-कूद बंद। यह पर्युषण पर्व आत्म-ज्ञान को विकसित करने के लिए है। आप इन दिनों में यह चिन्तन करें कि हमारे कषाय कितने पतले हुए हैं?

कितनी त्याग सका परनिन्दा,
कितना अपना अन्तर देखा।

अनन्तकाल से यह जीव चार गतियों में रूलता आ रहा है। मैंने पहले कहा था-"जीव की आदि है, अन्त नहीं। सिद्धों की आदि है, पर अन्त नहीं। सिद्ध सादि अनन्त हैं। संसार के जीवों के सुख की आदि है, अन्त भी है, पर एक सुख ऐसा है जो आता है, जाता नहीं। वह है अव्याबाध सुख। उस सुख के लिए यह साधना-आराधना है। जिन आत्माओं ने जन्म, जरा एवं मरण का अन्त कर दिया और केवली बनकर मुक्ति में चले गये उन्हीं के गुणगान गाये जाते हैं, उन आत्माओं का वर्णन सुनने को मिलता है। आप-हम सब मुक्त होना चाहते हैं। केवलज्ञान-केवल दर्शन पाना चाहते हैं। इसीलिये ज्ञान-दर्शन-चारित्र-तप की आराधना की बात कही जाती है। जो भव्य जीव साधना-आराधना करेंगे वे अवश्य ही अपनी आत्मा का कल्याण करेंगे।"

शोधालेख

ज्ञातृधर्मकथा में बिम्बविधान

डॉ. प्रभावती चौधरी

अङ्ग साहित्य में ज्ञातृधर्मकथा का छठा स्थान है। यह दो श्रुतस्कन्धों में विभाजित है। प्रथम श्रुतस्कन्ध में ज्ञात अर्थात् उदाहरण हैं एवं द्वितीय श्रुतस्कन्ध में धर्मकथाएँ हैं। तत्त्वार्थभाष्य में ज्ञाताधर्मकथा शब्द की व्युत्पत्ति इस प्रकार से की गई है :-"ज्ञाताः दृष्टान्ताः तानुपादाय धर्मो यत्र कथ्यते ताः ज्ञाताधर्मकथाः"। नन्दीवृत्ति में किञ्चिद् भिन्न व्युत्पत्ति प्रस्तुत की गई है- "ज्ञातानि उदाहरणानि तत्प्रधाना धर्मकथा ज्ञातधर्मकथा अथवा ज्ञातानि ज्ञाताध्ययनानि प्रथमश्रुतस्कन्धे, धर्मकथा द्वितीयश्रुतस्कन्धे यासु ग्रन्थपद्धतिषु (ताः) ज्ञाताधर्मकथाः। (नन्दीवृत्ति पत्र - २३०) अर्थात् ज्ञात का तात्पर्य है उदाहरण। ज्ञात (उदाहरण) प्रधान धर्मकथाएँ ज्ञाताधर्मकथा है अथवा प्रथम श्रुतस्कन्ध में ज्ञात एवं द्वितीय श्रुतस्कन्ध में धर्मकथाएँ होने से इसे ज्ञाताधर्मकथा कहा गया है। ज्ञात का अर्थ दृष्टान्त मानना ही उचित है, शास्त्र में दृष्टान्त का लक्षण इस प्रकार दिया गया है-

दृष्टान्तस्तु सधर्मस्य वस्तुनः प्रतिबिम्बनम्।

अर्थात् समान धर्म वाली वस्तु का प्रतिबिम्ब दृष्टान्त है। ऐसी स्थिति में जो भी दृष्टान्त ग्रन्थ में प्रस्तुत किए गये हैं वे सकल ही बिम्ब हैं अथवा सम्पूर्ण ग्रन्थ के अध्ययन के पश्चात् उसका जो स्वरूप हमारे समक्ष प्रस्तुत होता है वही उसका बिम्ब है अथवा प्रतीक रूप में ग्रहण किए गए रूपकों से लक्षित अर्थ ही इसका बिम्ब है। इन तीनों ही दृष्टियों से यहाँ विचार करना अभीष्ट है।

प्रथम श्रुतस्कन्ध में १९ अध्ययन तथा द्वितीय श्रुतस्कन्ध में दस वर्ग हैं। द्वितीय श्रुतस्कन्ध में दृष्टान्तों एवं रूपकों का आश्रय न लेकर साक्षात् ही धर्मकथाओं का निरूपण किया गया है। किन्तु प्रथम श्रुतस्कन्ध में व्यक्ति एवं समाज से सम्बन्धित दृष्टान्तों एवं रूपकों का आश्रय लिया गया है। इन कथाओं में से कुछ कथाएँ ऐतिहासिक व्यक्तियों से सम्बन्धित हैं तथा कुछ कथाएँ रूपक के

रूप में हैं। इन समस्त कथाओं का प्रयोजन इस प्रकार है-

(१) जिन - प्रवचन में श्रद्धा उत्पन्न करना।

(२) भोगों की नश्वरता का कथन करना तथा विषयासक्त जनों को संयम के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देना।

(३) संयम के मार्ग में आने वाली बाधाओं से साधक को अवगत कराना।

(४) दोष उत्पन्न होने पर प्रायश्चित्तादि द्वारा उसका परिहार करके संयम के मार्ग पर प्रवृत्त करना।

प्रयुक्त दृष्टान्तों का वैशिष्ट्य-

(१) **धनवैभव से मोक्षमार्ग की श्रेष्ठता का प्रतिपादन-** ग्रन्थ में जितने भी दृष्टान्त दिए गये हैं वे प्रायः वैभवशाली एवं भोगोपभोगों से युक्त परिवारों से लिए गए हैं। मेघकुमार, राजा शैलक, राजा श्रेणिक, मल्लीकुमारी एवं उनके छह साथी, राजा जितशत्रु, राजा कनकरथ, राजा पुण्डरीक - समस्त दृष्टान्त राज परिवार के हैं जो वैभव को छोड़कर जिनधर्म में दीक्षित हुए। इन दृष्टान्तों के द्वारा धनवैभव एवं विपुलभोगों में आसक्त तथा साधारण भोगों में आसक्त-दोनों ही प्रकार के मानवों को प्रेरणा दी गई है कि संयम का मार्ग इन भोगों से श्रेष्ठ है। इसी कारण मेघकुमार जैसा राजकुमार एक पल भी विचार किए बिना राज-पाट का लोभ छोड़कर संयम के मार्ग पर चल पड़ता है। साथ ही नवदीक्षित साधु को संयम में दृढ़ रहने की प्रेरणा मिलती है।

(२) **शुभस्य शीघ्रम् -** शुभ कार्य में विलम्ब उचित नहीं है। जिस क्षण वैराग्य उत्पन्न हो उसी क्षण उस मार्ग का अवलम्बन करना श्रेयस्कर है। यही कारण है कि मेघकुमार जब उग्रतपस्या एवं संल्लेखना हेतु भगवान् महावीर से अनुमति प्राप्त करने जाते हैं तो उनका हर बार यही कथन है

'अहासुंह देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेह।'

इस प्रकार के कथन ज्ञातृधर्मकथा में अनेक स्थानों पर प्राप्त होते हैं।

(३) **जिनप्रवचन में श्रद्धा उत्पन्न करना -** ग्रन्थ में संयम-मार्ग में जितनी भी दीक्षाओं का वर्णन है सभी साक्षात् जिन-प्रवचन अथवा परम्परागत जिन प्रवचन में श्रद्धा से उत्पन्न वैराग्य का ही फल है। दीक्षा ग्रहण करने के पश्चात् इस श्रद्धा को दृढ़ करना आवश्यक है। शङ्का, काङ्क्षा एवं विचिकित्सा का

इस मार्ग में कोई स्थान नहीं है। मयूरों के अण्डों को ग्रहण करने वाले दो श्रेष्ठिपुत्र जिनदत्तपुत्र एवं सागरदत्तपुत्र इस बात के प्रतीक हैं कि सन्देह अनर्थ का कारण है एवं संयम प्रयोजन सिद्धि का।

(४) **शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्** – असंयमी एवं विषयासक्त जन यदि साधक के भोजन करने पर आक्षेप करें तो साधक को इस वचन की उपेक्षा करना ही उचित है, क्योंकि तपस्या मार्ग पर चलने के लिए शरीर-रक्षा आवश्यक है। अतः साधु का आहार-ग्रहण उसकी विषयासक्ति का सूचक नहीं है, अपितु उग्र-तप एवं संयम-साधना की हेतु शरीररक्षा का साधन है। विजयचोर एवं सुसुमा की कथा में इसी बात पर बल दिया गया है।

(५) **समभाव : साधु जीवन का आधार**– साधु-जीवन में चक्रवर्तित्व अथवा दासत्व में कोई भेद नहीं होता है। यदि दास चक्रवर्ती सम्राट् से पहले दीक्षित होता है तो वह समाट् का आदरणीय है। मेघकुमार की कथा व कनकध्वज की कथा इस ओर संकेत करती है। यही कारण है कि चक्रवर्ती पद छोड़कर दीक्षित हुए मेघकुमार जब अपने पूर्व प्राप्त सम्मान का त्याग न कर सके तो अवमानना की स्थिति आने पर धर्म-स्खलित हुए तब भगवान् महावीर ने उन्हें मधुर शब्दों में उपालम्भ देकर पुनः स्थिर किया।

(६) **यादृशी मतिः तादृशी गतिः**– जीवन के अन्तिम क्षणों में व्यक्ति की मति वैसी होती है जैसा जीवन भर का उसका संस्कार है। अन्त समय में जैसी मति होती है वैसी ही जीव की गति होती है। यही कारण है कि धर्म का आचरण करने वाले नन्द-मणिहार की स्खलित हुई मति जब तृषा-परीषह को सहन न कर पाने के कारण बावड़ी बनवाने के पश्चात् उसमें प्रबल आसक्ति से युक्त होती है तो विविध रोगों से पीड़ित नन्द-मणिहार अपने अन्त समय में भी उस बावड़ी में ही आसक्त रहता है। यही आसक्ति उसके उसी बावड़ी में मेंढक के रूप में जन्म लेने का कारण बनती है। अतः मति शुद्धि न केवल साधक के लिए अपितु सामान्य जन के लिए भी आवश्यक है।

(७) **अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्** – यही पुनर्जन्म का सिद्धान्त है। तपस्या के पश्चात् भी जिन कर्मों की निर्जरा नहीं होती उनका भोग अवश्य करना पड़ता है। ऐसी स्थिति में तप के मार्ग पर न चलने वाले सामान्य जन एवं

अधम कर्म-प्रवृत्त जनों के दृष्टान्त प्रेरणास्पद हैं। विजय चोर एवं नागश्री का दृष्टान्त अधम कर्म के घोर फलों की ओर सङ्केत करता है। इसी प्रकार तपश्चर्या के मार्ग पर चलकर उसे सहन न कर पाना बन्ध का कारक है जैसे सुकुमालिका के रूप में द्रौपदी के जीव का तपश्चरण-क्लेश मोक्षदायक नहीं हुआ।

(८) संयम-च्युति से नाश – संयम मार्ग पर चलना अत्यन्त कठिन है। साधक के जीवन में विविध उपसर्ग आते हैं, इन उपसर्गों से आतङ्कित नहीं होने वाला साधक मोक्ष को प्राप्त करता है। जिनरक्षित एवं जिनपालित की कथा प्रतीक है उन विविध उपसर्गों की जो साधना के मार्ग में आते हैं। सुख की अभिलाषा बन्ध की कारक एवं घोर दुःखों की कारण है। अतः विषयों से विरत रहना ही श्रेयस्कर है। भव्य जीव तो विषय-भोगों से युक्त इस संसार रूपी महासागर को पार करता है, किन्तु जो जीव अविरति से बाधित होकर संयम-च्युत होते हैं उन्हें दुःख रूपी हिंसक प्राणियों से व्याप्त इस संसार-सागर में आना पड़ता है। जिनरक्षित की कथा इसी ओर सङ्केत करती है। साथ ही प्रतिकूल परीषहों की अपेक्षा अनुकूल परीषहों को सहना कठिन है। देवी के प्रलोभन से क्षुब्ध न होने वाले जिनपालित की कथा इस ओर सङ्केत करती है।

(९) दृष्टान्तों का सामाजिक महत्त्व–

- सकल दृष्टान्त सामाजिक व्यवहार के भी प्रतिपादक हैं। साधकों को संयम में अग्रसर करने के अतिरिक्त समाज की दृष्टि से भी ये अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। इन दृष्टान्तों में वाक्-व्यवहार के संयम को अत्यधिक महत्त्व दिया गया है। दास-दासियों के प्रति भी देवानुप्रिय का सम्बोधन मानव मात्र के लिए आदर की प्रेरणा देता है।
- धन-वैभव का प्रदर्शन समाज में बुराई को जन्म देता है। इस प्रदर्शन से पर में लोभ एवं आसक्ति उत्पन्न होती है तथा यह स्वयं के लिए भी अनिष्टकारक है, विजय चोर की कथा इसका दृष्टान्त है।
- गृहस्थ जीवन में रहकर पञ्च अणुव्रतों एवं सात शिक्षाव्रतों को धारण करके जीवनयापन करना मनुष्य के लिए श्रेष्ठ मार्ग है। दान-दक्षिणा एवं जीवमात्र के प्रति अनुकम्पा से शुभ-कर्मों का सञ्चय होता है। सुकुमालिका की कथा एवं

अन्य श्रेष्ठियों की कथा इसका प्रतीक है।

- जन्म एवं मृत्यु के समय सम्पन्न की जाने वाली क्रियाएँ लोकाचार है एवं ये क्रियाएँ सम्पन्न करना हर गृहस्थ का कर्त्तव्य है।
- शिक्षा व्यक्तित्व निर्माण का महत्त्वपूर्ण साधन है, अतः माता-पिता का कर्त्तव्य है कि वे उचित समय पर सन्तान की उचित शिक्षा की व्यवस्था करें। मेघकुमार एवं अन्य राजपुत्रों एवं श्रेष्ठिपुत्रों की शिक्षा के प्रकरण में विविध कलाओं का उल्लेख प्राप्त होता है। ये कथाएँ मानव की ज्ञानेन्द्रियों एवं कर्मेन्द्रियों के पूर्ण विकास के लिए अत्यन्त उपयोगी थी। प्रस्तुत ग्रन्थ में पुरुषों के लिए ७२ कलाएँ एवं स्त्रियों के लिए ६४ कलाओं (मल्लीकुमारी की कथा) का उल्लेख है।
- परिवार में कार्य-विभाजन योग्यता के अनुरूप होना चाहिए। धन्य-सार्थवाह एवं उसकी चार पुत्रवधुओं की कथा इस ओर सङ्केत करती है। सुसुमा की कथा तत्कालीन सामाजिक असुरक्षा का सङ्केत करती है। साथ ही परिवार के सदस्यों के परस्पर व्यवहार की दिग्दर्शिका है। जहाँ पिता एवं पुत्र सभी अपने परिवार के सदस्यों की प्राण-रक्षा हेतु प्राणोत्सर्ग करने के लिए तत्पर हैं ऐसे समय में पिता के द्वारा सुसुमा के मृत-शरीर के सेवन का निर्देश शरीर-रक्षा की विवशता का सङ्केत देता है जो किसी भी प्राणी का हृदय द्रवित करने में समर्थ है। अश्व एवं कूर्म के दृष्टान्त विषय लोलुप मनुष्यों को जाग्रत करने के लिए हैं, वे साधकों को अपनी साधना में भी स्थिर करते हैं। मूढ़ व अविवेकी व्यक्ति अपने नाश को देखकर भी जागरूक नहीं होते, किन्तु विवेकीजन आत्म-संयम से अपना कल्याण करते हैं। विषयलोलुपता का दुष्परिणाम मनुष्यों को भोग से निवृत्त होने की प्रेरणा देता है।
- गर्भ के समय उत्पन्न होने वाली विचित्र एवं असामान्य इच्छाएँ दोहद कहलाती हैं। यह दोहद गर्भस्थ शिशु की इच्छा मानी गई है, अतः इसे यथा-संभव पूरा करना आवश्यक है, अन्यथा गर्भवती स्त्री रुग्ण हो जाती है। मेघकुमार, देवदत्त, मल्लीकुमारी की कथाओं में इन विचित्र दोहदों एवं उन्हें पूरा करने का विस्तार से वर्णन है।
- तुम्बे का रूपक कर्मवाद जैसे गम्भीर विषय को समझाने के लिए दिया गया है। जिस प्रकार मिट्टी का लेप तुम्बे को भारी करके जलमग्न कर देता है उसी प्रकार

कर्मों का लेप मनुष्य को संसार सागर में मग्न कर देता है। जिस प्रकार मिट्टी का लेप हटा देने पर वही तुम्बा हल्का होकर पानी पर तैरने लगता है उसी प्रकार कर्मों की निर्जरा से मुक्त हुआ जीव संसार-सागर को पार कर जाता है।

दृष्टान्तों का साहित्यिक सौन्दर्य– ये दृष्टान्त तत्कालीन सामाजिक स्थिति का ही वर्णन नहीं करते, अपितु साहित्यिक सौन्दर्य का उत्कृष्ट स्वरूप प्रकट करते हैं।

- ज्ञातृधर्मकथा की भाषा शैली जटिल है, किन्तु प्रयुक्त दृष्टान्तों एवं रूपकों ने अपनी सरलता, सुबोधता एवं हृदयङ्गमता से जटिल भाषा एवं जटिल विषय को अत्यन्त सरल तथा रोचक बना दिया है।
- अनेक उपमाओं एवं रूपकों का आश्रय लेकर इन दृष्टान्तों को रोचक एवं सुन्दर बनाया गया है। पाँच प्रकार के वर्ण वाले मेघों को दी गई उपमाएँ द्रष्टव्य हैं–

 अग्नि जलाकर शुद्ध की हुई चाँदी के पतरे के समान, अङ्क नामक रत्न, शंख, चन्द्रमा, कुन्द-पुष्प एवं चावल के आटे के समान सफेद, चिकुर नामक रंग, हरताल के टुकड़े, चम्पा के फूल, सन के फूल, कोरंट पुष्प, सरसों के फूल व कमलरज के समान पीत वर्ण वाले, मयूर, नीलम मणि, नीली गुलिका, तोते के पंख, नीलकमलों के समूह, ताजा शिरीष कुसुम के सदृश नील-इसी प्रकार अनेक उपमाओं से मेघ को सुशोभित किया गया है (ज्ञाताधर्मकथा, आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर, पृष्ठ संख्या २७)। पृथ्वी तल को भिगोने वाली वर्षा निरन्तर बरस रही थी, जलधारा के समूह से भूतल शीतल हो गया, पृथ्वी रूपी रमणी ने घास रूपी कञ्चुक धारण किया। इसी प्रकार अनेक उपमा, रूपक एवं उत्प्रेक्षाओं से ये कथाएँ अलंकृत की गई हैं।

- अनेक स्थानों पर पुनरुक्ति दोष से बचने के लिए कथानकों में शेष वर्णन पूर्ववत् जानने का कहकर प्रसङ्ग को समाप्त कर दिया गया है। द्वितीय श्रुतस्कन्ध के दसवर्गों में इसी प्रकार अति संक्षेप में कथन किया गया है - इसी प्रकार सागरदत्त की कथा के अनुसार ही द्रमुक की शेष कथा समझी जावे- 'सेसं जहा सागरस्स जाव सयणिज्जावो अब्भुट्ठेइ।'(१६/६५)

इसके अतिरिक्त इन दृष्टान्तों में भगवान महावीरयुगीन समाज एवं संस्कृति पर विशिष्ट प्रकाश पड़ता है। तत्कालीन भवन निर्माण कला, विवाह प्रथा, आमोद-प्रमोद के साधन, रोग एवं चिकित्सा, वस्त्र, शिक्षा,

राजनीतिक-व्यवस्था आदि अनेक सांस्कृतिक तत्त्व इसमें प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। इसके अतिरिक्त पशु-पक्षियों के प्रशिक्षण, ज्योतिष-शास्त्र, स्वप्न-शास्त्र विषयक अनेक वर्णन इन दृष्टान्तों में प्राप्त होते हैं।

ऐतिहासिक दृष्टि से अध्ययन करने वाले शोधार्थी के लिए ये कथाएँ अत्यन्त उपयोगी हैं। वाराणसी, द्वारिका एवं राजगृह के चिकित्सालय, बावड़ियों, तत्कालीन रोगों एवं उनकी चिकित्सा आदि अनेक इतिहास-परक विषय अध्ययन के योग्य हैं। आर्थिक व्यवस्था, समुद्र मार्ग से व्यापार, बाजारों के सुन्दर वर्णन भी इन दृष्टान्तों में प्राप्त होते हैं।

इस प्रकार ज्ञातृधर्मकथा का केवल आध्यात्मिक महत्त्व ही नहीं है अपितु ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से भी यह ग्रन्थ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

-सह आचार्य, संस्कृत विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर (राज.)

पीयूष वाक्

निन्दा : जीव की या अजीव की?

किसी साधक ने कहा- वह आपकी निन्दा करता है। बोले-जीव की या अजीव की? अजीव की- नाम की, शरीर की निन्दा करता है तो वह तो मैं भी करता हूँ। यह शरीर अनित्य है, नाम रहने वाला नहीं है और जीव की करता है तो उसकी और मेरी आत्मा समान है तो वह स्वयं की भी निन्दा करता है।

भव्य कौन, अभव्य कौन?

पूर्ण सुखी, पूर्ण निर्दोष, शांति में लीन, सर्वसुखी के सुख पर जो विश्वास नहीं करता वह अभव्य है।

जिसे निर्दोषता पर विश्वास, परमेष्ठी पर विश्वास हो वह भव्य है।

१५ अगस्त को क्या हुआ?

देश दृश्य पराधीनता को छोड़ अदृश्य पराधीनता में प्रविष्ट हुआ।

- संकलन : त्रिलोकचन्द जैन, जयपुर

(तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. के प्रवचनों से संकलित)

Scientific Analysis

GLOBAL FOOD CRISIS

Dr. Jeoraj Jain

(A)"Bushism : Middle Class Indians are responsible for the global food crisis"

It is a provocative statement, but never the less provides a strong **"driving-force"** to the world community of scientists and economists to join hands to find and expose the real **"culprits"** or causes for the **food crisis** to enable the humanity to devise proper strategies to prevent it.

Shortage of food grains may occur due to following reasons:

1. **Wastage** of available food-grains before reaching consumption point.
2. Spreading of **inefficient** practices of food utilization,
3. Increase in per capita **consumption** of food grains,
4. **Growth** of **production** of food grains falling **short** of **population growth.**

All the above reasons can be easily **analyzed** with proper **statistics** For example, heavy Government **subsidies** for bio-fuels in certain areas have motivated the farmers to **substitute** the food grain crops by **bio-fuel crops**. This has completely **skewed** the food-grain production in the world. This data is also available.

However, the **efficiency** aspect of food **conversion**, as mentioned at point **no.2** above, has been **neglected** by the world community for unknown reasons. We will, as such, **dwell at length** on this point i.e. spreading of inefficient practices of food utilization.

(B) Facts:

1. The average consumption of food grains in India is about 150kg/year/person.
2. The average consumption/capita in America (USA) is more than 1100kg of food grains/year. It means one American consumes so much food grains as seven Indians do. How

can such a vast difference exist? It warrants a detailed analysis of food habits and methodology of consumption.

(i) A **simple observation** of an **American** family reveals that an average American doesn't eat more food grains than an average Indian does!

(ii) Food consumption by poorer Indians i.e. Indians below poverty-line (BPL) is although less, but still for 90% of them, it amounts to about 120kg/year. For about a million underfed people, it is less than 100kg/year. The so called group of hungry people is very small now.

(iii) For a healthy diet, it is estimated that 140 kg of food grains per capita is sufficient, if they are balanced properly.

Then a big **question** arises, as to how we consume 150kg only, when an American is able to gulp almost 1100kg? The **answer** lies in the level of dependence of human population on **secondary capital food** for eating habits. Let us understand it in detail.

(i) A portion of human population depends on the **direct consumption** of food grains (cereal diet)

(ii) A portion of human population depends on meat diet, which can be termed as secondary capital food. Here the animals are used for **conversion** of food grains into meat.

(iii) Remaining part of population has **mixed** food habits i.e. partly on direct food-grains and partly on indirect grain consumption i.e. on meat.

(iv) There are food **supplements,** which can be termed as **revenue food,** like milk etc. These recurring indirect foods are derived on regular basis for a longer period from the animals by feeding them with food grains. This is in contrast to the slaughtering of animals, which is equivalent to one time capital expenditure.

(C) Analysis

(i) One can estimate directly the food grains consumed/ head/

year for the first group of people.

(ii) For the second group, one has to estimate the food grains fed to the animals for converting them into meat. Several studies had been made on it in America and UK in the past. These confidential reports are also available now. The data of these reports are available in various forms. For example.

(a) On one Acre of land

If SOYABEAN is grown, it will yield 510kg of usable protein or
If RICE is grown, it will yield 430kg of usable protein or
If CORN is grown, it will yield 460kg of usable protein or
If WHEAT is grown, it will yield 475kg of usable protein but,
If any of these farm products is fed to animals (like **Steer**),
It will yield only 50kg of usable protein.

It means to produce 1 kg of usable **protein via animals,** it requires **10 times more land** than getting it through vegetables/farm products.

(i) A place of land which will produce **1 ton** of **meat**, can produce **10-12 tons of nutritious food**, fit for direct human consumption and that too at a much **cheaper** rate.

(ii) **Where** does the **myth** stand in the light of above evidence that an American consumes food-grains 8 times more than an Indian does? It gets **clarified** below in point (D) "Counter Proof"!

The above facts clearly point out that if **INTERMEDIARY agency** i.e. animals are used as a source of food; only **1/8th** of primary food (farm products) is utilized and **7/8th** portion goes **waste!** in other words, animals waste around 88% of vegetable proteins or farm products.

Another **American report** from its Agricultural Department highlights that a person **requires 14 times** more agricultural land to produce animal feed for his meat requirement than the land required for a person **eating direct food grains!**. Is it not the most **disturbing** conclusion that **meat** eating is directly related or responsible for **world-**

hunger? Raising animals for food is a colossal waste of the world's resources. And America is the most ferocious meat eating nation.

(b) Water consumption :

Similarly, it is found that **Livestock** for food, consume **8 times** more water than growing vegetables/ **farm products.** As such, it is amply **proved** that getting human food **through** the flesh of **animals**. Is the most **Inefficient** method, known to men.

The **conclusion** of this report that raising of food animals is very costly, wasteful, and inefficient method of obtaining human food, must be **spread** fast to save the humanity from the **food-crisis**. But whether the **vested interests** would allow us to **spread** this alarming report, is a big question!

(c) Other Facts:

1. A similar **report** by the **'President's** Science Advisory committee, Vol. II, May 1967" titled as **"The World food problem"**, highlights a fact that cattle must be fed **10kg** of vegetable protein (farm grain etc), in order to produce 1kg of animal protein!
2. This **data is overwhelming** and in disputable. The only problem is that most of the information has been **gathering dust** on the shelf. It is not distributed widely. The mass **awakening Is lacking**. No worthwhile effort could be made because the **PROFITS** of **Meat** producers, medical establishments and chemical industries will **plummet**, If people adopt humane, **sustainable, plant based DIET.**
3. In another report, it is highlighted that in U.S.A., **78% all grains**, that are grown there, are fed to raise **food animals**.
4. **14-15kg** of **grains** as feedstock will produce **1 kg of Beef,**
5. **8 kg** of grains as feedstock will produce **1kg of pork,**

   This is also corroborated by the report to the American President, stating that 10 kg of usable vegetable, protein is converted into 1 kg of usable animal protein. An **average**

conversion ratio may be taken as **12.**

6. In India

   In 92-93, meat was **exported** to the worth of Rs. 2565 crores.

   In 93-94, meat was **exported** to the worth of Rs. 3000 crores.

   Such blind and rash actions have resulted in death and depletion of **cattle population** to alarming levels in India. For example,

   There were 450 cattle/1000 persons in India in 1951.

   It declined to 100 cattle/1000 persons in 2001. It may dwindle to 20 cattle/1000 persons in 2015, if nothing concrete is done to reverse this trend of **lust and greed** to earn money.

Indian Government is also tempted to **blindly** follow the wasteful **American model** to **convert** food-grains into meat through animals by permitting opening of several new **slaughter houses.** One must ponder deeply over the above noted **startling facts.** We cannot afford to be so wasteful in food grains. If we resort to slaughter house culture or meat eating, we will be **depriving** our poor brethren from its share of food. This should be treated as an unpardonable **crime**. Government's first **priority** is to eradicate **hunger** and not to permit wasteful **practices**, like slaughter houses.

The slaughter house **culture** results in **price-increase** of dairy products as well as it makes the **cereals unaffordable** to the poor man. Slaughtering is not only crushing the common man's economy but is also **endangering** its very existence!

7. Calorie contents:-

Let us examine the food-grains from the view-point of Calorie. It is reported that

(i) 16 calories of energy is required to produce 1 cal. in form of edible grain.

(ii) 70 calories of energy (in form of grain) is required to produce 1 cal. of meat.

(iii) 100g. cereals give 432 cal. & 12-43g protein.

(iv) 100g. meat gives 350cal & 12-35g protein.

That means, far more energy is required to produce equivalent meat calories. # Considering an optimum **conversion efficiency** of 20% during the Growth period for the stomach (20% metabolism efficiency) of food-animals, the overall availability of converted material for human body remains only 4% instead of 20%! (a **colossal waste** by any standard)

(i) In India, man and animals are complementary to each other. In one household, if one animal is fed and kept as pet, the animal in turn maintains the family by milk, dung and service.

(ii) Land required to feed 1 animal for slaughtering, on an average 5 families can sustain on that land by Vegetation.

(iii) A Cow yields 3500kg of dung per year, which translates into a compost worth Rs. 18000/=. It cotains 800 kg of Nitrogen, 560kg of Phosphorus and 1040 kg of Potassium.

(D) Counter Proof

By doing backward calculations, we can rediscover and reestablish the relationship between consumption of an American and an Indian.

A healthy person requires **140-150kg** of **solid direct food-grains** per year. An Indian may be needing 140 kg, whereas an American may be indulging in "excess" i.e., 150kg. A survey report suggests that an American eats 88kg of beef and chicken; whereas an Indian consumes 3.4 kg of it. This leaves the direct grain consumption of 150-88=**62**, and 140-3.4=**136.6 kg** respectively for both.

Hence the total **equivalent food-grain** consumption would be (with conversion ratio of 12)*

62+(88x12)=1118 kg for an American and 136.6+(3.4x12)=177 kg for an Indian.

These figures **compare** very **well** with those given above in **point(B).**

(E) Conclusion:-

(i) It is now clear that increase in **meat** production in India is directly **contributing** to **shortage** of food grains for human consumption. The global food shortage is the direct **consequence** of rampant **conversion** of food-grains into **meat** through **animals**. The **solution** lies in stopping conversions.

(ii) For it, the **American** companies have to **stop** their misplaced **propaganda** for meat eating and abandon the production of secondary converted foods, with as seriousness as the **dismantling** of facilities for production of nuclear weapons or weapons of **mass destruction.**

(iii) At least, Indian Government must put a **ban,** with immediate effect, on **new slaughter** houses, as a first concrete step in this direction.

-40,Kamani Center, 2nd Floor, Bistupur, Jamshedpur-831001
Tel.: 0657-2227572

करले आत्म का उत्थान

श्री अनराज बोथरा

करले आत्म का उत्थान, मिला ये मनुष्य जन्म पुण्यवान ।।
भव-भव भटकत नरतन पाया, देव दुर्लभ अवसर आया।
मत हो विषयों में बेभान, करले आत्म का उत्थान ।।
आर्य क्षेत्र उत्तम कुल पाया, पाँचों इन्द्रियाँ निरोगी काया।
मिलना नहीं आसान, करले आत्म का उत्थान ।।
सद्गुरु का सहयोग पाया, जिनवाणी का पान कराया।
करलो व्रत और पच्चक्खान, करले आत्म का उत्थान ।।
तन-धन यौवन स्थिर नहीं भाया, छोड़ प्रमाद भजो जिनराया।
तज दे आर्त्त-रौद्र ध्यान, करले जीवन का उत्थान ।।
आयु पल-पल बीती जावे, गया समय हाथ नहीं आवे।
करलो आगे का सामान, करले आत्म का उत्थान ।।
'अनराज' ये नरतन पाया, गुरुदेव ने हमें बताया।
मत बनो दुर्गति के मेहमान, करले आत्म का उत्थान ।।

-दीवानों की हवेली, घास मण्डी, जोधपुर

युवा-स्तम्भ

तनाव का कारण : राग-द्वेष

मोनिका बैराठी

वर्तमान युग में तनाव ने विकटतम समस्या का रूप धारण कर लिया है। आज एक छोटे बालक से लेकर अस्सी वर्ष के वृद्ध व्यक्ति को भी इस समस्या से जूझना पड़ रहा है। यह तनाव ईश्वर या प्रकृति की देन नहीं है। इसका सर्जक व्यक्ति स्वयं है। वह स्वयं तनाव के कारणों को जन्म देता है, उनका पोषण करता है। तनाव का मुख्य कारण भोग-वासना और कुछ उपलब्ध करने की अभीप्सा है। यह अभीप्सा धन,पद,यश-कीर्ति आदि किसी की भी हो सकती है। व्यक्ति इन्हें प्राप्त करने के लिए विभिन्न मार्गों और विभिन्न रूपों का सहारा लेता है। ये अभीप्साएँ मनुष्य के अन्तःकरण को आन्दोलित करती हैं। वे इच्छित वस्तु की प्राप्ति रूप फल में साकार न होने पर तनाव का रूप धारण कर लेती हैं। तनाव का उपर्युक्त स्वरूप सामान्य रूप है।

चूंकि जैनधर्म कर्मप्रधान है। यह प्रत्येक विषय का आकलन कर्म सत्ता को ध्यान में रखकर करता है। जैनदृष्टि से तनाव का मूल कारण कषाय है। यह कषाय शब्द 'कष' और 'आय' इन दो शब्दों के योग से बना है और यह जैन धर्म का पारिभाषिक शब्द है। 'कष' अर्थात् संसार, आय अर्थात् लाभ। संसार की प्राप्ति कराने वाली चित्तवृत्ति कषाय है।[१] मूलतः कषाय चार हैं- क्रोध, मान, माया और लोभ। इन चार कषायों की आधारशिला मुख्यतः राग-द्वेष पर टिकी हुई है। उत्तराध्ययनसूत्र में राग और द्वेष को कर्म का बीज कहा गया है।[२] स्थानांगसूत्र में भी राग और द्वेष ये पाप कर्म की उत्पति के दो स्थान कहे गए हैं।[३] राग से जहाँ एक ओर लोभ का, लोभ से कपट अर्थात् माया का जन्म होता है वहीं दूसरी ओर द्वेष से क्रोध का और क्रोध से अहंकार का जन्म होता है। इस प्रकार कषायों की उत्पति के मूल में

---

१. शीलांकाचार्य, आचारांगसूत्र की वृत्ति

२. उत्तराध्ययनसूत्र-मधुकर मुनि,३२,७/पृ. ५४०

३. स्थानांगसूत्र, स्थान २

राग-द्वेष की वृत्ति काम करती है। सारभूत रूप में कहा जाय तो राग और द्वेष के मूल में भी राग ही प्रमुख तत्त्व है, शेष अन्य कषाय राग के ईदगिर्द परिक्रमा लगाते हैं।[४]

तनाव का कारण भी राग ही है। वस्तुतः तनाव की स्थिति उस समय उत्पन्न होती है जब व्यक्ति में किसी वस्तु विशेष के प्रति ममत्व की भावना जाग्रत होती है। और जब यह ममत्ववृत्ति अर्थात् वस्तु को पाने की लालसा अपना साकार रूप धारण करती है तो व्यक्ति की मनोवृत्तियों में उद्वेग उत्पन्न हो जाता है। ये उद्वेग एक सीमा के पश्चात् शारीरिक प्रवृत्तियों के रूप में प्रकट होने लगते हैं। राग व्यक्ति अथवा वस्तु किसी के भी प्रति हो सकता है। रागी व्यक्ति जहाँ एक ओर किसी व्यक्ति विशेष के प्रति राग रखता है, वहीं दूसरी ओर अन्य व्यक्तियों के प्रति उसमें द्वेष का भाव भी उत्पन्न हो जाता है। एक के अभाव में दूसरे का अभाव, एक के अस्तित्व में दूसरे का अस्तित्व स्वतः ही सिद्ध है।

व्यक्ति में निहित वासना के तत्त्व अपनी विधेयात्मक अवस्था में राग और निषेधात्मक अवस्था में द्वेष बन जाते हैं और ये राग-द्वेष के तत्त्व ही अपनी अभिव्यक्ति हेतु तनाव का रूप धारण कर लेते हैं।[५] तनाव से मुक्त होने का एक मात्र उपाय समत्व बुद्धि है। यदि हममें प्राणिमात्र के प्रति समत्व के भाव होंगे तो राग-द्वेष जैसी प्रवृत्तियों को बल नहीं मिलेगा और राग-द्वेष के अभाव में तनाव की स्थिति उत्पन्न नहीं होगी।

तनाव के प्रकार- व्यक्ति परिवार, समाज अथवा राष्ट्र जैसे सीमित दायरों से घिरा हुआ है। उसकी प्रत्येक क्रिया इन्हीं कार्यक्षेत्रों से जुड़ी हुई है और ये ही कार्यक्षेत्र उसे तनावग्रस्त जीवन प्रदान करते हैं। तनाव तीन प्रकार का होता है-

(१) **व्यक्तिगत तनाव**- व्यक्तिगत तनाव का कारण आपसी प्रतिस्पर्धा है। आज व्यक्ति अपने दुःख से जितना दुःखी नहीं है उतना दूसरों के सुख से दुःखी है। वह सबसे अधिक अमीर बनना चाहता है। वह चाहता है कि दूसरों के पास जो ऐशो-आराम नहीं है, वह मेरे पास हो। इस तनाव का ग्रास बड़े-बड़े उद्योगपति, व्यापारी और प्रशासक से लेकर निम्नस्तरीय कर्मचारी एवं अध्यापक भी बन रहे हैं। अधिक पाने की चाह में उन्हें उचित-अनुचित,

४. डॉ. सागरमल जैन, कषाय एक तुलनात्मक अध्ययन, भूमिका, पृ. ७

५. वही, पृ.८

सही-गलत का भान नहीं रहता है। मदहोशी में की गई उनकी ये क्रियाएँ उन्हें तनाव ग्रस्त करती हैं।

(२) **पारिवारिक तनाव–** वर्तमान में बढ़ रही लोभ-प्रवृत्ति के कारण परिवार में भी तनाव की स्थिति उत्पन्न हो रही है। पिता-पुत्र में, भाई-भाई में, सास-बहू में लोभ एवं परस्पर अविश्वास उत्पन्न होने से तनाव बढ़ रहा है। यदि परिवार में सन्तोष की प्रवृत्ति का प्रादुर्भाव हो तो तनाव की स्थिति को उत्पन्न होने से रोका जा सकता है।

(३) **विश्वव्यापी तनाव –** वैयक्तिक और सामाजिक तनाव के साथ-साथ तीसरे प्रकार का तनाव विश्वव्यापी है। विश्व की रचना व्यक्ति और समाज के योग से होती है। अतः विश्वव्यापी तनाव में व्यक्तिगत एवं पारिवारिक तनावों का संमिश्रण देखने को मिलता है। व्यक्तिगत एवं पारिवारिक तनाव में लोभ और अविश्वास जहाँ अपना प्राथमिक रूप धारण किए हुए होते हैं,वहीं विश्वव्यापी तनाव व्यापक रूप में दिखाई देता है। इसमें छोटे राष्ट्रों को बड़े राष्ट्रों के समान बनाने की होड़ मची हुई रहती है। अपने को अधिक शक्तिशाली बनाने की भावना बलवती दिखाई देती है। ये भावनाएँ एक राष्ट्र को दूसरे राष्ट्र के प्रति संदिग्ध बना रही हैं, जिसके कारण विश्व में तनाव बढ़ रहा है।

तनाव के कारण– किसी एक बिन्दु पर निरन्तर एवं व्यर्थ में किया जाने वाला चिन्तन जब चिन्ता का रूप धारण कर ले, मस्तिष्क में स्थान बना ले तो इसका ही नाम तनाव है।[६] तनाव के निम्नलिखित कारण हो सकते हैं –

१. **चिंता –** तनाव का प्रमुख कारण चिंता है। चिंता और चिता में एक बिन्दु मात्र का अन्तर है, किन्तु यह बिन्दु सिन्धु जितनी क्षमता रखता है। ज्ञानीजनों ने भी चिंता को चिता से अधिक भयावह बताया है। चिता में तो व्यक्ति एक बार जलता है, लेकिन चिंता में उसे प्रतिपल जलना पड़ता है। उसकी स्थिति जाले में फँसी मकड़ी के समान होती है। जिस प्रकार मकड़ी जाला बुनती जाती है और स्वयं उसमें फंसती जाती है उसी प्रकार मनुष्य चिंता के कारणों को स्वयं उत्पन्न करता है और स्वयं ही उनसे जूझता रहता है।

---

६. ललितप्रभसागर, चिंता, क्रोध और तनाव मुक्ति के सरल उपाय, पृ. १३

२. **उत्तेजना–** तनाव का दूसरा कारण उत्तेजना है। उत्तेजना को दूसरे शब्दों में क्रोध भी कह सकते हैं। यह क्रोध जैन परिभाषा के कषायचतुष्क में अपना प्रथम स्थान रखता है। क्रोधी व्यक्ति सदैव तनाव से ग्रस्त रहता है, क्योंकि अपनी क्रोधी प्रकृति के कारण उसे सामान्य से कथन में भी क्रोध आ जाता है। यह क्रोध मनुष्य की मनः स्थिति को कुण्ठित करता है और यह कुण्ठा तनाव रूपी वृक्ष का सिंचन करती है।

३. **वैचारिक असामंजस्य–** तनाव का एक आधारभूत कारण विचारों का असामंजस्य भी है। जब हम अपने आपको श्रेष्ठ मानते हैं और दूसरों की भावनाओं को सम्मान नहीं देते हैं, तो पारस्परिक विवाद उत्पन्न हो जाता है। ये पारस्परिक विवाद जब उग्र रूप धारण कर लेते हैं तब तनाव की स्थिति उत्पन्न होती है।

४. **अतीत की स्मृति एवं भविष्य की कल्पना –** तनाव का एक कारण अतीत की स्मृति और भविष्य की कल्पना है। उसने मेरे साथ ऐसा किया था, अब मैं भी उसके साथ वैसा ही करूँगा। अगर इस समय वैसा नहीं किया होता तो ऐसा नहीं होता। यदि उस समय ऐसा कर देता तो ठीक रहता। इस प्रकार का अतीत एवं भविष्य का चिन्तन करते हुए व्यक्ति तनावग्रस्त हो जाता है।

५. **भय –** तनाव का पाँचवाँ कारण भय है। भययुक्त साधक स्वयं में हाथी और शेर जैसी शक्ति रखते हुए भी गीदड़ से भी परास्त हो जाता है। भय से ग्रस्त व्यक्ति निमित्तों का मुकाबला करने में समर्थ नहीं होता है। फलस्वरूप निमित्त उस पर हावी हो जाते हैं, और कुछ समय उपरान्त ये तनाव का रूप धारण कर लेते हैं। यह भय सूखी घास के ढेर में लगी चिंगारी के समान है जो प्रारम्भ में थोड़ी दिखाई देती है, लेकिन धीरे-धीरे घास को राख में बदल देती है। उसी प्रकार शुरूआत में भय चिंगारी के समान लगता है, लेकिन अन्त में अग्नि का रूप धारण कर मनुष्य को जला देता है।

तनाव-मुक्ति के उपाय – तनावों के प्रकारों और उनसे होने वाली हानियों को दूर करके व्यक्ति तनाव से मुक्त हो सकता है। जब व्यक्ति स्वयं ही तनाव से रहित हो जायेगा तो परिवार, समाज एवं विश्व भी अपने आप तनावमुक्त हो जायेगा।

---

७. आचार्य तुलसी, नन्दन निकुंज, पृ. २५४

१. **अध्यात्म** – भौतिक विकास के फलस्वरूप उत्पन्न तनावों से मुक्त होने का आधारभूत साधन अध्यात्म है। अध्यात्म जीवन विकास की वह पगडंडी है जिस पर चलकर व्यक्ति आत्मस्वरूप को पहचान सकता है। वह यह जान सकता है कि आत्मा क्या है, उसका स्वरूप क्या है। यह आत्मा तो नित्य, निरंजन, परम पद को प्राप्त करने वाली है,लेकिन व्यक्ति भौतिक सुख-सुविधाओं के पीछे इतना मदमस्त बन गया है कि अजर-अमर सुख विस्मृत हो गए हैं। अध्यात्म हमें स्व के समीप लाकर हममें पर से दूरी पैदा करता है। जब साधक की स्व में रमणता स्थापित हो जाती है तो उसे भौतिक साधन जो तनाव के कारण हैं उनसे विरक्ति होने लगती है। अतः अध्यात्ममार्ग का अनुसरण कर हम तनाव से मुक्त हो सकते हैं।

२. **समता**– आत्मस्वरूप को जान लेने के बाद व्यक्ति में समता का विकास स्वतः हो जाता है। समतामय जीवन जीने पर तनाव दूर हो जाते हैं; क्योंकि संयमित व्यक्ति में राग-द्वेष की भावना नहीं रहती है। इस प्रकार राग-द्वेष कम हो जाने से तनाव स्वतः नष्ट हो जाता है।

३. **ध्यान और योग** – तनाव का प्रमुख कारण मन है। मन की अनुकूलता एवं प्रतिकूलता ही तनाव का कारण बनती है। ध्यान एवं योग के द्वारा विक्षिप्त मन को शान्त किया जा सकता है। ध्यान चञ्चल मन को एकाग्र करने की रामबाण औषधि है। जब मन एकाग्र हो जाता है तो तनाव का प्रश्न ही नहीं रहता है।

४. **कायोत्सर्ग** – कायोत्सर्ग में शरीर की शिथिलता एवं ममत्व के विसर्जन का अभ्यास किया जाता है, जिससे शरीर सर्वथा हल्का व तनाव रहित हो जाता है। कायोत्सर्ग तनावमुक्ति का अमोघ प्रयोग है। जो इसका प्रयोग करता है, वह तनाव मुक्त हो जाता है।

५. **स्वाध्याय** – स्वाध्याय शब्द 'स्व' एवं 'अध्याय' इन दो शब्दों के योग से बना है। जिसका शाब्दिक अर्थ है स्वयं का अवलोकन करना। जब व्यक्ति स्व का अवलोकन करेगा, तो उसे यह ज्ञात होगा कि कौनसी क्रिया उचित है और कौनसी अनुचित। उचित-अनुचित का भेदज्ञान होने पर अनुचित क्रिया पर अंकुश लगेगा तथा आरम्भ-समारम्भ सम्बन्धी क्रिया पर नियन्त्रण होगा, जिससे तनाव से मुक्ति मिल सकेगी।

६. **सादा जीवन उच्च विचार** – तनाव का एक कारण व्यक्ति में उच्च स्तरीय

जीवन जीने की चाह है। इस चाह की पूर्ति में वह दिन-रात जुटा रहता है, लेकिन पूर्ति न कर पाने पर वह मानसिक तनाव से ग्रसित हो जाता है। यदि व्यक्ति में सादा जीवन जीने के भाव जाग्रत हो जाएं तो तनाव से मुक्ति मिल सकती है, क्योंकि साधनों का अधिकाधिक संग्रह ही तनाव का कारण है।

७. **इन्द्रिय-संयम** – तनावों की वृद्धि को रोकने के लिए इन्द्रियों पर नियन्त्रण परम आवश्यक है, क्योंकि ये इन्द्रियाँ ही राग-द्वेष जैसे तत्त्वों का पोषण करती हैं। यदि तनाव से मुक्त होना है तो व्यक्ति को इन पाँच इन्द्रियों और छठे मन पर विजय प्राप्त करनी ही होगी। भगवान् महावीर ने भी कहा है-

एगे जिए जिया पंच, पंच जिए जिया दस।
दसहा उ जिणिताणं, सव्व सत्तू जिणामहं।।

८. **संकल्प की दृढ़ता** – संकल्प में अनन्त शक्ति होती है। दृढ़ संकल्प मनुष्य को नर से नारायण, शिव से शंकर, बिन्दु से सिन्धु जैसी ऊँचाइयों पर पहुँचा सकता हैं। मुनि मोहनलाल शार्दूल ने कहा है "मनुष्य के संकल्प में अपरिचित शक्ति होती है। जब वह संकल्प बल को संजोकर किसी अनुष्ठान के लिए प्रस्तुत होता है तो कुछ भी असंभव नहीं रह जाता है। मनुष्य जब सुदृढ़ निर्णय करके बंधन तोड़ना चाहे तो वह प्रत्येक बंधन तोड़ सकता है।" अतः दृढ़ संकल्पी हो तो तनावों से अवश्य ही मुक्त हो सकता है।

९. **चिन्तन रहितता** – अधिक सोचना या चिन्तन करना भी मानसिक तनाव का कारण है। तनाव से मुक्त होने के लिए वर्तमान में जीवन जीना चाहिए। अतीत के चिन्तन व भविष्य की कल्पना को छोड़ देना चाहिए। तभी मन को विश्राम मिलेगा व तनाव दूर होगा।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि इन तनावों का मुख्य कारण क्रोध, मान, माया और लोभ रूपी कषाय हैं, जिनके मूल में राग और द्वेष रहे हुए हैं। ये राग-द्वेष इच्छित फल की प्राप्ति के रूप में जब फलीभूत नहीं होते हैं तो तनाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। इनसे मुक्त होने का एकमात्र उपाय लोभ प्रवृत्ति पर अंकुश लगाना है, क्योंकि मनुष्य की सारी भाग-दौड़, वस्तु या व्यक्ति विशेष के प्रति आसक्ति के कारण होती है। यदि उसका आसक्ति भाव टूट जाये, मनुष्य स्व में केन्द्रित हो जाये तो मुक्ति अवश्यम्भावी है।

-१४८, हल्दियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर (राज.)

Tattva bodha

GURUVANDANA SŪTRA

Dr. Priyadarshana Jain

TEXT	TRANSLATION
Tikkhutto	- Three times
Āyāhiṇaṁ	- *ādakṣiṇā (from left to right)*
Payāhiṇaṁ	- ***Pradakṣiṇā*** (circumambulation)
Karemi	- I do
Vandāmi	- ***Vandanā*** i.e. I eulogize/praise you
Namansāmi	- ***Namaskāra*** i.e. I bow down
Sakkāremi	- ***Satkāra*** i.e. I honour you
Sammāṇemi	- ***Sammāna*** i.e. I respect you
Kallāṇaṁ	- Thou are the bestower of welfare
Maṅgalaṁ	- Thou are auspicious
Devayaṁ	- Thou are Godlike
Ceiyaṁ	- Thou are full of knowledge
Pajjuvāsāmi	- I serve you earnestly
Mathayeṇa	- By thought, word and deed
Vandāmi	- I bow down to you.

Meaning

O holy master! Folding my hands and keeping it on the forehead beginning from the left moving my hand towards the right, I eulogize and bow down to you thrice (with all the five angas- 2 knees, 2 hands and forehead) thereupon I honour and respect you as you are the bestower of welfare and peace. You are godlike and full of divine knowledge. I whole heartedly serve you and humbly bow down to you.

Explanation

Guru occupies an important place in Indian culture and all Indian traditions have stressed the need for an ideal ***guru*** in one's life. Only a ***satguru*** i.e., a "Right ***guru***" who is sincere,

truthful, devoted to the right path, impartial, straight forward, unprejudiced, humble, full of the spirit of renunciation, spiritually absorbed, wise, self-realized, detached, noble, divine, unbiased, who has mastered the scriptures and who is virtuous alone can guide the common man who is entangled in the web of transmigration. Such a ***guru*** alone can enable one to realize oneself and inspire one to tread on the path of emancipation. In all Indian traditions a ***guru*** is more important than God for it is the ***guru*** who educates us about truth and liberation. It is the ***guru*** who informs us about our true selves and removes our delusion. It is by his grace that we become worthy of liberation. Spiritual development begins under the guidance of an able ***guru***, which eventually culminates in self-realization and emancipation. An ideal ***guru*** is like a boat, who ferries us across the ocean of worldly-sojourn. A ***guru*** is like a kindly light amid the encircling gloom. Just as the body cannot be sustained without food and a battery without charge would be worthless so also a life without a ***guru*** would be meaningless. It is the ***guru*** who makes life meaningful by adding spiritual lustre through his divine spiritual knowledge and sermons. Only a ***guru*** can tell us what is good for us and what is not, ***guru*** is important because it is he who informs us about the true Gods. Without him, none can tell us about the nature of true Gods who are pure, perfect, unconditioned, beyond birth and death, enjoying infinite knowledge, bliss, and power.

Guru is the bestower of happiness and peace. Emancipation/***Nirvaṇa/Mokṣa*** cannot be realized without the guidance of a ***guru***. Only a ***guru*** can enable us to break the fetters of bondage viz. attachment and hatred. He inspires us to give up a life of sin and lead a virtuous life. The ***guru*** informs that a life of sin begets inauspicious ***karma*** as a result of which the soul suffers in the wheel of transmigration and a life of virtue begets auspicious ***karma*** and the soul enjoys a pleasant stay in the

world. He also informs that one has to realize his pure-self and nullify all ***karmas*** to attain emancipation like the true Gods. He too strives for the same and preaches the same to his disciples. and followers.

A true ***guru*** is full of divine knowledge and divine virtues, in other words he is God incarnate on this earth. People draw inspiration from a ***guru*** whose life speaks more than his words do. It is the simple life of a ***guru*** inspired by noble ideals that makes him trustworthy and worthy of veneration. He is the true well- wisher of all mundane souls, as he believes in selflessly uplifting them from pain and misery, birth and death, old age and disease, ignorance and delusion. Hence at the very outset salutations are offered to the great spiritual **gurus.**

-Lecturer : Dept of Jainology, University of Madras,Chennai

प्रेरक प्रसंग

सत्य एवं सुन्दर का समन्वय

एक राजा के एक आँख नहीं थी। उसने अपना चित्र बनवाने के लिए चित्रकारों को आमंत्रित किया, साथ ही उसने यह घोषणा भी कि जो चित्रकार सबसे सुन्दर चित्र बनाएगा, उसे एक लाख रुपये का इनाम दिया जायेगा।

प्रतियोगिता के लिए तीन सुन्दर चित्र चुने गये। प्रथम चित्र में राजा की दोनों आँखे बताई गई थी। राजा ने कहा- "चित्र बहुत आकर्षक है, किन्तु सत्य नहीं है।" दूसरा चित्र राजा का वास्तविक चित्र था, जिसमें वह एक आँख से काना बताया गया था। राजा ने कहा- "इसमें सत्य है, किन्तु सुन्दरता नहीं है।"

राजा ने तीसरे चित्रकार का चित्र देखा। उसमें चित्रकार ने राजा को तीर चलाते हुए दिखाया, जिसमें एक आँख स्वतः बंद दिख रही थी। राजा ने चित्र को देखकर कहा- "यह चित्र सत्य भी है और सुन्दर भी है।" राजा ने उस चित्रकार को एक लाख रुपए की राशि देकर पुरस्कृत किया।

इस प्रसंग से यह ज्ञात होता है कि जीवन में सत्य और सुन्दर का समन्वय ही समस्याओं के समाधान का मार्ग है।

-संकलनकर्ता : प्रबोध कुमार जैन, जैन वुड मार्केटिंग, एफ २, अंजुमन कॉम्पलेक्स, सदर नागपुर (महा.)

चिन्तन

कैसा हो स्वाध्यायी?

डॉ. चंचलमल चोरडिया

स्वाध्याय क्या है?

स्वाध्याय का अर्थ है स्वयं का अध्ययन करना, स्वयं का चिन्तन करना, स्वयं के बारे में सोचना। आजकल प्रायः अधिकांश व्यक्ति स्वयं की ही चिन्ता करते हैं, अपने स्वार्थ में ही रचे पचे रहते हैं, अपने लाभ का ही खयाल रखते हैं तो क्या वे स्वाध्यायी हैं? वास्तव में जो अपना नहीं है परन्तु, आज अपना प्रतीत हो रहा है तथा कालान्तर में अपने से अलग होने वाला है वह अपना नहीं हो सकता। उसको अपना मानना हमारे अज्ञान का सूचक है। अतः जो अपना नहीं है वह पराया है। हमारी आत्मा के अलावा हमारे लिए सब पराया होता है।

स्वाध्याय स्वयं द्वारा स्वयं की शोध है। स्वयं के गुणों एवं दोषों की तुलनात्मक समीक्षा ही सच्चा स्वाध्याय होता है। मात्र पढ़ना ही नहीं, अपितु विधि, विवेक एवं एकाग्रता के साथ सम्यक् चिन्तन पूर्वक पढ़ना स्वाध्याय है।। जिस अध्ययन से अशान्ति, कषाय, कामनाएँ, तनाव, राग-द्वेष आदि बढ़ें अर्थात् जिससे आत्मा का अहित हो वह स्वाध्याय नहीं होता। जानने योग्य को जानना और समझना ही वास्तव में स्वाध्याय होता है। अतः बिना एकाग्रता एवं बिना समझ के आत्मोत्थान करने वाले सद्विचारों का पढ़ना, सुनना अथवा उससे संबंधित प्रश्नोत्तर करना भी उतना लाभदायक नहीं होता। वह स्वाध्याय से क्षणिक, आंशिक, अस्थायी लाभ प्राप्त करने जैसा पुरुषार्थ है। सच्चा स्वाध्याय तो आध्यात्मिक व्यायाम होता है, जो आत्मा से मोह और अज्ञान का आवरण दूर करता है।

स्वाध्याय से लाभ :

स्वाध्याय से जीवन का सम्यक् बोध होता है, जिससे जीवन के सही लक्ष्य का निर्धारण किया जा सकता है। व्यक्ति स्वावलम्बी बनने लगता है। जीवन की प्राथमिकताएँ भौतिकता के स्थान पर आत्मार्थ की होने लगती हैं। कामनाएँ,

आकांक्षाएँ और दूसरों से अपेक्षाएँ कम होने लगती हैं। नकारात्मक सोच सकारात्मक सोच में बदलने लगता है। सकारात्मक सोच से अशुभ लेश्या शुभ में बदलने लगती है, जिससे आभा मंडल शुद्ध होने लगता है। फलतः स्वाध्यायी न केवल तनाव मुक्त और स्वस्थ होता है अपितु उसके समीप रहने वाले का भी नकारात्मक भाव बदलकर सकारात्मक होने लगता है। जीवन में धैर्य,सहनशीलता,अप्रमाद का विकास होने लगता है। अन्तःस्रावी ग्रन्थियाँ एवं ऊर्जा चक्र सक्रिय होते हैं, परिणामस्वरूप रोग-प्रतिरोधक क्षमता बढ़ने लगती है। स्वाध्याय से ज्ञानावरणीय कर्मों का क्षय होता है और भविष्य में ज्ञानेन्द्रियाँ सशक्त होती हैं। सारांश यही है कि 'स्वाध्याय' समुद्र में गति करने वाले जलयान के लिए प्रकाशस्तम्भ के समान, सड़क पर बेभान चलने वाले वाहनों का नियन्त्रण करने हेतु स्पीड ब्रेकर के समान तथा गलत गाड़ी में यात्रा करने वालों के लिए टिकट निरीक्षक के समान व्यक्ति के जीवन को संयमित, नियंत्रित, अनुशासित करने के लिए सम्यक् मार्ग दर्शक होता है।

वर्तमान में स्वाध्यायी से अभिप्राय

आजकल व्यवहार में जो गृहस्थ पर्युषणों में विभिन्न क्षेत्रों में जाकर सामूहिक धार्मिक-साधना करने एवं करवाने में सहयोगी बनते हैं, सन्त-मुनिराजों की अनुपस्थिति में आध्यात्मिक प्रवचनों द्वारा प्रेरणा देने की भूमिका निभाते हैं, वे स्वाध्यायी के नाम से पहचाने जाते हैं। अर्थात् जो स्वयं साधना करते हुए दूसरों की साधना में निमित्त बनते हैं, वे स्वाध्यायी कहलाते हैं।

स्वाध्यायी सम्पूर्ण त्यागी नहीं होता, अतः उसका कार्यक्षेत्र, प्रेरणा-क्षेत्र साधु-मर्यादाओं की भाँति सीमित नहीं होता। पारिवारिक कलह को दूर करने, धर्म विमुख युवाओं में संस्कार देने, निवृत्ति मार्ग में बढ़ने वालों की खोज कर उन्हें विरक्ति के मार्ग में बढ़ाने हेतु आवश्यक मार्गदर्शन देने, शाकाहार प्रचार, अहिंसक चिकित्सा पद्धतियों की जानकारी, सौन्दर्य-प्रसाधनों के नाम पर होने वाली हिंसा से बचाव, पशुक्रूरता के विभिन्न तरीकों से एवं गर्भपात जैसे घृणित कार्यों से, समाज में आडम्बर, प्रदर्शन एवं कलह के नियन्त्रण आदि में स्वाध्यायी श्रावक अंपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं, क्योंकि स्वाध्यायी को उन दुष्प्रवृतियों के घातक परिणामों का बोध होता है।

स्वाध्यायियों का दायित्व

स्वाध्यायी को उपदेशक की भूमिका निभानी पड़ती है। **सच्चा और अच्छा उपदेशक वही होता है, जिसका जीवन बोलता है।** यदि स्वाध्यायी द्वारा प्रवचन में जो प्रेरणा दी जाती है, उसका वह स्वयं अपनी क्षमतानुसार पालन नहीं करता है तो उसकी प्रेरणा वाणी-विलास एवं अहं-पोषण तक सीमित रह जाती है, श्रोताओं को प्रेरित नहीं कर पाती।

अतः स्वाध्यायी का जीवन दुर्व्यसनों एवं दुराग्रहों से मुक्त, अविश्वसनीय एवं विवादास्पद नहीं होना चाहिए। स्वाध्यायी को स्व-प्रशंसा एवं पर-निन्दा से यथा संभव दूर रहना चाहिए। स्वाध्यायी की वाणी में जितनी विनयशीलता, सरलता, सहजता, गुण-ग्राहकता, गम्भीरता होगी, आचरण में विवेक और सजगता, सिद्धान्तों के पालन में दृढ़ मनोबल, स्वाध्याय के प्रति अहोभाव होगा, व्यवहार में सद्भाव, समन्वय और सामन्जस्य, धैर्य तथा सहनशीलता होगा एवं स्वभाव जितना शांत होगा, उतनी अधिक जिनशासन की प्रभावना करने में वह सफल होगा।

प्राथमिक योग्यताओं के अभाव में अनेक स्वाध्यायी बन्धु अपनी भूमिका प्रभावशाली ढंग से नहीं निभा पा रहे हैं। पर्युषणों के होने वाले दैनिक कार्यक्रमों का तो वे येन केन प्रकारेण संचालन कर लेते हैं, परन्तु जिन क्षेत्रों में वे जाते हैं, उनकी क्षमताओं का समाज एवं शासन हित में पूर्ण उपयोग नहीं ले पाते।

पर्वाराधना का मूल्यांकन

स्वाध्यायी को अपना दृष्टिकोण बड़ी सहजता एवं स्पष्टता से रखना चाहिए। ज्यादा जल्दी जल्दी एवं अनावश्यक तेज नहीं बोलना चाहिए। श्रोताओं के स्तर को ध्यान में रखते हुए सिद्धान्तों के अनुरूप अपने विषय के प्रतिपादन में दक्ष होना चाहिए। यथासंभव निश्चयात्मक भाषा का प्रयोग न हो इस बात का सद्विवेक रखना चाहिए। उस क्षेत्र एवं परिचय में आने वाले स्वधर्मियों से किसी भी प्रकार की अपेक्षाएँ नहीं रखनी चाहिए, क्योंकि जब भी अपेक्षाएँ उपेक्षित होती हैं तो तनाव हो सकता है। प्रवचन और धार्मिक अनुष्ठानों के अन्य कार्यक्रमों में क्षेत्र के अनुरूप उपस्थिति अथवा धर्म-ध्यान न होने अथवा जिज्ञासुओं के प्रश्नोत्तरों द्वारा अथवा शंकाओं का समाधान करते हुए स्वाध्यायियों को न तो छलकना

चाहिए और न व्यंगात्मक अथवा द्वेषात्मक प्रतिक्रिया करनी चाहिए। पर्युषणों में भी जो स्वधर्मी प्रमादवश पर्वाराधना के कार्यक्रमों में भाग नहीं लेते और न स्वयं के स्तर पर अलग से धर्म ध्यान करते हैं उनसे सम्पर्क कर शांत भाव से उन कारणों को सुन, समझ, सम्यक् समाधान देकर धर्म से जोड़ने का प्रयास करना चाहिए। उनके प्रति हमारे मन में किसी भी प्रकार की घृणा का भाव न हो, अपितु अनुकंपा, मैत्री का भाव होना चाहिए। ऐसे समय स्वाध्यायी को चिंतन करना चाहिए कि जब शेर जैसा हिंसक पशु भी भगवान् के पास बैठ सकता है तो एक स्वधर्मी पर्युषण जैसे पावन प्रसंग पर भी उनके पास आता हुआ क्यों संकोच करता है। अपनी अपूर्णता को एवं पुरुषार्थ की कमी को ही उसका निमित्त मानना चाहिए।

पापी से पापी व्यक्ति के प्रति भी हमारे मन में द्वेष न हो, क्योंकि किसी न किसी भव में अज्ञानवश हमारी स्थिति इससे भी खराब हो सकती है। हमें सम्यक् सहयोग मिलने से जैसे हमारे अन्दर बदलाव आया, वैसा कभी न कभी जिसे मैं पापी, अधर्मी,नास्तिक, मिथ्यात्वी समझ रहा हूँ बदलाव आ सकता है। अर्जुनमाली का जीवन हमें यही संदेश दे रहा है।

स्वाध्यायी धर्मसंघ के प्रतिनिधि के रूप में अपनी अमूल्य सेवाएँ देता है। अतः उसको अपने पद की गरिमा का ध्यान रखते हुए सिद्धान्तों का ईमानदारी पूर्वक पालन करते हुए क्षेत्र की व्यवस्थाओं के साथ सद्भावपूर्वक तालमेल रखना चाहिए, जिससे उस क्षेत्र में छोटी-छोटी बातों को लेकर प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से समाज का वातावरण दूषित न हो। स्वाध्यायियों को साम्प्रदायिक कट्टरता की मनोवृत्ति से दूर रहना चाहिए। सम्प्रदाय तो एक सामाजिक व्यवस्था है, जिसमें निष्ठा होती है। निष्ठा बांटती नहीं, तोड़ती नहीं। निष्ठा में दृढ़ता, समर्पण, अनुशासन, सम्यक् चिंतन एवं सद्विवेक होता है, जबकि सम्प्रदायवाद कट्टरता, पूर्वाग्रह एवं द्वेष का पोषक एकान्तवादी होता है। सम्प्रदायवाद संकीर्णता का प्रतीक है। उसका दृष्टिकोण 'सच्चा जो मेरा' के स्थान पर 'मेरा जो सच्चा' होता है।

पर्वाराधना का सही मूल्यांकन स्थायी संकल्प एवं व्रत प्रत्याख्यान होता है। पर्युषण का समय आध्यात्मिक व्यापार का मुख्य मौसम होता है। अतः स्वाध्यायी की प्रेरणा से कितने स्वधर्मी बंधुओं ने सामायिक, प्रतिक्रमण आदि नवीन ज्ञान ध्यान सीखा? कितने व्यक्तियों ने भविष्य में

स्वाध्यायी के रूप में सेवाएं देने का संकल्प लिया? कितने व्रती बने और निवृत्ति के मार्ग में आगे बढ़ने हेतु तैयार हुए? स्वाध्यायी की प्रेरणा के निमित्त से कितने व्यक्तियों की संयम मार्ग में आगे बढ़ने हेतु मानसिकता बनी? क्या धार्मिक पाठशाला एवं धार्मिक पुस्तकालय का संचालन व्यवस्थित करने में स्वाध्यायी की प्रेरणा निमित्त बनी? क्षेत्र के धर्म जिज्ञासुओं की जिज्ञासा का सम्यक् समाधान कर धर्म के मार्ग में आगे बढ़ाने के कार्य को स्वाध्यायियों द्वारा सर्वाधिक प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

आत्मविकास के लिये आवश्यक है– नियमित एवं निरन्तर प्रयास, रुचि, सजगता, स्वदोष–अनुप्रेक्षा आदि। अतः स्वाध्यायी को वर्ष भर नियमित अध्ययन, चिन्तन, लेखन कर अपने सम्यग् ज्ञान में अभिवृद्धि करनी चाहिए न कि पर्युषण के आते ही धार्मिक उपकरणों एवं साहित्य को संभालने की आदत हो। प्रत्येक स्वाध्यायी को अपनी क्षमता, समझ एवं योग्यतानुसार अपने खाली समय में प्रमाद न कर निरन्तर नियमित रूप से अपने ज्ञान की अभिवृद्धि हेतु स्वाध्याय में सजग रहना चाहिए। जो समय स्वाध्याय में नहीं लगेगा वह समय पराध्याय, प्रमाद, आर्त्त एवं रौद्र ध्यान में लगने की पूर्ण संभावना रहती है। प्रत्येक स्वाध्यायी को अपनी प्रगति की नियमित समीक्षा करनी चाहिये, अन्यथा वह अपने दायित्वों का ईमानदारी से पालन कैसे कर पायेगा, यह उसके स्वयं के चिन्तन का विषय है? स्वाध्यायी पूर्ण तैयारी के साथ पर्वाराधना करावे, जो भी कार्य करे, उसमें उसे निर्धारित लक्ष्यों को भी प्राप्त करना है। योजनाबद्ध कार्य से अवश्य सफलता मिलती है। ऐसा न हो कि उसके समय एवं श्रम का उसकी योग्यता एवं क्षमतानुरूप पूर्ण लाभ प्राप्त न हो।

स्वाध्यायियों से कार्यालय की अपेक्षा :

स्वाध्यायी के रूप में सेवा देने वाले श्रावक कर्मों की महती निर्जरा करते हैं। उनकी सेवाएं अनुमोदनीय हैं। सामाजिक व्यवस्था में जुड़े होने के कारण समाज एवं संघ के संचालकों की उनसे चन्द अपेक्षाएं हैं, जिस पर प्रत्येक स्वाध्यायी को सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाना चाहिए।

- स्वाध्यायी सेवा को कैसे प्रभावी बनाया जाए, पर्युषणों में स्वाध्यायियों के समय, श्रम एवं क्षमताओं का अधिकतम उपयोग कैसे लिया जाए,

स्वाध्यायियों में पर्युषण सेवा को सर्वाधिक प्राथमिकता देने हेतु कैसे उत्साह जागृत किया जाए, इस संबंध में पदाधिकारियों का मार्गदर्शन करने हेतु निवेदन है।

प्रत्येक स्वाध्यायी अपने अनुभवों एवं सुझावों तथा उनकी क्रियान्विति कैसे हो तथा संभावित कठिनाइयों एवं परेशानियों को कैसे दूर किया जाये, इस हेतु स्पष्ट मार्गदर्शन की अपेक्षा है।

- स्वाध्यायी अपनी ज्ञानवृद्धि एवं साधना से अवगत कराने के साथ अपने पते, टेलीफोन नम्बर बदल जाने पर तुरन्त कार्यालय को सूचित करावें।
- यद्यपि स्वाध्यायियों के लिए क्षेत्रों के आवंटन हेतु उनकी योग्यता एवं अपेक्षाओं का ध्यान रखा जाता है, फिर भी किसी स्वाध्यायी को यदि उसकी अपेक्षाओं के अनुरूप क्षेत्र और सहयोगी न मिल सकें तो भी स्वाध्यायी से सकारात्मक सोच अपेक्षित है।
- स्वाध्यायियों को पर्वाराधना हेतु दिए गये निर्देशों का ईमानदारी पूर्वक पालन करना चाहिए। क्षेत्र से किसी भी प्रकार का उपहार नहीं लेना चाहिए, क्योंकि प्रलोभन के प्रतिकार का प्रत्येक क्षण सफलता का द्वार खोलता है।
- स्वाध्यायियों की विशेष रूप से महिला एवं युवतियों की ऐसी वेशभूषा न हो जिससे श्रोताओं का ध्यान विचलित हो।
- प्रत्येक प्रवृति को समयानुसार विधि एवं यतना पूर्वक करने का विवेक रखना चाहिए। प्रवृत्ति में हड़बड़ी और गड़बड़ी न हो, इस हेतु स्वाध्यायी को सजग रहना चाहिए।
- पर्युषण सेवा को वे सर्वोच्च प्राथमिकता दें। साधारण प्रतिकूल परिस्थितियों में ऐसे पुनीत कार्यों से वंचित न रहें, ऐसी अपेक्षा है।
- पर्युषण में स्वाध्यायी के रूप में सेवा देने की स्वीकृति कार्यालय को बिना किसी प्रतीक्षा, कम से कम पर्युषणों के 2-3 मास पूर्व प्रेषित करने का ध्यान रखें। यदि किन्हीं विशेष कारणों से स्वीकृति देने के बावजूद भी पर्युषणों में अपनी सेवाएं न दे सकें तो व्यवस्थापकों को तुरन्त सूचित करें ताकि वैकल्पिक व्यवस्था तुरन्त की जा सके।
- पर्युषणों के अलावा जो अधिक समय सेवाएँ दे सकते हैं वे भी अपनी

अनुकूलतानुसार कार्यालय को सूचित करें।

- पर्युषण सेवा को भार न समझें। अति उत्साह के साथ उसकी क्रियान्विति करें। स्वीकृति भेजते समय संचालकों पर एहसान प्रदर्शन की प्रवृत्ति हो तो, उससे बचने का प्रयास करें।
- संघ की अन्य गतिविधियों (धार्मिक प्रशिक्षण शिविरों, धार्मिक परीक्षाओं एवं अन्य ज्ञानवर्द्धक योजनाओं) में स्वाध्यायी उत्साह पूर्वक भाग लें।

स्वाध्याय ही स्वयं का सच्चा निरीक्षक, समीक्षक एवं परीक्षक होता है। ऐसे जिम्मेदार कर्त्तव्यनिष्ठ, समर्पित, अनुशासित, निष्ठावान स्वाध्यायियों से ही जिनशासन की प्रभावना हो सकती है।

-संयोजक श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ,
घोड़ों का चौक, जोधपुर-३४२००३ (राज.)
फोन : ०२९१-२६२१४५४, २६२४८९४, ९४१४१-३४६०६

आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. का स्वाध्यायियों को मार्गदर्शन

स्वाध्यायी में एक ही आवाज पर शासन सेवा में जुट जाने और समर्पित होने की भावना जितनी अधिक मात्रा में होगी उतनी ही मात्रा में स्वाध्यायी बंधुओं का शासन हित में अधिक योगदान मानूँगा। संख्या तो अधिकाधिक होती जाए और एक ही आवाज पर सुसंगठित एवं अनुशासित रूप में शासन हित के कार्य करने की भावना नहीं हो तो इसे स्वाध्याय संघ की सफलता नहीं माना जा सकता।

स्वाध्यायी को किसी के दोष नहीं देखना है, किसी के प्रति ईर्ष्या नहीं जगानी है, किसी की टीका-टिप्पणी नहीं करनी है। अपने नियत कार्य में निरन्तर प्रगति करते हुए निष्ठा के साथ जिनशासन और समाज की सेवा को अपना कर्त्तव्य समझ कर उत्तरोत्तर आगे बढना है। कोई भी स्वाध्यायी हो, वह स्वाध्यायी आपका सहधर्मी भाई है। किसी स्वाध्याय-संघ का स्वाध्यायी हो, वह आपका स्वाध्यायी बंधु है। अतः किसी की आलोचना में, टीका-टिप्पणी में पड़कर आपको अपने समय का दुरुपयोग नहीं करना है।

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' से साभार

तत्त्वज्ञान प्रश्नोत्तरी (क्रमशः ४३)

आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ

(अजीव पर्याय-असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध)

श्री धर्मचन्द जैन

प्र.२९२ असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध किसे कहते हैं?

उत्तर जो स्कन्ध असंख्यात परमाणुओं/ प्रदेशों से मिलकर बना हो, उसे असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध कहते हैं।

प्र.२९३ असंख्यात की गिनती कहाँ से प्रारंभ होती है ?

उत्तर जैन धर्म में गणित की दृष्टि से विचार करें तो ज्ञात होगा कि शीर्ष प्रहेलिका के बाद की इकाई असंख्यात में आती है, जिसे पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग, संख्यातवाँ भाग, पल्योपम, सागरोपम, बादर काल, पुढ़वी काल आदि के नाम से जाना जाता है।

जैन धर्मानुसार आयु या स्थिति की दृष्टि से विचार करें तो ज्ञात होगा कि एक करोड़ पूर्व वर्ष तक की स्थिति को संख्यात काल में माना गया है। यदि एक करोड़ पूर्व वर्ष से अन्तर्मुहूर्त्त भी अधिक स्थिति जीवों की हो तो उसे असंख्यात काल में गिना जाता है। यही कारण है कि जिन मनुष्य एवं तिर्यञ्चों की स्थिति एक करोड़ वर्ष पूर्व से अधिक होती है, वे युगलिक कहलाते हैं, असंख्यात वर्षायुष्क कहलाते हैं।

प्र.२९४ असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध कौन-कौन से हैं?

उत्तर पुद्गलास्तिकाय में असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध अनन्त होते हैं। प्रत्येक जीव के प्रदेश भी असंख्यात ही होते हैं। धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय और लोकाकाश इनके स्कन्ध भी असंख्यात प्रदेशी ही होते हैं। चार द्रव्य असंख्यात प्रदेशी होने के साथ तुल्य भी हैं। अर्थात् उनके प्रदेश बराबर असंख्यात ही होते हैं उनमें एक भी प्रदेश का अन्तर नहीं होता है। वे चार द्रव्य इस प्रकार हैं- १. धर्मास्तिकाय, २. अधर्मास्तिकाय, ३. लोकाकाश, ४. एक जीव के प्रदेश।

प्र.२९५ धर्मास्तिकाय आदि चार द्रव्य तुल्य होने का क्या कारण है ?

उत्तर धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, लोकाकाश एवं एक जीव के प्रदेश ये चारों तुल्य होते हैं, क्योंकि धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय सम्पूर्ण लोक में व्याप्त हैं। लोक के एक-एक आकाश प्रदेश पर धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय के एक-एक प्रदेश रहे हुए हैं।

एक जीव के प्रदेश भी असंख्यात तथा उक्त तीनों के बराबर होते हैं। जब कोई जीव केवली समुद्घात करते हैं तब अपने आत्म-प्रदेशों को एक समय के लिये सम्पूर्ण लोक में फैला देते हैं। अर्थात् लोक के एक-एक आकाश प्रदेश पर केवली के एक-एक प्रदेश स्थित हो जाते हैं। उस समय एक भी आकाश प्रदेश ऐसा नहीं बचता, जिस पर केवली के आत्म-प्रदेश नहीं हो। अतः यह स्पष्ट हो जाता है कि धर्मास्तिकाय आदि चारों द्रव्य तुल्य होते हैं।

प्र.२९६ केवली के समान क्या सभी जीवों के आत्म-प्रदेश भी बराबर होते हैं?

उत्तर हाँ, केवली के समान सभी जीवों के आत्म-प्रदेश एक समान होते हैं। एक छोटा सा प्राणी- लीख, जूं, चींटी आदि तथा विशालकाय प्राणी, हाथी, डायनोसोर, व्हेल मछली आदि सभी के आत्मप्रदेश एक समान असंख्यात ही होते हैं। आत्म-प्रदेशों में 'संकोच-विस्तार' गुण होने के कारण वे संसारी जीवों में शरीराकार हो जाते हैं तथा सिद्धों में अन्तिम भव में शरीर की अवगाहना के दो तिहाई भाग में अवस्थित हो जाते हैं।

प्र.२९७ असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध की जघन्य, उत्कृष्ट कितनी अवगाहना होती है?

उत्तर धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय और लोकाकाश इन तीनों की अवगाहना तो सदैव लोक प्रमाण ही रहती है। कभी भी कम-अधिक नहीं होती है। पुद्गलास्तिकाय के असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध की अवगाहना में बड़ी विचित्रता है। वह कम से कम एक आकाश-प्रदेश पर भी स्थित हो जाता है तथा अधिक से अधिक असंख्यात आकाश प्रदेशों पर भी स्थित रह जाता है। अतः अवगाहना जघन्य एक आकाश प्रदेश तथा उत्कृष्ट असंख्यात आकाश प्रदेश है। उत्कृष्ट अवगाहना के सम्बन्ध में यह ध्यान रखना चाहिये कि जितने असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध

हैं, वे उतने ही असंख्यात प्रदेशों पर स्थित रह सकते हैं, किन्तु उनसे अधिक असंख्यात प्रदेशों पर स्थित नहीं रह सकते।

उदाहरणार्थः– एक अंगुल के असंख्यातवें भाग क्षेत्र में भी असंख्यात आकाश प्रदेश है। एक अंगुल, एक हाथ, एक योजन आदि क्षेत्रों में भी असंख्यात आकाश प्रदेश है। एक लाख योजन की अवगाहना वाले जम्बूद्वीप में तथा सम्पूर्ण लोक में भी आकाश प्रदेश असंख्यात ही होते हैं। छोटे-बड़े की अपेक्षा असंख्यात के भी असंख्यात भेद हो सकते हैं। अतः यह कहा गया है कि जितने असंख्यात परमाणुओं से मिलकर स्कन्ध बना है वह अधिकतम उतने ही असंख्यात आकाश प्रदेशों पर स्थित रह सकता है, किन्तु उनसे अधिक असंख्यात प्रदेशों पर स्थित नहीं रह सकता।

प्र.२९८ असंख्यात प्रदेशी स्कन्धों में प्रदेश, स्थिति तथा वर्णादि की अपेक्षा कितना अन्तर होता है?

उत्तर असंख्यात प्रदेशी स्कन्धों में आपस में तुलना करने पर प्रदेश व स्थिति की अपेक्षा असंख्यात गुणा तक तथा वर्णादि में अनन्त गुणा तक अन्तर हो सकता है।

असंख्यात के भी असंख्यात भेद होने से प्रदेश की अपेक्षा असंख्यात गुणी तक हानि-वृद्धि हो सकती है। स्थिति परमाणु आदि के समान एक समय से लेकर असंख्यात काल तक की हो सकती है। अतः स्थिति में असंख्यात गुणी तक हानि-वृद्धि संभव है। वर्णादि १६ बोलों की पर्यायों में भी एक गुण से लेकर अनन्त गुण काला वर्णादि हो सकते हैं, अतः अनन्त गुणी तक हानि-वृद्धि हो सकती है।

प्र.२९९ असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध को कौन देख सकते हैं?

उत्तर धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, लोकाकाश एवं एक जीव के प्रदेश में चारों अरूपी होते हैं, अतः केवलज्ञानी इन्हें जान-देख सकते हैं। पुद्गलास्तिकाय का असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध चतुःस्पर्शी होता है, अतः इसे विशिष्ट अवधिज्ञानी, केवलज्ञानी जान-देख सकते हैं।

(क्रमशः)

-रजिस्ट्रार, अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

धारावाहिक (क्रमशः५०)

जम्बूकुमार

जैनदिवाकर श्री चौथमल जी म.सा.

पूर्ववृत्तः- हवेली के सामने राजा की सेना का मुकाबला करने के लिए राजकुमार का तीसरा मित्र तैयार खड़ा था। उधर महाराज ने पदच्युत किये गये मंत्री को आदेश दिया कि राजकुमार और उसके मित्र को राजमहल में ले आओ। युवराज के राजमहल में आने पर उसका भव्य स्वागत और आलिङ्गन करने पर सभी लोग राजा को आश्चर्य से देखने लगे। इस नाटक के पीछे सच्ची मित्रता की परीक्षा लेना राजा का उद्देश्य था। अब आगे......

तुम्हारे तीन मित्र थे,पर उनमें से अवसर पड़ने पर कौन कितना सहयोग दे सकता है, इस बात की परीक्षा तुमने कभी नहीं की थी। बिना परीक्षा किए उनके हाथों में तुम्हारा भविष्य सौंप देना मैंने उचित नहीं समझा। अतएव तुम्हारे मित्रों की परीक्षा करने के उद्देश्य से ही मैंने यह काण्ड रचा था। मैं जानता हूँ मेरे लाल! तुम्हें बड़ा कष्ट पहुँचा है। पर यदि परीक्षा न की जाती तो धोखेबाज मित्र भविष्य में न जाने कितने बड़े अनर्थ के कारण हो जाते। आज उनकी परीक्षा हो चुकी। रंगे सियार सामने आ गए। देखा, तुम्हारे साथ रात-दिन रहने वाला, तुम्हारे टुकड़े खाकर मोटा बना हुआ यह तुम्हारा मित्र तुम्हें कितना चाहता है? मुसीबत पड़ते ही फौरन कुत्ते की भांति दुम दबा कर भाग गया। तुम उसके पास गए तो तुम्हें पत्थर मारकर तुम्हारा भेजा फोड़ने को तैयार हो गया। सच्ची विपत्ति तुम्हारे ऊपर पड़ी होती तो यह क्या काम आता? यह प्रथम श्रेणी का मायाचारी है। अब तक इसने बड़ा धोखा दिया है। अतएव तुम्हारे बदले इस नीच को प्राणदण्ड दिया जाएगा।

युवराज! दिन-दिन में तुम्हारे साथ रहने वाला यह तुम्हारा दूसरा मित्र है इसे भी तुमने खूब खिलाया पिलाया है, पर यह भी कुछ काम न आया। इसने भी संकट भोगने के लिए तुम्हें अकेला छोड़ दिया था। फिर भी उसने पहले मित्र की तरह दुष्टता नहीं दिखलाई और घोड़ा देने को तैयार हो गया। यह

पहले मित्र से अच्छा है, फिर भी इस पर विश्वास नहीं किया जा सकता। यद्यपि सहायता न कर सकने के कारण इसने पश्चात्ताप किया था पर पश्चात्ताप करने से ही तो संकट से उद्धार नहीं हो सकता। अतएव यह प्राण दण्ड का भागी न होने पर भी देश निकाले की सजा का पात्र है। इसे मैं यही दण्ड देता हूँ।

प्रिय पुत्र! यह कहते हुए मुझे बड़ी प्रसन्नता होती है कि कभी-कभी मिल लेने वाला तुम्हारा तीसरा मित्र ही सच्चा खरा निष्कपट मित्र है। यह समय पर काम आने वाला है। इसने अपने कर्त्तव्य का पालन किया है। यद्यपि तुमने इसके साथ अधिक घनिष्ठता नही बढ़ाई थी, फिर भी तुम्हारे लिए यह अपने प्राणों का उत्सर्ग करने को तैयार हो गया। सचमुच यह बारम्बार प्रशंसनीय है। मैं इसका हृदय से अभिनंदन करता हूँ। कुमार, तुम इसके भरोसे रह सकते हो। यह समय आने पर तुम्हें दगा न देगा। तुम इसे अपना सहचर-सखा बनाओ। इसकी सम्मति लेकर कार्य किया करो। किसी कवि ने कहा है-

काम पड्यां जो आवे आड़ो,
वणी सगासूं मिलिए गाढ़ो।
काम पड्यां जो देवे टालो,
वणी सगा को मूंडो कालो।।

इस प्रकार दृष्टान्त देकर जम्बूकुमार कहने लगे- "रूप श्री! इस दृष्टान्त पर सावधान होकर गहरा विचार करो। इसमें राजा के स्थान पर यमराज को समझना चाहिए, जिसकी धाक तीनों लोकों में जमी हुई है। यमराज का प्रकोप होने से मृत्यु आती है। मृत्यु आने पर युवराज के समान जगत् के पामर प्राणी थर-थर काँपने लगते हैं। किसी प्रकार मृत्यु के पंजे से छुटकारा पाने के लिए छटपटाते हैं। मगर आयु कर्म का अन्त आने पर कोई भी उपाय कारगर नहीं हो सकता। बड़े-बड़े सम्राट्, चक्रवर्ती, वैद्य, डॉक्टर आदि कोई भी क्यों न हो, उसे लाचार होकर यमराज की शरण में आना ही पड़ता है। लेकिन मोही जीव यह सब आँखों के सामने देखते हुए भी मोह के कारण मृत्यु से बचनें का प्रयास करते हैं। वे हमेशा साथ रहने वाले मित्र के समान शरीर से सहायता की भीख मांगते हैं। क्योंकि जीव ने शरीर को खूब स्वादिष्ट, बलवर्द्धक और

मनोज्ञ आहार कराया है, उसकी सार-संभाल की है, सेवा की है, पहनाया-ओढ़ाया है। कभी किसी प्रकार का कष्ट नहीं पहुँचने दिया। कभी भूल-चूक से या धर्म गुरु के उपदेश से निराहार भी रक्खा तो उसमें भी फलाहार खूब ठूंस-ठूंस कर खिलाया या धारने पारने के दिन उपवास की सारी कसर निकाल ली। इस प्रकार लालन-पालन किया गया यह शरीर यमराज का आक्रमण होने पर तनिक भी काम नहीं आता। यही नहीं, यह खांसी, श्वास, शूल, दमा आदि अनेकानेक रोगों के रूप में जीव पर पत्थर बरसाएगा। इस प्रकार जीव को वह सर्वथा निराश कर देगा।

जीव शरीर से निराश होकर दिन-दिन में साथ रहने वाले दूसरे नम्बर के दोस्त के समान कुटुम्बियों के समीप आता है। वह कुटुम्बियों से यह चाहता है कि वे मृत्यु का ग्रास न बनने देवें। वे लोग थोड़ी सी सांत्वना प्रदान करते हैं। सहानुभूति प्रदर्शित करने के लिए रोना-धोना आरम्भ करते हैं। वैद्यों और हकीमों को बुलाते हैं। पेट को औषधालय बना डालने का प्रयत्न करते दिखाई देते हैं। पर वास्तव में उनके तमाम प्रयत्न बेकार सिद्ध होते हैं। तब हार मानकर कहने लगते हैं- ''भाई ! तुम्हारा कष्ट देखकर कलेजा मुँह को आ रहा है। ऐसी वेदना हो रही है जैसे हजारों बिच्छू एक साथ काट रहे हों। जितना प्रयत्न मनुष्य के द्वारा हो सकता है उसमें हमने तनिक भी कोर-कसर बाकी नहीं रखी, पर प्रकृति के प्रकोप का सामना करना असंभव है। अब हमारी एक भी नहीं चलती। हम तुम्हारे बदले अपने प्राण दे दें तो भी तुम्हारी बीमारी दूर नहीं होगी। ऐसी अवस्था में मजबूरी है। तुम्हारे ऊपर कोई वजन होता तो पूरा का पूरा हम लोग उतार लेते और सिर पर रख लेते, मगर बीमारी और बीमारी से उत्पन्न होने वाला कष्ट तो अविभाज्य है- उसका बंटवारा करना हमारी शक्ति से परे है।''

इस प्रकार अपनी सहानुभूतिपूर्ण असमर्थता प्रकट करके कुटुम्बीजन अपने कर्त्तव्य से मुक्त हो जाते हैं। पर, इससे जीव की रही-सही आशा भी काफूर हो जाती है। उसकी चिन्ता इस समय बढ़ जाती है। फिर भी लालच के कारण जीवित रहने की कामना से प्रेरित होकर- वह अपना प्रयत्न जारी रखता

है।

अन्त में वह कभी-कभी मिलने वाले मित्र के समान श्री सद्गुरु महाराज की शरण में जाता है। गुरु महाराज उससे कहते हैं- "तूने नरकगति अथवा तिर्यञ्च गति में जाकर दण्ड भोगने के योग्य कोई अपराध तो नहीं किया है ? यदि ऐसा कोई आचरण तूने नहीं किया है तब फिर डरना काहे को? जिन लोगों ने अपना जीवन पाप-कार्यों में व्यतीत किया है जिन्होंने धर्म का आराधन नहीं किया है, अतएव जो मृत्यु के पश्चात् दुर्गति में जाकर नाना भाँति के कष्ट उठावेंगे, उन्हें मृत्यु से भयभीत होना चाहिए। धर्मात्मा पुरुष मृत्यु से कदापि नहीं डरते। वे न मरण की कामना करते हैं और न जीवन की ही कामना करते हैं। वे भलीभांति समझते हैं कि-

चित्रव्याघातवृक्षाः विषयसुखतृणास्वादनासक्तचित्ताः।
निर्स्त्रिशैरारमन्तो जनहरिणगणाः सर्वतः सञ्चरद्भिः।
खाद्यन्ते यत्र सद्यो भवमरणजराश्वापदैर्भीमरूपं,
तत्रावस्थां क्व कुर्मो भवगहनवने दुःखदावाग्नि तप्ते।

अर्थात् तरह तरह के मानसिक आघात रूपी वृक्षों से परिपूर्ण, दुःख रूपी दावानल से जलते हुए, संसार रूपी घोर अटवी में भ्रमण करने वाले, विषय-सुख रूपी तृण (घास) को चरने में आसक्त चित्त वाले, जीव रूपी हरिणों के झुण्ड, जहाँ चारों ओर से अत्यन्त निर्दय होकर विचरण करने वाले भयंकर जन्म-जरा-मरण आदि रूप हिंसक पशुओं के द्वारा निरन्तर खाए जा रहे हैं, ऐसे संसार रूपी वन में किस जगह ठहरें ? तात्पर्य यह है कि इस संसार में कहीं भी ऐसा स्थान नहीं है जहाँ रहकर यह जीव अपनी रक्षा कर सके।

ऐसी अवस्था में मृत्यु से बचने का व्यर्थ प्रयास करना अथवा मृत्यु आने पर आर्त्तध्यान करके अपना परलोक बिगाड़ लेने से क्या लाभ है ? फिर मृत्यु धर्मात्मा पुरुष के लिए शत्रु रूप नहीं बल्कि मित्र रूप है। धर्मात्मा पुरुष जीवन भर जो पुण्य और धर्म करता है उसका फल प्रायः परलोक में मिलता है। परलोक बिना मृत्यु के प्राप्त नहीं हो सकता। अतएव किए गए धर्म-पुरुष रूप कृत्यों का फल मृत्यु के द्वारा ही प्राप्त होता है। तब मृत्यु रूपी मित्र का संयोग होने पर विषाद क्यों किया जाए? इसके अतिरिक्त-

कृमिजालशताकीर्णे जर्जरे देहपिञ्जरे।
भज्यमाने न भेत्तव्यं यतस्त्वं ज्ञानविग्रह॥

अर्थात् हे जीव! तू ज्ञान-स्वरूप है,चेतनमय है। यह शरीर सैंकड़ों कीड़ों से व्याप्त है, यह जीर्ण शीर्ण हो गया है। इसका विनाश होने पर तू भय क्यों करता है।

इस प्रकार विचार करके ज्ञानी जन मृत्युकाल उपस्थित होने पर भी समताभाव के अशान्त सरोवर में गोते लगाते रहते हैं। ऐसे पुरुष रत्न मृत्यु को भी भावी कल्याण का कल्याणकका कारण बना लेते हैं। इस प्रकार की भावना अन्त समय में बनी रहे, इसके लिए जीवन में सदा आत्मा-अनात्मा का भेद अनुभव करना चाहिए। यदि कोई शरीर को कष्ट पहुँचाए तो भी साम्यभाव का आस्रव लेकर आत्मा और शरीर के भेद का विचार करें।

वास्तव में वह मनुष्य अत्यन्त मूर्ख है जो कर्म-संयोग से प्राप्त सांसारिक नाना प्रकार के पदार्थों को अपना मान लेता है। जीव के साथ कर्मों का संयोग नाना तरह के दुःखों को उत्पन्न करता है। कर्मों के उदय से ही राग होता है, शोक और वियोग जन्म दुःख भी कर्मोदय से होता है। कर्म के उदय से ही शरीर प्राप्त होता है, शरीर में इन्द्रियाँ होती हैं, इन्द्रियों से विषयों को ग्रहण करता है। विषयों के प्राप्त हो जाने पर रागभाव में वृद्धि होती है और उनका विनाश होने पर शोक होता है। पुण्य के उदय से जब जीव की इच्छानुकूल स्त्री, सुंदर सुत, साताकारी सुहृद्वर्ग प्राप्त होते हैं तब उनमें अतिशय गृद्ध हो जाता है। जब वे नहीं रहते या उन पर विपत्ति आती है तो जीव को अत्यन्त खेद होता है। इस प्रकार सांसारिक पदार्थों का सम्बन्ध जुटाने में और उसकी रक्षा करने में महान् संकटों का सामना करना पड़ता है। (क्रमशः)

विनम्रता

पत्थर में कभी फूल नहीं खिलता,
मिट्टी में ही उसे जीवन है मिलता,
जो लोग रहते हैं सहजता और विनम्रता से,
उनके हाथ से हाथ मिला सारा जहां है चलता।

उपन्यास (९)

भाई-बहन

उपाध्याय श्री केवलमुनि जी म.सा.

पूर्ववृत्तः- चारों रानियों के दुःख-क्रन्दन से दासी गंगा का हृदय पिघल गया और ५००० स्वर्ण मुद्राओं के लोभ में आकर उसने निर्मला की प्रसूति के समय बच्चे के स्थान पर पिल्ला रखने का वचन दे दिया। कुछ दिनों बाद अर्धरात्रि में जब निर्मला की कोख से शिशु जन्मा तो गंगा ने नगर के बाहर ले जाकर उसे मारने का विचार किया, किन्तु उसकी आत्मा ने उसको धिक्कारा। ऐसी स्थिति में पुनः उसके मन में एक विचार कौंधा।

गंगा के मन में विचार आया-रानियों को दिया वचन। उसका क्या होगा? और फिर उसके मस्तिष्क में अपनी दुर्दशा की बिजली भी कौंधने लगी। रानियों के कोप की गाज मुझ पर ही गिरेगी।

उसने तुरन्त निर्णय लिया- यहीं छोड़ चलूँ। वन-प्रदेश है। यदि किसी यात्री की नजरों में आ गया तो इसकी जान बच जायेगी। जैसा इसका भाग्य......।

एक वृक्ष के नीचे शिशु को रखकर लम्बे-लम्बे डग भरती हुई वहाँ से चल पड़ी। रास्ते में पूर्वनिर्धारित स्थान से एक कुत्ते का पिल्ला उठाया और नई रानी निर्मला के कक्ष में पहुँच गई। देखा तो-निर्मला अभी मूर्च्छित थी। कुत्ते का पिल्ला उसकी बगल में रखा और एक गहरी साँस ली।

'नई रानी ने कुत्ते के पिल्ले को जन्म दिया है' यह सूचना पाते ही राजा रूपसेन सन्न रह गये। अपने कानों पर उन्हें विश्वास ही न हुआ।

उत्सुकतावश मुँह उठाया तो देखा-दासी जा चुकी थी। ऐसी सूचना देकर वह खड़ी रह भी नहीं सकती थी।

राजा ने सोचा-शायद मेरे कानों को धोखा हुआ है। चलकर देखना चाहिए असलियत क्या है?

राजा उठे और नई रानी निर्मला के कक्ष में जा पहुँचे। तब तक अन्य चारों रानियाँ भी आ चुकी थीं। गंगा सकपकाई-सी खड़ी थी। निर्मला टुकुर-टुकुर देख रही थी।

रानियों ने सिर झुकाकर राजा का स्वागत किया। राजा ने आगे बढ़कर देखा–नई रानी की बगल में कुत्ते का पिल्ला है। वे असमंजस में पड़ गये, चकित हो गये। इस अनहोनी घटना पर उन्हें हार्दिक दुःख हुआ।

बड़ी रानी ने व्यंग्य किया– "लीजिए महाराज ! नई रानी के सुपुत्र को गोद में लीजिए, प्यार कीजिए, आपकी प्रिय रानी ने कैसे अद्भुत पुत्र को जन्म दिया है।"

छोटी रानी ने तुक्का जोड़ा–"इसमें आश्चर्य क्या है जीजी ! महान् नारियाँ तो ऐसे ही अद्भुत पुत्रों को जन्म देती हैं। पार्वती–पुत्र गणेश को कौन नहीं जानता। वे भी तो ऐसे ही अद्भुत हैं।"

दूसरी रानी ने कहा–"देवियों के तो ऐसे ही पुत्र होते हैं, क्या आप नहीं जानतीं ?"

तीसरी रानी ने चुभता व्यंग्य किया–"सच है, हमारे महाराज वन से वनदेवी को ही लाए हैं। वनदेवी से तो ऐसा ही अद्भुत पुत्र जन्म लेगा। इसमें न कोई आश्चर्य है, और न लज्जा। संकोच, सोच–विचार की आवश्यकता ही नहीं है। यह महान् पुत्र तो हम सबके लिए गौरव ही है ?"

रानियों के इन व्यंग्य बाणों ने राजा का कलेजा चीर दिया। महाराज एकदम क्रोध से फट पड़े, आदेश दिया–"हटा दो इस कुलक्षिणी को मेरी आँखों के सामने से। इसे महल से निकालकर बाहर फेंक दो।"

रानियाँ मन ही मन खुश हो गईं। यही तो वे चाहती थीं। फिर भी ऊपर से हमदर्दी जताते हुए बड़ी रानी बोली–"इतने कठोर मत बनिये महाराज ! यह बेचारी कहाँ जायेगी ?"

"उसी जगंल में चली जाएगी जहाँ यह महल में आने से पहले रहती थी।" राजा का स्वर क्रोध से भरा हुआ था।

बड़ी रानी ने समझाया–"इसमें आपकी शोभा नहीं रहेगी। अपनी मर्यादा का विचार करके इसे महल में तो रहने ही दीजिए।"

राजा ने आदेश के स्वर में कहा–"महारानी ! तुम्हारी ऐसी ही इच्छा है तो इसे दासियों वाली एक कोठरी दे दो। किन्तु मेरे महल में अब यह नहीं रहेगी।

और फिर राजा ने सेवकों को आदेश दिया–"इस कुलक्षिणी को, महल के पिछवाड़े की दीवार से लगी हुई जो कोठरी है, उसमें ले जाओ। ध्यान रहे कोई भी दासी इसके पास न जाए, खाने के लिए सिर्फ उड़द के बाकुले दिये जायें।"

आदेश देकर राजा चलने लगे तो बड़ी महारानी ने कहा–"गुस्सा छोड़िये नाथ ! ऐसा भी हो जाता है वन में भूतनी व चुड़ैलनी भी तो रहती हैं और वह सुन्दर रूप बनाकर पुरुषों को मोहित कर लेती हैं। पहले तो पुरुष उनके मोह में सब कुछ भूल जाता है; लेकिन परिणाम सामने आने पर उसकी आँखे खुलती हैं। तब वह पछताता है। इसमें आपका कोई दोष नहीं है यह पुरुष स्वभाव ही है।"

"सच कह रही हो, महारानी ! मैंने भी ऐसा ही धोखा खाया है। इसके प्यार में मैं अन्धा हो गया था। तुम सबको ही भूल गया था।" राजा का स्वर शांत था।

छोटी रानी बोली–"कोई बात नहीं नाथ ! हम तो आपकी चरण-सेविका तब भी थीं और अब भी हैं। शरीर से छाया कभी अलग हो सकती है क्या ?"

राजा का हृदय भर आया–"तुम्हारा प्रेम तो अविचल है। मैं ही इस मायाविनी के चक्कर में भ्रमित हो गया था। मैंने तुम चारों को विरह अग्नि में बहुत जलाया है।"

"आपने विरह की अग्नि लगाई है, तो अब बुझायेंगे भी आप ही। अब आप हमको कभी मत ठुकराना, अलग मत करना।" बड़ी रानी ने कहा और मुस्कुरा दी।

राजा रूपसेन भी मुस्कुरा दिये–"अब तुम लोगों को विरह की आग में नहीं जलना पड़ेगा।"

रानियाँ मन ही मन खुश हो गईं। उनकी प्रफुल्लता चेहरे पर चमकने लगी।

गंगा को भी पाँच हजार स्वर्णमुद्राएँ मिल गईं। वह भी खुश हो गई। कभी-कभी ऐसा होता है कि किसी एक का बुरा होता है तो अनेक ईर्ष्यालुओं के घर में घी के दीये जलते हैं, किन्तु प्रकृति ऐसा अन्याय अधिक नहीं चलने देती।

आज दुःखी थी तो एक निर्मला। उसका जीवन दुःखों से भर गया। पति की निगाह पलटते ही सब कुछ सूना हो गया। अपनी कोठरी में अकेली पड़ी-पड़ी रोती रहती। लेकिन उसके आँसू पौंछने वाला कोई नहीं था। सधवा होते हुए भी उसका जीवन विधवा से भी बुरा था।

यही सोचकर उसने संतोष धारण कर लिया कि अभी पाप-कर्मों का जोर है, भाग्य विपरीत है, जब भाग्य अनुकूल होगा तो सब कुछ ठीक हो जायेगा–रूठा साजन मान जायेगा।

फिर भी उसे आश्चर्य इस बात का था कि कुत्ते का पिल्ला कैसे हुआ ? यह क्या रहस्य है? इस रहस्य में उलझती तो उलझी रह जाती, उसको समाधान नहीं मिल पाता। (क्रमशः)

नारी-स्तम्भ

स्त्री का कर्त्तव्य

आचार्य विजयरत्नसुन्दरसूरि जी म.सा.

पत्नी ने गुस्से में आकर पति से कहा- "यह आप क्या कर रहे हैं?"

"क्यों? क्या हुआ?

"आप भिखारी को कुछ-न-कुछ देते ही रहते हैं।"

"तो इसमें तुम्हें क्या परेशानी है?"

"मैं पूछती हूँ आप ऐसा क्यों कर रहे हैं?"

"क्यों मैं भिखारी को कुछ नहीं दे सकता?"

"मैं कहाँ मना कर रही हूँ, किन्तु जब मैं इस भिखारी को रोज रोटी देती हूँ तब आपको देने की क्या आवश्यकता है?"

"नहीं। मैं इसे दिए बिना नहीं रह सकता।"

"अच्छा। यह तो बताइए आप उसे देते हैं क्या?" "पाचनचूर्ण"

"पाचनचूर्ण"

"हाँ! तुम्हारी बनाई हुई रोटी बिना पाचनचूर्ण के जब मुझे ही हजम नहीं होती तो भला उस भिखारी को कैसे हजम होगी? और तुम भी तो उसे चार रोटी देती हो। पाचनचूर्ण नहीं लेगा तो उसकी हालत बिगड़ नहीं जाएगी?"

चलने का कार्य पाँव करते हैं यही कार्य यदि हाथ करने लगें तो क्या होगा? पाँव बेकार हो जाएँगे और हाथ विकृत।

कुछ हद तक स्त्री के विषय में भी आज यही परिस्थिति निर्मित हो गई है। परिवार को प्रेम और वात्सल्य की डोर से जोड़ने की जिम्मेदारी उसकी थी, परिवार के सभी सदस्यों के लिए भोजन तैयार करने का कर्त्तव्य उसका था, समस्त घर-गृहस्थी का आर्थिक संचालन कैसे करना चाहिए इसकी उसे सहज समझ थी, किन्तु आज उसे इन कार्यों से मुक्ति दिलाकर बाजार के समक्ष प्रस्तुत किया गया है। उसे ग्राहकों को आकर्षित करना आ गया है, परिवार को किसी प्रकार जोड़कर रखना चाहिए यह सोचने का उसके पास समय ही नहीं है। वह माल बेचने में सफल हो गई है, स्वादिष्ट भोजन बनाने की कला में वह पीछे रह गई है। वह अपने बच्चों की माँ तो बनी है, परन्तु बेटे को वात्सल्य से भिगो देने की उसके पास फुर्सत ही नहीं है। किन्तु यह वास्तविकता स्त्री को कब समझ में आयेगी?

बाल-स्तम्भ

निराला स्वप्न

डॉ. धर्मेन्द्र कुमार कांकरिया

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित कहानी को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर १० अगस्त २००८ तक श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-३४२००१ (राज.) के पते पर प्रेषित करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्री मनोजकुमार जी, कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-२५० रुपये, द्वितीय पुरस्कार-२०० रुपये, तृतीय पुरस्कार- १५० रुपये तथा १०० रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार।

कुछ समय पहले मैंने एक स्वप्न देखा था, जो बड़ा भयानक, हृदय स्पर्शी मानवीय मूल्यों की प्रेरणा देने वाला निराला स्वप्न था।

समय का मुझे ध्यान नहीं, परन्तु निश्चित रूप से मैं गहरी नींद में सो रहा था। रात्रि की शान्ति सब ओर फैली हुई थी। मैंने अचानक देखा कि मुझसे थोड़ी दूर एक विचित्र से आकार की उड़न तश्तरी जमीन पर उतरी। आकार और प्रकार में धरती के यान से भिन्न थी और लगभग हमारी एअर बस के बराबर थी। उस यान में कई तरह के यन्त्र लगे हुए थे और पूरा यान तेज प्रकाश से चमक रहा था। उसको देखकर आस-पास के लोग डरकर भागने लगे। डरा तो मैं भी, परन्तु न जाने क्यों मेरे भीतर के वैज्ञानिक ने मुझे भागने वालों में शामिल नहीं होने दिया और मैं विस्मय के साथ उस यान की तरफ देखता रहा। पृथ्वी पर सुरक्षा की दृष्टि से जो साधन अपनाये जाते हैं और अमेरिका सरीखे शक्तिशाली देश अनेक शस्त्रों का निरन्तर उड़ने वाले अपने सुरक्षा वायुयानों में उपयोग करते हैं, उन सभी का प्रहार उस उड़न तश्तरी पर हो रहा था। परन्तु उनका कोई भी प्रभाव उस अजीबो-गरीब यान पर नहीं हो रहा था। इससे यह बात स्पष्ट थी कि उस यान में जो तकनीक उपयोग में लाई गई वह हमारी सभी तकनीकों से श्रेष्ठतर थी, बहुत आगे थी। अचानक तश्तरी का दरवाजा खुला और मैंने देखा कि उस यान में एक बड़े कमरे में तीन सजीव आकृतियाँ थीं जो

मनुष्य से या पृथ्वी पर पाई जाने वाली किसी भी आकृति से भिन्न थी। मैंने देखा कि शीघ्र ही उन आकृतियों ने मनुष्य का रूप ले लिया। उनमें एक महिला थी जिसने मुझे अपने पास आने का इशारा किया। मैं वास्तव में डरा हुआ था, पर फिर भी हिम्मत करके आगे बढ़ा। मन में यह वैज्ञानिक विचार था कि इन लोगों से वार्तालाप करके उनकी उन्नत तकनीक के बारें में जानकारी प्राप्त करूँ, जिससे पृथ्वी पर रहने वाले करोड़ों मनुष्यों का भला हो सके। मन में यह विचार प्रधान था कि यदि किसी तरह उन लोगों को प्रभावित कर शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व की बात हो जाये तो मानवता का बहुत कल्याण हो सकता है।

यान में प्रवेश करते ही मैंने अपना यह सद्विचार महिला के सामने प्रकट किया। यह सुनते ही उसने अपना हाथ हिलाकर और कुछ जोर देकर कहा "मानवता क्या होती है?" उसने कहा- "आपकी पृथ्वी पर मनुष्य ही ऐसा प्राणी है जो अमानवीयं कार्य करता है, अत्याचार करता है। पृथ्वी के लोगों की यह मान्यता है कि जो शक्तिशाली है वह कमजोर प्राणियों के ऊपर अपना आधिपत्य रख सकता है और इस प्रकार के कमजोर प्राणियों की हत्या करके उनका भोजन के रूप में अधिकारपूर्वक उपयोग कर सकता है। इस प्रकार पशुओं और प्राणियों की कई प्रजातियाँ समाप्त हो गई हैं और अनेक लुप्त होने के कगार पर हैं। क्या यह सच नहीं है? आप किस मानवता की दुहाई दे रहे हैं? जो गायों, सूअरों, मुर्गियों और न जाने कितने प्रजातियों को भयंकर कष्टदायक वातावरण में रखकर बहुत घिनौने तरीके से उनका हनन करती है। क्या यह सच नहीं हैं" मेरे पास कोई उत्तर नहीं था।

मुझे बताया गया कि वे लोग एक सुदूर आकाश गंगा के नक्षत्र 'आग्नेय' से आये हैं। उनके पास ऊर्जा के असीम स्रोत हैं जिनकी पृथ्वी के निवासियों को कल्पना भी नहीं हैं। आग्नेय ग्रह के निवासी मनुष्य का माँस खाने के इच्छुक हैं। उनका यह विचार है कि वे पृथ्वी पर मनुष्यों की खेती करें और लगातार मनुष्यों का माँस यहाँ से आग्नेय उपग्रह को भेंजे। वे यह चाहते हैं कि जिस प्रकार पृथ्वी के लोग गायों को मारकर और उसी के दूध में कई तरह के बर्गर बनाते हैं उसी प्रकार वे भी यहाँ की स्त्रियों और कोमल बच्चों को पकड़कर उन्हीं के दूध में उनको पकायें। उसी समय उस कमरे का दरवाजा खुला और एक भीमकाय आकृति ने बड़ा छुरा लेकर और लपलपाती जीभ से कमरे में प्रवेश किया। सभी वातावरण बड़ा दहलाने वाला और भयानक था।

मैंने गिड़गिड़ाकर कहा-" तब तो बड़ा गजब हो जायेगा। हजारों बच्चे अपनी माताओं से बिछुड़ जायेंगे और मानव समाज पर आफतों का पहाड़ टूट पड़ेगा।" वह महिला आकृति फिर जोर से हँसी-"क्या गायें, सूअर, मुर्गियाँ, और अन्य प्राणी इसी प्रकार आपकी क्रूरता के कारण अपने बच्चों से नहीं बिछुड़ते? क्या इनके बच्चों को मारने से मातायें दुःखी नहीं होती? मुझे यह बताइये कि गायें और अन्य मूक प्राणी कातर स्वरों में क्या यही प्रार्थना लगातार नहीं करती हैं? फिर किस तर्क पर लाखों पशुओं की भोजन के लिये रोज हत्या होती है? क्या यह सच नहीं है कि केवल अमेरिका में प्रतिदिन २ करोड़ २० लाख पशु, ७५ करोड़ मुर्गियाँ और ८० करोड़ किलो मछलियाँ भोजन के लिये मारी जाती हैं। अपने को मानव कहने वाला प्राणी इन निरीह प्राणियों को मारने के पहले अत्यन्त कष्टपूर्ण स्थिति में रखता है। क्या यही आपकी मनुष्यता है?"

मेरे पास सचमुच में कोई उत्तर नहीं था। मैंने हाथ जोड़कर कहा- मैं मानव जाति का ऐसा प्रतिनिधि हूँ जो पूर्ण रूप से शाकाहारी हूँ, माँसाहार की तो बात छोड़िए, मैं किसी भी प्रकार के प्राणियों के शरीर से निर्मित वस्तु को उपयोग में नहीं लाता। इसलिए मेरी प्रार्थना है कि आप पुनर्विचार करें और ऐसा भंयकर निर्णय न लें, जिससे मनुष्यों को भयानक संकट का सामना करना पड़े।

महिला आकृति ने कहा- "आप ये छुरा और लपलपाती जीभ देख रहे हैं। आप शाकाहारी हैं, इस दलील में दम है। साथ ही आप महिला नहीं हैं और आपकी अवस्था के कारण आपका माँस कोमल भी नहीं है। नहीं तो आज आपका बचना मुश्किल था।" यह कहकर महिला आकृति ने मुझे यान के बाहर जाने का इशारा किया।

उड़न तश्तरी का दरवाजा बन्द हुआ और फिर वह तेज गति से लौट गई। मेरी नींद खुल गई। डर की बात तो छोड़िए, परन्तु मन में यह विचार अब भी बार-बार कौंधता है कि क्या उस दूसरे लोक के निवासियों का कथन सही नही था? जो अत्याचार और अनाचार अपनी श्रेष्ठता के बूते पर हम पशुओं पर करते हैं, क्या उसी के आधार पर वे निवासी पृथ्वी पर मनुष्यों के माँस की खेती करना ठीक नहीं मानेंगे? वे मनुष्यों से तकनीकी दृष्टि से ज्यादा समर्थ हैं। हमारे पास हमारे इस अत्याचारी बर्ताव के लिये क्या दलील है? उन्नत टेक्नोलॉजी के

कारण असंभव चीजें भी संभव हो रही हैं। मनुष्य के माँस की खेती भले ही कोरी परिकल्पना के क्षेत्र में हो, परन्तु मेरे चिन्तन में उस स्वप्न का गहना प्रभाव पड़ा है।

-Advisor, Society for Scientific & Ethical Living(Prakrit Bharati Academy)
13A, Guru Nanak Path, Malvieya Nagar, Jaipur-302017

प्रश्न

१. लेखक डरकर क्यों नहीं भागा?

२. क्या उन्नत तकनीकें मनुष्य का भला कर सकती हैं?

३. अमेरिका में भोजन के लिए कितने प्राणियों का हनन होता है ?

४. मानवता का अभिप्राय समझाइये?

५. अर्थ बताइये- मानवीय मूल्य, सह-अस्तित्व, निरीह, आफतों का पहाड़

६. विलोम शब्द बताइये- सीमित, लघुकाय, कुविचार, शक्तिहीन।

बाल-स्तम्भ [मई-२००८] का परिणाम

जिनवाणी के मई-२००८ के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'सदुपयोग-दुरूपयोग' कहानी के प्रश्नों के उत्तर ४३ बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, उनमें से प्रतियोगिता के विजेता इस प्रकार हैं। पूर्णांक २० में से दिये गये हैं।

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-२५०/-	नेहा जैन- जोधपुर	२०
द्वितीय पुरस्कार-२००/-	दर्शना जैन- जोधपुर	१९.५
तृतीय पुरस्कार- १५०/-	रोचित शर्मा-जोधपुर	१९.२५
सान्त्वना पुरस्कार- १००/-	कमलेशकुमार जैन-पादरु	१९
	वैभव मेहता-जोधपुर	१८.५
	कानन जैन-जोधपुर	१८.५
	दीक्षा छोरिया-मालेगाँव	१८.५
	यश जैन-अलीगढ	१८.५

संवाद

जून २००८ के जिनवाणी अंक में पूछे गये प्रश्न के उत्तर हमें अभी तक प्राप्त हो रहे हैं। श्रेष्ठ उत्तरों का प्रकाशन आगामी अंक में किया जायेगा।

९. प्रश्न- "मैं सदा सत्य बोलने के नियम को लेना चाहता हूँ। किन्तु उससे पहले सत्य के व्यापक स्वरूप को व्यवहार के क्षेत्र में समझना चाहता हूँ। अतः सत्य क्या है इसकी विस्तृत व्याख्या करें।" -चिन्तन (काल्पनिक नाम)

उद्‌गार

अष्टम पट्टधर के १७ वर्षीय आचार्यकाल में ५० दीक्षाएँ

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि ज म.सा.

ज्येष्ठ कृष्णा पंचमी, रविवार २५ मई, २००८ को आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का १८वाँ आचार्य पदारोहण दिवस तप-ध्यान, व्रत-प्रत्याख्यान के साथ बालकेश्वर में प्रमोदजन्य उपस्थिति में सामायिक-साधना के साथ मनाया गया। इस अवसर पर तत्त्व चिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी ने गूढ प्रभावी शैली में जो उद्‌गार व्यक्त किए, उन्हें श्री जगदीश जी जैन ने निम्न प्रकार से लिपिबद्ध किया है-

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष श्री दौलतसिंह जी कोठारी को लाल भवन, जयपुर में एक सभा को सम्बोधित करने के लिए आग्रह किया तो श्री कोठारी साहब ने संक्षिप्त वाक्य में अपनी बात प्रस्तुत की- " हमने जो जान लिया है, समझ लिया है, उससे हमें अपना जीवन बनाना है" इतना कहकर वे बैठ गये। कोठारी साहब ने बहुत ही कम शब्दों में सारगर्भित बात कह दी। आज अहंकृति विचित्र है। लेने वाला कोई, देने वाला कोई, करने वाले फिर भी नाहक कर्मबन्ध कर रहे हैं। प्रवचन के लिये जाते समय देखा- बालकेश्वर में ५०० के लगभग निःसहायों-गरीबों को सहायता स्वरूप कुछ दान देने की परम्परा का कार्यक्रम चल रहा है। एक भाई द्वारा कहे शब्द सुनाई पड़े- पंक्ति में खड़े कई भाई/बहिन ऐसे हैं, जो गरीब नहीं लग रहे हैं कहकर नाहक कर्मबंध कर लिया। सन्त अन्न आदि वितरण करने दान देने की अनुमोदना तो नहीं कर सकता, लेकिन अन्तराय डालने वालों को कर्मबन्ध करने वालों को रोक सकता है। गरीब की क्या परिभाषा है? किसे गरीब माना जाय, इस पर श्री डी.आर.मेहता सा. की सोच है जो अक्षरशः सही है-" जिसने लिखकर दे दिया कि मैं गरीब हूँ, इससे बढ़कर गरीबी का ओर क्या प्रमाण चाहिये।" पूज्य आचार्यप्रवर(श्री हीराचन्द्र जी म.सा.) कहा करते हैं- भीख मांगने वाला- भीख मांगने नहीं, शिक्षा देने आता है, वह कहता है-

मेरे पास सब कुछ था, मैंने कभी दिया नहीं, इस कारण से इस जन्म में मेरी यह दशा बनी है–यदि आप भी इस जन्म में होते हुए, नहीं दोगे तो अगले जन्म में आपकी दशा भी मेरी जैसी होगी।

मूल प्रसंग पर आते हैं– रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. धर्मसभा में पट्ट पर विराजमान हैं, आज आपका १८ वाँ आचार्य पदारोहण दिवस है। आपका आचार्यत्व काल देदीप्यमान है। वि.स. २०२० कार्तिक शुक्ला षष्ठी को दीक्षा हुई, गुरु से ज्ञान दान प्राप्त हुआ, पण्डित श्री शशिकान्त जी ने भी अध्ययन में सहयोग दिया, कुछ ही वर्षों में आगमों का तलस्पर्शी ज्ञान प्राप्त कर संस्कृत–प्राकृत–न्याय–दर्शन में अच्छी उपलब्धि हुई। आचार, विचार, व्यवहार से प्रभावित हो सुयोग्य शिष्य को गुरुदेव ने आचार्य पद के योग्य मनोनीत किया। आपने २८ चातुर्मासों में से २७ चातुर्मास पूज्य गुरुदेव के साथ किये। मनोनीत आचार्य पद की घोषणा निमाज में २२ अप्रेल १९९१ को गुणानुवाद सभा में हुई, विधिवत् आठवें पट्टधर के रूप में चादर महोत्सव आज के दिन १७ वर्ष पूर्व चतुर्विध संघ की उपस्थिति में जोधपुर में ज्येष्ठ कृष्णा पंचमी को हुआ। आपके १७ वर्षीय आचार्य काल में अब तक ५० दीक्षाएँ आपके श्रीमुख से एवं आज्ञा से दी जा चुकी हैं। सर्वप्रथम २१ फरवरी, १९९४ को सवाईमाधोपुर में ७ मुमुक्षु आत्माओं की दीक्षा, मई ९४ में जोधपुर में १ दीक्षा, जनवरी ९८ में थांवला में २ दीक्षा, मई ९८ में अजमेर में ७ दीक्षा, जनवरी ९९ जोधपुर में १ दीक्षा, सितम्बर ९९ नागौर में १ दीक्षा, अक्टूबर २००० जलगांव में ४ दीक्षा, दिसम्बर २००० जयपुर में १ दीक्षा, दिसम्बर २००० जोधपुर में भी ४ दीक्षा, फरवरी २००२ पीपाड़ शहर में ४ दीक्षा, अप्रेल २००२ घोटी में १ दीक्षा, फरवरी २००३ सूरत में १ दीक्षा, फरवरी २००३ में पूना में भी ४ दीक्षा, फरवरी २००४ शिमोगा में १ दीक्षा, मई २००६ जोधपुर में २ दीक्षा, दिसम्बर २००६ पीपाड़ में २ दीक्षा, जनवरी २००७ शिमोगा में १ दीक्षा, अप्रेल २००७ रायचूर में १ दीक्षा, बेंगलोर में अगस्त २००७ में एक बहिन ने दीक्षा ली साथ ही संलेखना संथारा का वरण कर लिया। अभी ७ मई २००८ को ऋतुम्भरा कॉलेज, जुहू के परिसर में ४ दीक्षाएँ सम्पन्न हुई हैं। कुल ५० दीक्षाओं का रेखाचित्र आपके समक्ष है। मुमुक्षु आत्माएँ दीक्षा प्रसंग का विवरण सुनकर जागृत हो सकती हैं, आप भी संयम–मार्ग की ओर प्रवृत्त हों, इन्हीं भावों के साथ।

<u>कृति की २ प्रतियाँ अपेक्षित हैं</u>

नूतन साहित्य

डॉ. धर्मचन्द जैन

शाकाहार क्यों? - राजेश सुराना, ***प्रकाशक***- स्टेप (STEP) फाउण्डेशन, ए-७, अवागढ़ हाउस, एम.जी.रोड़, आगरा-२८२००२ ***दूरभाष***-०५६२-२५२०१२९, ***पृष्ठ*** १३६ ***मूल्य*** १०० रुपए, अप्रेल २००८

शाकाहार के समर्थन में यद्यपि विपुल साहित्य प्रकाशित है, तथापि श्री राजेश सुराना ने मांसाहार एवं शाकाहार के तथ्यात्मक पहलुओं को प्रामाणिकता के साथ प्रस्तुत कर वैज्ञानिक दृष्टि से शाकाहार का महत्त्व स्थापित किया है। आहार के चयन में उन्होंने चार तत्त्वों को महत्त्व दिया है- पौष्टिकता, सुलभता, सुपाच्यता और सात्त्विकता। इन चार तत्त्वों का विचार करने पर मांसाहार तो वर्जनीय सिद्ध होता ही है, किन्तु शाकाहार में भी गरिष्ठ एव तामसिक आहार के त्याग की प्रेरणा मिलती है। अपने पूज्य पिताश्री श्रीचन्द जी सुराना, 'सरस' को समर्पित इस पुस्तक में सन्दर्भ सहित २८ अध्यायों, चित्र एवं सारणियों का भी प्रयोग किया गया है।

Elements of Jaina Geography(The Jambūdvipasaṃgrahaṇī of Haribhadra suri)- *Frank van Den Bossche,* ***Publisher-*** *Motilal Banarasidass, 41 U.A. Bungalow Road, Jawahar Nagar, Delhi-110007, 8 Mahalaxmi Chamber, 22 Bhulabhai Desai Road, Mumbai-400026,* ***Pages*** *327,* ***Price*** *Rs. 495, Edition 2007*

Jambūdvipasaṃgrahaṇī of Haribhadra suri is a concise text on Jain Geography and cosmography, It consists of 30 gāthās and it is also named as Kṣetrasaṃgrahaṇi, Laghusaṃgrahaṇi. Jambūdvi-pasaṃgrahaṇī etc. There are some Jaina Agamas like Jambudvi-paprajňapti, Candraprajňapti, sūryaprajňapti, Jivājivābhigama, prajňāpanā and some Digambar texts like Tiloyapaṇṇatti, on Geography and Cosmography, but this Jambudvipa Saṃghahani has a distinct place in the Jaina literature due to its concise presentation and the lucid commentary of Prabhānanda on it.

The commentary has enhanced the importance of the text.

Frank van Den Bossche, Ghent university, Belgium has critically edited and translated the text with the commentary of Prabhānanda Suri. The book has explanatory footnotes, figures and appendices. It contains the original text in mahārāṣtri prakrit and commentary in Sanskrit in the devanāgari Script. The book is a good contribution to the world of English readers of Jaina Geography and Cosmography.

जीवन है अनमोल- डॉ. चंचलमल चोरडिया, ***प्रकाशक***- कल्याणमल चंचलमल चोरडिया ट्रस्ट, चोरडिया भवन, जालोरी गेट के बाहर, जोधपुर-३४२००३(राज.) ***दूरभाष***- ०२९१-२६२१४५४, मो.०९४१४१३४६०६ ***पृष्ठ*** ५६ ***मूल्य*** ११ रुपए, जून २००८

जीवन मूल्यों के प्रति आस्था, संसार की अनित्यता एवं अशरणता, आध्यात्मिक जागृति एवं मृत्यु को महोत्सव में परिणत करने वाले ८६ भजनों का अनुपम संग्रह सबके लिए उपयोगी है।

संथारा

डॉ. सुरभि भण्डारी

- मूढ़ों की मूढ़ता जब अपने चरम पर पहुँचती है, तब सही-गलत का भेद मिट जाता है, ऐसे अज्ञानियों को संथारे में भी 'आत्महत्या' का सा भाव नजर आता है।
- क्षमा करना प्रभो! आप ऐसे मंदबुद्धि लोगों को, जिन्हें कृष्ण व कंस में अन्तर करना नहीं आता, जिन्हें स्वर्ण भी पीतल ही दृष्टिगत होता है।
- कहना चाहती हूँ मैं उन दीनबुद्धि लोगों से यही कि मृत्यु का आध्यात्मिक उत्सव है 'संथारा', मरण सुधार की उत्तम प्रक्रिया है 'संथारा', संयम तप का वरण है 'संथारा', जीवन से पलायन कदापि नहीं वरन् जैन दर्शन की शालीन परम्परा है 'संथारा', आत्मघात की संथारे से कोई कैसे कर सकता है किंचित् तुलना?
- आत्मघाती क्षणिक आवेश के वशीभूत हो करता जीवन से पलायन, जबकि संथारा है- आध्यात्मिक मृत्यु का सचेतन संयमित आलिंगन।
- आत्महनन है कुल को कलंकित करना, जबकि वंश को गरिमामय कर देता है संथारा।

-सी ५१३, द्वितीय फ्लोर, सेक्टर १९, नोयडा

आओ स्वाध्याय करें

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद्

द्वारा प्रायोजित त्रैमासिक प्रतियोगिता (१८)

(युवाश्रेणि के लिए अलग से १३ पुरस्कार)

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् के माध्यम से 'आओ स्वाध्याय करें' त्रैमासिक प्रतियोगिता-परीक्षा (१८) का आयोजन 'जिनवाणी' के अप्रेल-मई-जून २००८ के अंकों के आधार पर किया जा रहा है। इसमें कुल ५० प्रश्न पूछे गए हैं, जिनके उत्तर **श्री गौतम जैन (पचाला वाले), उपाध्यक्ष-अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद्, १९२ बी, मीटर गेज रेलवे कॉलोनी, बजरिया-३२२००१, सवाईमाधोपुर, फोनं. ९४६०४४१३५१** के पते पर १५ अगस्त २००८ तक मिल जाने चाहिए। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को क्रमशः १००१ रुपये, ५०१ रुपये एवं २५१ रुपये के पुरस्कार से पुरस्कृत किया जाएगा। १०० रुपये के १० प्रोत्साहन पुरस्कार भी दिए जायेंगे। ये सभी पुरस्कार १५ से ४५ वर्ष के युवा श्रेणि के उत्तरदाताओं को भी अलग से दिए जायेंगे। इस प्रकार पुरस्कारों की संख्या २६ हो गई है। युवाश्रेणि हेतु प्रत्येक प्रतियोगी अपने नाम एवं पते के साथ उम्र का भी उल्लेख करे। जो प्रतियोगी अपने प्राप्तांक शीघ्र जानना चाहते हों, वे प्रविष्टि के साथ जवाबी पोस्टकार्ड भेजकर परिणाम जान सकते हैं। सभी उत्तरदाताओं से निवेदन है कि वे उत्तर भेजते समय केवल प्रश्न क्रमांक व उत्तर ही भेजें। प्रश्न/पृष्ठ संख्या लिखने की कोई आवश्यकता नहीं है। -सम्पादक

(क) मुझे पहचानो-

०१. राग का दाग नहीं, द्वेष का लवलेश नहीं।

०२. मैं छाया की भाँति मनुष्य के पीछे लगा ही रहता हूँ।

०३. मैं बिना उपयोग नहीं होता।

०४. मैं आशीर्वादों के मोतियों को एकत्र करने का नाम हूँ।

०५. मेरे बिना क्रिया नहीं हो सकती।

०६. मेरी साधना करोगे तो मन, वचन, काया, अदण्ड बन जायेंगे।

०७. मुझमें आओ, दोनों लड़ो और तबाह हो जाओ।

०८. मैं स्वयं का चिकित्सक हूँ।

०९. मैं पल में पागल बना देता हूँ।

१०. कितना ही लुटाऊँ पर मेरा खजाना खाली नहीं होता।

(ख) एक शब्द में उत्तर दीजिए-

११. गुणों का आकर होता है।

१२. मानव की वह प्रजाति जो कभी ब्यूटी पार्लर नहीं जाती।

१३.ठेट जाने का गेट

१४.आरामतलबीपना छोड़, आतापना लेने से क्या कम होता है?

१५.वर्तमान में आतंकवाद को समता के रथ पर ला सकने वाला महान् रथ ?

१६.श्रमण की दिनचर्या को क्या कहा जाता है?

१७.उपदेश सम्यक् दे सदा, महिमा बढ़ाते धर्म की ।

१८.जिनों के लिए अनुकूल है ।

१९.धोवन पानी को साधु की प्यास बताया तो श्रावक के लिए क्या बतलाया?

२०.राजप्रश्नीय सूत्र कौनसे अंग का उपांग है?

(ग) रिक्त स्थान भरिए-

२१. ....का संचालन भी तो, कोई सरल नहीं ।

२२.जीवन क्षण भंगुरता में................का शाश्वत रूप हूँ ।

२३.संसार के ....सुखों को त्यागने में श्रेय साधक समुत्सुक रहते हैं ।

२४.अक्षर.................होते हैं, उनमें स्वयं में कोई शक्ति नहीं होती ।

२५................प्रतिक्रमण ही साधना का सौन्दर्य है ।

२६.राजमार्गों पर पदयात्रियों को........चलने का नियम अपनाना चाहिए ।

२७.रमणीक वस्तु को स्वयं बिना परवशता के छोड़ना................है ।

२८.मेहन्दी लगाकर, गीत करवाकर मासखमण करना...............है ।

२९................पुत्र मूल पूँजी में कमी नहीं करता ।

३०.भगवान् महावीर जैसे गुणी पुरुषों की प्रशंसा से प्रभावित हो जाना सकडाल..............का गुण है ।

(ङ) अंकों में उत्तर दीजिए

३१.सवैया स्तवन त्रय में कितनी चारित्रात्माओं का नामोल्लेख है ?

३२.पाँच में से कितने ज्ञान परमाणु को प्रत्यक्ष जान सकते हैं?

३३.इस वर्ष चातुर्मास अवधि कितने दिवस की रहेगी?

३४.राजू का प्रमाण बताने वाले लोहे का एक गोला कितने मण को होता है?

३५.साधना के क्षेत्र में कितने दोष अतीव भयंकर माने गये हैं?

३६.जघन्य प्रदेशी स्कन्ध में कितने परमाणु होते हैं?

३७.अभवी जीव उत्कृष्ट आयु कितने सागरोपम की प्राप्त कर सकता है ?

३८.नमस्कार के पाँच पदों का उल्लेख कितने आगमों में हुआ है?

३९.विश्व में आज लगभग कितनी भाषाएँ हैं?

४०.गार्डी साहब प्रतिदिन कितने लाख रुपयों का दान करते हैं?

(ङ) हाँ/ना में उत्तर दीजिये।

४१.सम्यक् देव एवं गुरु का बोध कराने के कारण पंच नमस्कार मंत्र है।

४२.नरक गति में सम्यक्त्व की प्राप्ति हो सकती है।

४३.यदि हम 'ही' के स्थान पर 'भी' का प्रयोग करते हैं तो असत्य के कटघरे में खड़े हैं।

४४.वे मेरे नहीं हैं और मैं भी उनका नहीं हूँ।

४५.दीक्षा लक्ष्य नहीं अपितु साधन है।

४६.धर्म के साथ पुण्य की नियमा है।

४७.मेरा सो जावे नहीं और जावे सो मेरा नहीं।

४८.नाम की स्थिति शरीर एवं आयुष्य से भी अधिक होती है।

४९.अकाल मृत्यु अनपवर्तनीय आयु कहलाती है।

५०.शीर्ष प्रहेलिका उत्कृष्ट संख्यात होती है।

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा आयोजित
'आओ स्वाध्याय करें' त्रैमासिक प्रतियोगिता (१७) का परिणाम

जिनवाणी के अप्रेल, २००८ अंक में आयोजित त्रैमासिक प्रतियोगिता (१७) में २८५ प्रतियोगियों ने भाग लिया। यह प्रतियोगिता जिनवाणी के जनवरी से मार्च २००८ के अंकों पर आधारित थी। इस प्रतियोगिता की पुरस्कार राशि का सौजन्य सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के कार्याध्यक्ष एवं तत्त्वज्ञ वरिष्ठ स्वाध्यायी श्रीमान नवरतनमल जी भंसाली-बैंगलोर ने किया है। सामान्य श्रेणी एवं युवा श्रेणी के सभी पुरस्कार ड्रा द्वारा निकाले गये हैं। परिणाम इस प्रकार हैं-

सामान्य श्रेणी

प्रथम पुरस्कार- १००१/-रुपये	कमला सेठिया-मसूदा	(५०)
द्वितीय पुरस्कार- ५०१/-रुपये	हेमराज सुराणा-जयपुर	(५०)
तृतीय पुरस्कार- २५१/-रुपये	नैनचन्द बाफना-जोधपुर	(४९)

सान्त्वना पुरस्कार- १००/-रुपये प्रत्येक

विनीता जैन-सवाईमाधोपुर	(४९)	नौरतनमल चोरडिया-अजमेर	(४९)
पुष्पा गाँधी-जोधपुर	(४९)	मंजुश्री सुराणा-जोधपुर	(४९)
अश्विनी जैन-जालना	(४९)	अपना अजय रांका-जलगाँव	(४९)
सुशीला रांका-जलगांव	(४९)	हीरा रमेश कर्नावट-अहमदनगर	(४९)
सुशीला रूणवाल-पूना	(४९)	शोभा सागरमल कोठारी-धूले	(४८)

युवा श्रेणी

प्रथम पुरस्कार– १००१/– रुपये	प्रज्ञा कुम्भट-ब्यावर	(५०)
द्वितीय पुरस्कार– ५०१/– रुपये	प्रीति जैन-भरतपुर	(४९)
तृतीय पुरस्कार– २५१/– रुपये	शुभेश बोरा-चालीसगाँव	(४९)

सान्त्वना पुरस्कार– १००/– रुपये प्रत्येक

शैली कुम्भट-जोधपुर	(४९)	अरूणा शैलेष रांका-नागपुर	(४९)
चंचल गोलेछा-जयपुर	(४९)	योगिता कर्नावट-अहमदनगर	(४९)
शिल्पा गांधी-जोधपुर	(४८)	अशोक जैन-सूरत	(४८)
पूजा चण्डालिया-हैदराबाद	(४८)	दीपा ए. कोठारी-अहमदनगर	(४८)
दिव्या एस. जैन-धूले	(४८)	अनिता दुग्गड़-धूले	(४८)

४८ अंक प्राप्त करने वाले अन्य प्रतियोगी:– मधु सिंघवी-गाजियाबाद, इन्दरचंद गांधी-जोधपुर, सुनीता मेहता-जोधपुर, इचरज देवी-जयपुर, बाबूलाल कटारिया-हैदराबाद, सरला कांकरिया-जलगांव, मयूरी एस. जैन-धूले, सतीश जैन-धुले, सरोज रुणवाल-धुले, कंचन लोढ़ा-नासिक, सरोज खाबिया-मैसूर, नीता संजय मेहता-मालेगांव, शीला लुणावत-खेतिया, लता बरड़िया-बोदवड़, राजुल कोठारी-धुले, दर्शिका टाटिया-जलगांव, योगिता खींवसरा-मुकटी, ज्योति तातेड़-धुले, श्वेता वेदमुथा-नासिक, लता आचलिया-धुले, उषा बरड़िया-धुले, रश्मि झांबड़-औरंगाबाद, पुष्पा ताथेड़-धुले, यश जैन-धुले, सुनंदा लोढ़ा-धुले, प्रमिला पोखरणा-धुले, मगंला शिंगी-शिवनगर, विमला बाई खींवसरा-धुले, लेखराज जैन(सेठिया)-मसूदा, प्रीति तिलोक जैन-बजरिया, विकास जैन-बजरिया, प्रियंका जैन-सवाईमाधोपुर, अल्फा सुराणा-जोधपुर, खुशबू जैन-जोधपुर, दिलीप नागौरी-बम्बोरा, अभिनंदन कोठारी-अहमदनगर, अंतिमा डोसी-ब्यावर, पूजा जैन-धुले, कोमल ओसवाल-धुले, मनीला जैन-सूरत, पायल राजेन्द्र कटारिया-अहमदनगर,

४७ अंक प्राप्त करने वाले अन्य प्रतियोगी :–मंजुला छाजेड़-समदड़ी, कमला सिंघवी-जयपुर, सरोज नाहर-दिल्ली, रेणु बोहरा-दिल्ली, सौ. विमला बरड़िया-बोदवड़, रमनलाल छाजेड़-धुले, छगनचंद जैन-खोह, आशा ओस्तवाल-पीपाड़, चैनराज संचेती-मसूदा, हंसराज मोहनोत-जयपुर, प्रियदर्शना बोहरा-जयपुर, सुशीला हीरावत-जयपुर, किरण कुंभट-जोधपुर, नथमल कोठारी-बालोद, बाबूलाल रतनचंद जैन-पारोला, विमला स्वरूप भंडारी-भंडारा, बसंती भटेवरा-धुले, लीला बाई कोठारी-अहमदनगर, शिखा तातेड़-भोपाल, प्रीति मोदी-नीमच, श्रुति जैन-पीपाड़, बबीता जैन-सवाईमाधोपुर, विजय छाजेड़-समदड़ी, धीरज जैन-बरवाड़ा, प्रवीण जैन-बजरिया, धनकंवर जैन-बजरिया, वर्षा बाफणा-जोधपुर, ममता राखेछा-बुलडाणा, अनिल जैन-कोटा, सुमित डागा-जयपुर, मनोज जैन-जयपुर, पवन जैन-सवाईमाधोपुर, नीरा भंडारी-ब्यावर, शीतल बंब-लासूर, नेहा जैन-मदनगंज,

४६ अंक प्राप्त करने वाले अन्य प्रतियोगी :–प्रसन्न गांग-मुम्बई, सरला संजय बोरा-लासूर, कंचन बाई बंब-लासूर, विजया जैन-जोधपुर, नवरतन खींवसरा-जोधपुर, सुरेश खींवसरा-जोधपुर, नरेन्द्र लुकंड़-कोटा, पुष्पा हस्तीमल गोलेछा-ब्यावर, केसर गांग-जोधपुर, ज्योति कोटेचा-बोदवड़, नीलम जैन-अजमेर, गौरव जैन-कोटा, कल्पना धारुड़-गुड़गांव, शारदा म. मूथा-लासुर, शशीकला लुणावत-नासिक, इन्द्रा सालेचा-जोधपुर, ललिता जैन-जोधपुर, पुष्पा कांकरिया-पाली, मंजुला जैन-भायंदर, मंजू जैन-जयपुर, मधु जैन-ब्यावर, राजेश गांग-जोधपुर, मोनिका जैन-सवाईमाधोपुर, जयमाला जैन-सवाईमाधोपुर, नितेश जैन-सवाईमाधोपुर, हिमांशु जैन-सवाईमाधोपुर, जम्बूकुमार जैन-जयपुर, अंकुश जैन-खेरली, प्राची जैन-खेरली, अक्षिता धर्मचंद जैन-जोधपुर, राजुल जैन-गंगापुर, उषा जैन-कोटा, पल्लवी जैन-बजरिया, कविता जैन-जोधपुर, हर्षल जैन-शहादा, मीनाक्षी जैन-भंडारा, विकास सालेचा-जोधपुर, दिव्या सालेचा-जोधपुर, प्रतीक्षा सालेचा-जोधपुर, मंयक सालेचा-जोधपुर, अर्पित लुणावत-विजयनगर, नीलू जैन-लुधियाना, अनीता जैन-बछामदी, मनोज जैन-बांरा, सुनील जैन-मैसूर, संगीता खाबिया-मैसूर,

४५ अंक प्राप्त करने वाले अन्य प्रतियोगी :–शांतिलाल महात्मा-चितौड़गढ़, चुकी देवी दरड़ा-जोधपुर, मीना चौरड़िया-चैन्नई, विमला बोहरा-जयपुर, कीर्तिका जैन-ब्यावर, कुसुम फोफलिया-जयपुर, निर्मला गादिया-आगरा, मोहनलाल लुंकड़-भोपालगढ़, चंद्रकला कांकरिया-पीपाड़, पिस्ता गोलेछा-जयपुर, सुनीता नवलखा-कोटा, शांता

कुमारी जैन-रतलाम, रोहिता जैन-उज्जैन, पारस कंवर भंडारी-चैन्नई, सुधा जैन-पूना, राजेन्द्र लुंकड़-भोपालगढ़, शांता लुंकड़-भोपालगढ़, दीपिका लुंकड़-भोपालगढ़, ममता लुंकड़-भोपालगढ़, नीता सिंघवी-जोधपुर, अरुणा जैन-जोधपुर, शोभा कवाड़-जोधपुर, सुषमा आर मुथा-लासूर, नवकार लुणावत-पांचलासिद्धा, पुष्पा लुणावत-पांचला सिद्धा, माला जैन-बड़वानी, देवेन्द्र मूथा-सतारा, पूजा जैन-गंगापुर, गौरव जैन-जयपुर, विनोद जैन-जयपुर, सीमा जैन-सवाईमाधोपुर, गणपत मोहनोत-जोधपुर, निशा लुंकड़-कोटा, विनित जैन-बजरिया, राहुल जैन-सवाईमाधोपुर, अमित जैन-हा.बो. सवाईमाधोपुर, सुनीता कोटडिया-शहादा, पूनमचन्द राणुलाल जैन-शहादा, मनीष जैन-आचीणा, संजना दरड़ा-गोटन, सनीता जैन-आचीणा, दीप्ति जैन-कोटा, अनिल जैन-मैसूर कु. नम्रता महेन्द्र जैन-चिपलून, रंजना जैन-बरनाला।

सही उत्तर

उपर्युक्त त्रैमासिक प्रतियोगिता (१७) के प्रश्नों के सही उत्तर जिनवाणी अंक एवं उसके पृष्ठ के साथ यहाँ दिए जा रहे हैं –

उत्तर	माह/पृष्ठ संख्या	उत्तर	माह/पृष्ठ संख्या
१. समुद्र	जनवरी/५७	२. वैराग्य	फरवरी/५५
३. सोच	मार्च/६३	४. वीतराग भगवान्	जनवरी/४५
५.समय	फरवरी/७४	६. मीरा	मार्च/१८
७.तप	जनवरी/१२	८. सामायिक	मार्च/६१
९. असंतोष	फरवरी/४०	१०.पुण्य	फरवरी/४४
११.ज्ञान	फरवरी/४३	१२.देरासर	जनवरी/१६
१३.तीर्थंकरों	मार्च/५५	१४.ऊनोदरी	फरवरी/१३
१५.भय	जनवरी/४४	१६.जिनवाणी	मार्च/२
१७. चौपाल	जनवरी/६१	१८. कल	फरवरी/४०
१९. परिग्रह	मार्च/५९	२०. भगवती सूत्र	मार्च/३९
२१.जिनवाणी	जनवरी/६९	२२. परिवार	जनवरी/७
२३. राजनीति	मार्च/६५	२४. मृत्यु	फरवरी/४६
२५. निकृतिमत्ता	मार्च/४१	२६. रेन बसेरा	जनवरी/६०
२७. हैवानों	फरवरी/६८	२८. व्यावहारिक	फरवरी/६३
२९. वीतराग	मार्च/४४	३०. केंकड़ा	जनवरी/२१
३१. ५	फरवरी/१४	३२. १६	जनवरी/१७
३३.७	मार्च/२४	३४. ४	फरवरी/५
३५. १०	जनवरी/४९	३६. ४६	मार्च/७
३७. ३	जनवरी/४४	३८. ७२	फरवरी/१२
३९. ९	मार्च/८५	४०. ८४	मार्च/१४
४१. ना	जनवरी/५५	४२. ना	फरवरी/३०
४३. ना	मार्च/५०	४४. हाँ	जनवरी/६८
४५. ना	फरवरी/६७	४६.हाँ	मार्च/३०
४७. ना	जनवरी/१९	४८. ना	फरवरी/८
४९. ना	मार्च/१७	५०. हाँ	फरवरी/४४

रत्नसंघ के सन्त-सतियों के चातुर्मास

(विक्रम संवत् २०६५, ईस्वी सन् २००८)

(१) कांदिवली (ईस्ट), मुम्बई(महाराष्ट्र)

卐 **परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा.**

卐 महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा.

卐 सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनि जी म.सा.

卐 तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.

卐 श्रद्धेय श्री योगेशमुनि जी म.सा.

卐 श्रद्धेय श्री मनीषमुनि जी म.सा.

卐 श्रद्धेय श्री बलभद्रमुनि जी म.सा.

卐 श्रद्धेय श्री देवेन्द्रमुनि जी म.सा.

卐 नवदीक्षित श्रद्धेय श्री मोहन मुनिजी म.सा आदि ठाणा ९

चातुर्मास स्थल- 'ए' विंग, कल्पतरु गार्डन, अशोक नगर, क्रॉस रोड नं. ३, अशोक चक्रवर्ती मार्ग, कांदिवली ईस्ट, मुम्बई-४००१०१ (महा.)

सम्पर्क सूत्र-१. चातुर्मास कार्यालय : 'सी' विंग, कल्पतरु गार्डन, अशोक नगर, क्रॉस रोड नं. ३, अशोक चक्रवर्ती मार्ग, कांदिवली ईस्ट, मुम्बई, फोन-०२२-३२१७०११७

२. श्री पारसचन्द जी हीरावत,१३०१-पंचरत्ना बिल्डिंग,ऑपेरा हाऊस, मुम्बई- ४००००४, फोनः०२२-२३६३०३२०/२३६३७३२०, ९८२१०१३५३०/९८२०६३१३६६

३. श्री रतनराज जी भण्डारी, ए-२०३, पंचशील हाइट्स, महावीर नगर, कांदिवली (पश्चिम) मुम्बई-४०००६७, फोन : ०२२-२८१८११०५, २८६००३१३/ ९३२२६४११७२

४. श्री रायचन्द जी हीरावत, फोन नं. ०२२-४०१८५०००,२३६३०२२०, ९८२१३५३७३४

आवागमन के साधन-कांदिवली (ईस्ट) स्थित कल्पतरु गार्डन कांदिवली लोकल स्टेशन से १.५ कि.मी., बोरीवली स्टेशन से ४ कि.मी., दादर स्टेशन से २० किलोमीटर दूर है। कल्पतरु गार्डन बस स्टेण्ड के पास स्थित है।

(२) सिवाना (जिला-बाड़मेर) राज.

卐 **परमश्रद्धेय उपाध्याय पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा.**

卐 मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनि जी म.सा.

卐 श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनि जी म.सा.

卐 श्रद्धेय श्री लोकचन्द्रमुनि जी म.सा. ठाणा ४

चातुर्मास स्थल- जैन स्थानक, महावीर मार्ग, सिवाना-३४४०४४, जिला-बाड़मेर(राज.)

सम्पर्क सूत्र- १.श्री मांगीलाल जी चौपड़ा, मु.पो. सिवाना-३४४०४४, जिला-बाड़मेर (राज.) फोन- ०२९०१-२३००८३

२. श्री पारसमल जी बागरेचा, मु.पो. सिवाना-३४४०४४, जिला-बाड़मेर (राज.) मो. ०९९५००३२०४६

३. श्री दीपचन्द जी मेहता, मु.पो. सिवाना-३४४०४४, जिला-बाड़मेर (राज.) फोन- ०२९०१-२३१२५७, मो. ०९९५००३२०४७

आवागमन के साधन- बाड़मेर जिलान्तर्गत सिवाना जोधपुर से ११०, बालोतरा से ३५, समदड़ी जंक्शन से ३० एवं फालना से १२५ किलोमीटर दूरी पर है। जोधपुर से सिवाना के लिए वाया कल्याणपुर-समदड़ी मार्ग पर प्राइवेट बसें नियत समयावधि पर उपलब्ध हैं। बालोतरा एवं समदड़ी से सिवाना के लिए बस-टेक्सी सुविधा उपलब्ध है। सूरत-अहमदाबाद से आने वाले श्रद्धालु फालना स्टेशन उतरकर सड़क मार्ग से सिवाना पहुँच सकते हैं।

(३) पावटा-जोधपुर (राज.)

- **साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा.**
- महासती श्री चन्द्रकला जी म.सा.
- महासती श्री शशिकला जी म.सा.
- महासती श्री विनीतप्रभा जी म.सा.
- महासती श्री निरंजना जी म.सा.
- महासती श्री सुव्रतप्रभा जी म.सा. ठाणा ६

चातुर्मास स्थल- श्री वर्द्धमान भवन, सी-५५, धर्मनारायण जी का हत्था, पावटा, जोधपुर(राज.)

सम्पर्क सूत्र- १. श्री नरपतराज जी चौपड़ा, सी-८२, धर्मनारायण जी का हत्था, पावटा, जोधपुर, फोन : ०२९१-२५४५२६५/२५४७४६२, ९४६०४२२१३४

२.श्री नवरतन जी डागा, सामायिक-स्वाध्याय भवन, घोड़ों का चौक, जोधपुर- ३४२००, फोन : ०२९१-२६३६७६३, ९८२८०३२२१५

३.श्री पारस जी गिड़िया, ए-३४, धर्मनारायण जी का हत्था, पावटा, जोधपुर, फोन : ०२९१-२५४७१०४,९४६०१०८०६०

आवागमन के साधन- जोधपुर राजस्थान का दूसरा सबसे बड़ा शहर है, जो रेल, सड़क एवं हवाई मार्ग से देशभर से जुड़ा हुआ है। जोधपुर रेलवे स्टेशन से ३ कि.मी., राइकाबाग़ रेलवे स्टेशन और राइकाबाग बस स्टेण्ड से १ कि.मी. दूर है।

(४) वैशाली नगर-अजमेर (राज.)

- 卐 **सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा.**
- 卐 महासती श्री मनोहरकंवर जी म.सा.
- 卐 महासती श्री कौशल्या जी म.सा.
- 卐 महासती श्री पुनीतप्रभा जी म.सा ठाणा ४

चातुर्मास स्थल- ''दादाबाड़ी'' पार्श्वनाथ कॉलोनी, वैशाली नगर, अजमेर-३०५००१

सम्पर्क सूत्र- १. श्री चाँदमल जी जैन, ३१५-केशवनगर, वैशाली नगर, अजमेर-३०५००१(राज.) फोनः ०१४५-२६४०८१४, ९८२९१८२०१८

२. श्री मेघराज जी जैन, एम/५१-ए, आना सागर लिंक रोड़, अजमेर-३०५००१(राज.)फोनः ०१४५-२४२१६३७,९९२८२३५३३३

आवागमन के साधन- जिला एवं संभाग मुख्यालय अजमेर राजस्थान के सभी जिला मुख्यालयों एवं समीपवर्ती प्रदेशों से सड़क मार्ग से जुड़ा शहर है। अजमेर रेलवे स्टेशन से वैशाली नगर ३ किलोमीटर एवं बस स्टेण्ड से करीब ३ किलोमीटर दूरी पर है।

(५) अमरावती (महाराष्ट्र)

- 卐 **व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा.**
- 卐 महासती श्री सुमनलता जी म.सा.
- 卐 महासती श्री विमलेशप्रभा जी म.सा.
- 卐 महासती श्री पुष्पलता जी म.सा.
- 卐 महासती श्री स्नेहलता जी म.सा.
- 卐 महासती श्री मंजूलता जी म.सा.
- 卐 महासती श्री चैतन्यप्रभा जी म.सा.
- 卐 महासती श्री यशप्रभा जी म.सा.
- 卐 महासती श्री पद्मप्रभा जी म.सा.
- 卐 महासती श्री भक्तिप्रभा जी म.सा. ठाणा ७
- 卐 महासती श्री ज्योतिप्रभा जी म.सा.
- 卐 नवदीक्षिता महासती श्री दिव्यप्रभा जी म.सा. ठाणा १२

चातुर्मास स्थल- श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ(जैन स्थानक) समर्थ स्कूल के पास, बड़नेरा रोड़, अमरावती-४४४६०१(राज.)

सम्पर्क सूत्र- १. श्री प्रकाशचन्द जी कोठारी, सर्राफा बाजार, अमरावती-४४४६०१(महा.) फोन : ०७२१-५७२७०१/२६६३६१९/९४२२१ ५५९०८

२. श्री दिलीप जी संकलेचा, दादाबाड़ी के पास, बड़नेरा रोड़, अमरावती-४४४६०१ (महा.) फोन : ०७२१-२५७४९४१

३. श्री अमृतलाल जी मूथा 'चम्पक',राजा पेठ, बड़नेरा रोड़, अमरावती- ४४४६०१ (महा.)

आवागमन के साधन- जोधपुर, मुम्बई, अहमदाबाद, पूना, जलगाँव से सीधी रेल सेवा उपलब्ध है। पूना, जलगांव, इन्दौर आदि विभिन्न स्थानों से सीधी बस सेवा उपलब्ध है। बडनेरा स्टेशन पर उतरकर टेक्सी द्वारा ५-६ किमी. दूरी पर स्थानक स्थित है।

(६) मानसरोवर-जयपुर (राज.)

卐 **तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकंवर जी म.सा.**

卐 महासती श्री दर्शनलता जी म.सा.

卐 महासती श्री समता जी म.सा.

卐 महासती श्री उषा जी म.सा. ठाणा ४

चातुर्मास स्थल- महावीर भवन, सेक्टर-३, किरण पथ शॉपिंग सेन्टर, मध्यम मार्ग, मानसरोवर, जयपुर-३०२०२० (राज.)

सम्पर्क सूत्र- १. श्री नरेन्द्रजी जैन,४४/२०३, रजत पथ, मानसरोवर, जयपुर-३०२०२० फोन : ०१४१-२७८६८२०/५१०६४७१/०९८२९३००१३८

२. श्री उज्ज्वलकुमार जी धूपिया, ३८/३७०, रजत पथ, मानसरोवर, जयपुर-३०२०२०

आवागमन के साधन- प्रदेश की राजधानी जयपुर देश के सभी क्षेत्रों से रेल, सड़क एवं हवाई मार्ग से जुड़ा हुआ है। रेल्वे स्टेशन से मानसरोवर स्थानक १८ कि.मी. दूरी पर स्थित है। बस स्टेण्ड से भी स्थानक की दूरी १७ कि.मी है। दुर्गापुरा एवं गाँधीनगर स्टेशन नजदीक है।

(७) बेलगाँव(कर्नाटक)

卐 **विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा.**

卐 व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा.

卐 महासती श्री विनयप्रभा जी म.सा.

卐 महासती श्री सुयशप्रभा जी म.सा.

卐 महासती श्री प्रभावती जी म.सा.ठाणा ५

चातुर्मास स्थल- श्री वर्द्धमान स्थानक जैन श्रावक संघ, विश्वेसरैया नगर, समपीगे रोड़ के पास, बेलगाँव-५९०००१(कर्नाटक)

सम्पर्क सूत्र- १. श्री जबरचन्द जी जैन, ज्ञान इलेक्ट्रिक, बिच्छू बिल्डिंग, खड़े बाजार, बेलगाँव-५९०००१(कर्नाटक)फोन : ०९४४८०१८८७७

२. श्री राजेन्द्र जी कटारिया, 'पुष्कर' ३९५-सावरकर रोड़, तिलकवाड़ी, बेलगाँव-५९०००६

(कर्नाटक) फोन : ०८३१-२४२०३९९/२४६२४७७, २४६०४७७/ ०९४४८१२६५३५७

आवागमन के साधन- बेलगाँव कर्नाटक-महाराष्ट्र सीमा पर स्थित शहर है। बेलगाँव, बैंगलोर, मुम्बई मार्ग पर रेलवे स्टेशन है। जहाँ सभी गाड़ियों का ठहराव है। रेलवे स्टेशन से स्थानक ३ कि.मी. दूरी पर है। बैंगलोर से बेलगाँव हवाई सुविधा उपलब्ध है।

(८) हिण्डौन सिटी (जिला-करौली) राज.

卐 **विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा.**

卐 महासती श्री सुश्रीप्रभा जी म.सा.

卐 महासती श्री शारदा जी म.सा.

卐 महासती श्री लीलाकंवर जी म.सा.ठाणा ४

चातुर्मास स्थल- श्री सामायिक-स्वाध्याय भवन (जैनस्थानक), नई मण्डी के पीछे, जैन कॉलोनी,हिण्डौन सिटी-३२२२३०(जिला-करौली-राज.)

सम्पर्क सूत्र- १.श्री मूलचन्द जी जैन, ई-३१-३२,मोहन नगर, हिण्डौन सिटी-३२२२३० (जिला-करौली) फोनः ०७४६९-२३०९८२,२३०९७४,९४१३३ ६४९३७

२.श्री घासीलाल जी जैन, जैन कॉलोनी, नई मण्डी के पीछे, हिण्डौनसिटी-३२२२३०(जिला-करौली) फोनः ०७४६९-२३४९१५

३.श्री टीकमचन्द जी जैन, नया अस्पताल के पास, मोहननगर, हिण्डौनसिटी-३२२२३० (जिला-करौली) फोनः ०७४६९-२३१००९

आवागमन के साधन- सामायिक-स्वाध्याय भवन नई मण्डी के पीछे, जैन कॉलोनी में स्थित है। रेलवे स्टेशन और बस स्टेण्ड से स्थानक करीब २ किमी. दूरी पर स्थित है। पश्चिमी रेलवे लाइन दिल्ली-मुम्बई मार्ग पर हिण्डौन रेलवे स्टेशन है। जयपुर, भरतपुर, गंगापुर, आगरा, अलवर आदि स्थानों से घंटे-घंटे के अन्तराल पर बसें उपलब्ध होती हैं।

(९) मेड़तासिटी, जिला-नागौर (राज.)

卐 **व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा.**

卐 महासती श्री समर्पिता जी म.सा.

卐 महासती श्री परागप्रभा जी म.सा.

卐 महासती श्री वृद्धिप्रभा जी म.सा.

卐 महासती श्री सिद्धिप्रभा जी म.सा.ठाणा ५

चातुर्मास स्थल- स्वाध्याय भवन, श्रीमालों का मौहल्ला, मेड़तासिटी-३४१५१०(जिला-नागौर, राज.)

सम्पर्क सूत्र- १. श्री जबरचन्द जी चोरड़िया, मै. जीवराज जबरचन्द, मेड़ता सिटी-३४१५१० (जिला-नागौर,राज.) फोनः ०१५९०-२२०५७५/२२०१५५

२.श्री हस्तीमलजी डोसी, डोसी ब्रदर्स, डी-३, कृषि मण्डी, मेड़तासिटी-३४१५१० (जिला-नागौर, राज.)फोनः ०१५९०-२२०१८१/२२०१४४, ९४१३३ ६८९५७

आवागमन के साधन- समीपवर्ती रेलवे स्टेशन मेड़ता रोड़ से मेड़तासिटी के लिए रेल-बस समय-समय पर चलती रहती है। जोधपुर, नागौर, ब्यावर, अजमेर, जयपुर, बोरून्दा, पीपाड़सिटी, डेगाना, बीकानेर, सीकर एवं समीपवर्ती ग्राम-नगरों से मेड़तासिटी के लिए राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम एवं प्राइवेट बसें उपलब्ध हैं। बस स्टेण्ड से स्थानक पहुँचने के लिए टैक्सी व्यवस्था सुलभ है।

(१०) शास्त्री नगर-जोधपुर (राज.)

卐 **व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा.**

卐 महासती श्री मुदितप्रभा जी म.सा.

卐 महासती श्री देवांगना जी म.सा.

卐 महासती श्री अंजना जी म.सा. ठाणा ४

चातुर्मास स्थल- डी-१८, शास्त्रीनगर, जोधपुर-३४२००३(राज.)

सम्पर्क सूत्र- १. श्री शैलेष जी डोसी, जी-२६९, शास्त्रीनगर, जोधपुर-३४२००३ (राज.) फोन : ०२९१-२६४०११२/९४१४१००४३९

२.श्री अनिल जी बोहरा, जी-२१, शास्त्रीनगर, जोधपुर-३४२००३(राज.) फोन : ०२९१-२४३१८७९, ५१०८७९९/०९८२९०२१८७९, ०९४१४१३३८७९

आवागमन के साधन- रेलवे स्टेशन से शास्त्रीनगर ३ किलोमीटर दूरी पर है। बस स्टेण्ड से शास्त्रीनगर ५ किलोमीटर है।

(११) पाली मारवाड़ (राज.)

卐 **सेवाभावी महासती श्री विमलावती जी म.सा.**

卐 व्याख्यात्री महासती श्री शांतिप्रभा जी म.सा.

卐 महासती श्री रुचिता जी म.सा. ठाणा

卐 महासती श्री ऋद्धिप्रभा जी म.सा. ठाणा ४

चातुर्मास स्थल- सामायिक-स्वाध्याय भवन, सुराना मार्केट, पाली मारवाड़ (राज.), फोन नं. ०२९३२-२५००२१

सम्पर्क सूत्र- १.श्री ताराचन्द जी सिंघवी, ७ गांधी कटला, पाली मारवाड़-३०६४०१(राज.) फोन- ०२९३२-२२२००५(घर), २२१२७१(ऑफिस)

२. श्री लाभचन्द जी गुलेच्छा, गुन्देचियों का बास, पाली मारवाड़-३०६४०१ फोन : ०२९३२ २२०७४२/ ०९३५२०२०७४२

आवागमन के साधन- पाली जिला मुख्यालय है, अतः राजस्थान के सभी जिलों से सड़क मार्ग से जुड़ाव है। जोधपुर-अहमदाबाद ट्रेक पर स्थित पाली रेलवे स्टेशन पर सभी गाड़ियों का ठहराव है। रेलवे स्टेशन से सामायिक-स्वाध्याय भवन पहुँचने के लिए बहुत से साधन हैं।

(१२) शिमोगा(कर्नाटक)

卐 **व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा.**

卐 महासती श्री भाग्यप्रभा जी म.सा.

卐 महासती श्री संगीता श्री जी म.सा. ठाणा ३

चातुर्मास स्थल- श्री वर्द्धमान स्था. जैन श्रावक संघ, शिमोगा-५७७२०२(कर्नाटक)

सम्पर्क सूत्र- १. श्री केवलचन्द जी मेहता, गौतम टेक्सटाइल, प्रथम माला, गाँधी बाजार, शिमोगा-५७७२०२(कर्नाटक)फोनः ०८१८२-२६०८५८/२७३५३८, ९८८०१ ३६२९२

२.श्री हरकचन्द जी विनायकिया, पवन ट्रेडिंग कम्पनी, नं. १० नागप्पा कॉम्पलेक्स, गाँधी बाजार,शिमोगा-५७७२०२ फोनः०८१८२-६५३१४५/२२११२३/९४४८६८३१७७

आवागमन के साधन- जोधपुर से हरिहर सीधी रेल सेवा है और हरिहर से बस सेवा उपलब्ध है।

(१३) बागलकोट (कर्नाटक)

卐 **व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलता जी म.सा.**

卐 महासती श्री प्रतिष्ठाप्रभा जी म.सा.

卐 महासती श्री निष्ठाप्रभा जी म.सा. ठाणा

卐 नवदीक्षिता महासती श्री भावना जी म.सा. ठाणा ४

चातुर्मास स्थल- श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, मारवाड़ी गली, बागलकोट-५८७१०२१(कर्नाटक)

सम्पर्क सूत्र- १. श्री वीरचन्दजी नथमलजी बाघमार, मारवाड़ी गली बागलकोट-५८७१०२१ फोन : ०८३५४-२२२५०९/९८४४६-४४९५१

२.श्री सुमतिलालजी बेताला, मै. सुमतिलाल भींवराज बेताला, कपड़ा मार्केट, बागलकोट-५८७१०२१ (कर्नाटक) फोन : ०८३५४-२३३०६०, ०९७४३०९३३१७

३.श्रीमती ललिताजी चोरड़िया, महावीर कोल्ड ड्रिंक्स एण्ड एस.टी.डी. सेन्टर,सरकारी गर्ल्स स्कूल के सामने, बागलकोट-५८७१०२१, फोन : ०९३४३२३८३०५/ ९३४२९४४००६

आवागमन के साधन- हुबली से १२० किमी., बीजापुर से ९० किमी, बेलगांव से १२० किमी. बागलकोट है। यहाँ से बागलकोट के लिए सीधी बस सेवाएँ उपलब्ध हैं। बीजापुर एवं सोलापुर से ट्रेन सुविधाएँ उपलब्ध हैं। हवाई सेवाएँ बेलगाँव, हुबली एवं बैंगलोर तक उपलब्ध हैं।

(१४) कांदिवली ईस्ट, मुम्बई (महाराष्ट्र)

- 卐 **व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा.**
- 卐 महासती श्री श्रुतिप्रभा जी म.सा.
- 卐 महासती श्री मतिप्रभा जी म.सा. ठाणा
- 卐 नवदीक्षिता महासती श्री भव्यप्रभा जी म.सा. ठाणा ४

चातुर्मास स्थल- 'सी' विंग, कल्पतरु गार्डन, अशोक चक्रवर्ती रोड़ के सामने, कांदिवली (इस्ट) मुम्बई - ४००१०१(महाराष्ट्र)

सम्पर्क सूत्र- क्र.सं. १ के अनुसार

आवागमन के साधन- क्र.सं. १ के अनुसार

(१५) बीजापुर(कर्नाटक)

- 卐 **महासती श्री इन्दिराप्रभा जी म.सा.**
- 卐 व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा.
- 卐 महासती श्री रक्षितप्रभा जी म.सा.
- 卐 महासती श्री उदितप्रभा जी म.सा.
- 卐 महासती श्री संयमप्रभा जी म.सा. ठाणा ५

चातुर्मास स्थल- जैन स्थानक, राम मन्दिर रोड़, बीजापुर-५८६१०१(कर्नाटक)

सम्पर्क सूत्र-१. श्री नन्दलाल जी रूणवाल, बालाजी मंदिर के पास, राम मन्दिर रोड़, बीजापुर-५८६१०१, फोन-०८२५२-२५०३२१, ५२११२५, मो. ०९४४९१ ६९२२७
२.श्री सुभाषचन्द जी बिरधीचन्द जी रूणवाल, प्लॉट नं. ६, ए.पी.एम.सी.यार्ड, बीजापुर-५८६१०१ (कर्नाटक) फोन नं. ०८२५२-२५४२६१

आवागमन के साधन- चेन्नई-मुम्बई रेल मार्ग पर चलने वाली गाड़ियाँ सोलापुर होकर निकलती है। सोलापुर से बीजापुर १०० किलोमीटर है। सोलापुर से बीजापुर के लिए ट्रेन भी है तथा रेलवे स्टेशन के बाहर व सेंट्रल बस स्टेण्ड से हर १५ मिनट के अन्तराल पर बस सेवाएँ उपलब्ध हैं। हैदराबाद एवं यशवन्तपुर (बैंगलोर) से बीजापुर रेल सेवा सुलभ है। जोधपुर एवं अजमेर से चलने वाली ट्रेनें मिरज होकर जाती है। मिरज से बीजापुर ११५ किलोमीटर है।

(१६) सिवाना (जिला-बाड़मेर) राज.

- 卐 व्याख्यात्री महासती श्री सुमतिप्रभा जी म.सा.
- 卐 महासती श्री विवेकप्रभा जी म.सा.
- 卐 महासती श्री जागृतिप्रभा जी म.सा. ठाणा ३

चातुर्मास स्थल-हुण्डीया जैन स्थानक, गोल चबूतरा, सिवाना, जिला-बाड़मेर(राज.)

सम्पर्क सूत्र- क्र.सं. २ के अनुसार

आवागमन के साधन- क्र.सं. २ के अनुसार

संघ द्वारा विभिन्न श्रेणियों में सम्मानार्थ प्रविष्टियाँ आमन्त्रित

आचार्य श्री हस्ती स्मृति सम्मान

जैन आगम, जैन दर्शन व जैन जीवन पद्धति के क्षेत्र में लेखन,शोध व जैन सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार में विशिष्ट योगदान।

युवा प्रतिभा शोध सम्मान (उम्र ४५ वर्ष अधिकतम)

प्रशासनिक चयन-राज्य स्तरीय व केन्द्रीय प्रशासनिक सेवा, न्यायाधिपति आदि विशिष्ट पदों पर चयन।

प्रोफेशनल विशिष्ट- डॉक्टर, इंजीनियर, चाटर्ड एकाउन्टेट, कम्पनी सचिव, एम.बी.ए. व अन्य प्रोफेशनल कोर्स में योग्यता सूची में स्थान पाने पर।

शोध- वैज्ञानिक खोज (अहिंसा व जैन सिद्धान्तों को पुष्ट करने वाली)।

संघ सेवा- चतुर्विध संघ सेवा, विशेष धार्मिक अध्ययन, धार्मिक लेखन आदि।

विशिष्ट स्वाध्यायी सम्मान(एक श्राविका,एक युवा,एक वरिष्ठ स्वाध्यायी)

कम से कम १० वर्ष स्वाध्यायी (पर्युषण पर्वाराधना) के रूप में सक्रिय सेवा। युवा स्वाध्यायी के लिए आवश्यक होने पर सेवा वर्ष में छूट दी जा सकती है।

गुणी अभिनन्दन

तपस्या- कम से कम पाँच वर्ष तक एकान्तर, दीर्घ तपस्या, दीर्घ संवर-साधना या अन्य विशिष्ट तप।

अन्य- सेवा, साधना, संघ उन्नयन में योगदान, चतुर्विध संघ-सेवा, विद्वान्।

नोट- कृपया अपनी प्रविष्टियाँ ३० जुलाई,२००८ तक भिजवावें।

-नवरतन डागा, महामंत्री

अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

सामायिक एवं स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक, इतिहास मार्तण्ड युगमनीषी आचार्य श्री १००८ श्री हस्तीमल जी म.सा. के जन्मशताब्दी वर्ष २०११ को उत्कृष्ट रूप से मनाने के लिए अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् ने पंचवर्षीय मेधावी छात्रवृत्ति योजना बनाई है। इस योजना में मेधावी छात्रों को लाभान्वित कर उनका व्यावहारिक एवं आध्यात्मिक उन्नयन करने का लक्ष्य है।

नियमावली– १. आवेदक को प्रतिदिन १ नवकार मंत्र की माला जपने का संकल्प करना होगा। २. आवेदक सदाचारी हो एवं उसे सप्त कुव्यसन का त्याग करना होगा। ३. आवेदक एक महीने में ५ सामायिक करने का संकल्प लें एवं तदनुसार सामायिक करें। ४. आमंत्रित छात्रों को अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा आयोजित शिविरों में भाग लेना अनिवार्य होगा। ५. आवेदक रत्नसंघ का सदस्य होना चाहिए।

आवेदक की योग्यता– आवेदक की आयु १२ वर्ष से अधिक एवं ३० वर्ष से कम होनी चाहिए।

छात्रवृत्ति योजना का प्रारूप

श्रेणि	प्राप्तांक प्रतिशत	कक्षा ८ से १० तक	कक्षा ११ से स्नातक स्तर तक	स्नातकोत्तर व्यावसायिक शिक्षा स्तर तक	प्रोफेशनल शुल्क ७५००० से ज्यादा होने पर
योजना प्रथम	व्यावहारिक शिक्षा एवं आ. शिक्षण में ६० प्रतिशत से उपर होने पर	५००/- प्रतिमाह	१०००/- प्रतिमाह	१५००/- प्रतिमाह	२५००/- प्रतिमाह
योजना द्वितीय	व्यावहारिक शिक्षा एवं आ. शिक्षण बोर्ड में ६० प्रतिशत से कम होने पर	२५०/- प्रतिमाह	५००/- प्रतिमाह	७५०/- प्रतिमाह	१२५०/- प्रतिमाह

विशेष– दोनों योजनाओं में छात्रवृत्ति ११ माह की प्रदान की जाएगी। छात्रवृत्ति संबंधी चयन समिति का निर्णय अंतिम एवं सर्वमान्य होगा।

आवेदन पत्र प्रेषित करने का स्थान– छात्र एवं छात्राएँ अपने आवेदन पत्र को चयन समिति के संयोजक श्री बुधमल जी बोहरा No.53, Erullappan Street, Sowcarpet, Chennai-79 Ph. 044 42728476 के पते पर प्रेषित करें।

आवेदन प्रेषित करने की तिथि– आवेदन पत्र प्रेषित करने की अंतिम तिथि ३१ अगस्त २००८ है एवं आवेदन पत्र की प्रतिलिपि मान्य होगी तथा वेबसाइट www.Jainyuvaratna.

org पर भी आवेदन पत्र डाउनलोड कर सकते हैं।

अर्थ सहयोग– उदारमना सुश्रावक वात्सल्य एवं सद्भावना से परिपूर्ण इस पुनीत योजना की सफलता के लिए मुक्त हस्त से अर्थ सहयोग प्रदान करवायें। (एक छात्र के लिए राशि १२०००/– अथवा इसके गुणक में)राशि Gajendra Nidhi Aacharya Hasti Scholar Ship Fund के नाम से चैक व ड्राफ्ट द्वारा (Donations are eligible for exemption under 80 (G) of Income tax ACT 1961 के तहत छूट लाभ) श्री बुधमल जी बोहरा–चेन्नई, .०४४–४२७२८४७६, श्री कुशल जी गोटेवाला–सवाईमाधोपुर, ०९४६०४–४१५७०, श्री प्रवीण जी कर्णावट–मुम्बई, ०९८२१०–५५५९३२, श्री महेन्द्र जी बाफना–जलगाँव, ०९४२२७–७३४११, श्री प्रमोद जी हीरावत–जयपुर, ०९३१४५–०७३०३, श्री महेन्द्र जी सुराणा–जोधपुर, ०९४१४९–२११६४, श्री राजकुमार जी गोलेछा–पाली, ०९८२९०–२०७४२ से सम्पर्क कर प्रेषित करावें।

सहयोग राशि भेजने का पता–Sh.Ashok Ji Kavad C/O. Prathvi Exchange, 33-Montieth Road, Egmore Chennai-8 Ph. 93810 41097

संयुक्त आमसभा एवं गुणी अभिनन्दन समारोह मुम्बई में

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं की वार्षिक साधारण सभा की बैठक एवं गुणी अभिनन्दन समारोह मुम्बई में रखा गया है।

साधारण बैठक– शनिवार, २० सितम्बर २००८

गुणी अभिनन्दन समारोह– रविवार, २१ सितम्बर २००८

संघ सदस्यों से विनम्र अनुरोध है कि आप संघहित में कोई सुझाव रखना चाहें तो अपने सुझाव लिखित में संघ के प्रधान कार्यालय को ३० जुलाई २००८ तक भेजने की कृपा करें। संघहित में उपयोगी सुझावों पर यथोचित विचार–विमर्श करने का हमारा प्रयास रहेगा। आमसभा में भाग लेने हेतु आप अपने आस–पास के क्षेत्रों के सभी सदस्यों को सूचित करावें। आपके मुम्बई पधारने की पूर्व सूचना निम्न सम्पर्क सूत्र पर करें–

१. अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर–३४२००१, फोन–०२९१–२६३६७६३, २६४१४४५, फैक्स–०२९१–२६३६७६३
२. श्री पारसचन्द जी हीरावत, फोन नं. ०२२–२३६३०३२०, २३६३७३२०, फैक्स–०२२–२३६३१९८२, मो. ०९८२१०१३५३०
३. श्री रतनराज जी भण्डारी, ए–२०३, पंचशील हाइट्स, महावीर नगर, कांदिवली (पश्चिम), मुम्बई–४०००६७, मो. ०९३२२६४११७२

समाचार-विविधा

विचरण-विहार एवं संभावित विहार दिशाएँ

१ जुलाई २००८ की स्थिति

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा ९ मुम्बई महानगर के कांदिवली क्षेत्र को लाभान्वित कर रहे हैं। आचार्यप्रवर के विचरण से ब्रीचकेण्डी, वरली, माटुंगा, बान्द्रा, खार, जूहू, अंधेरी, लोहखण्डवाला, गोरेगांव, मलाड़, उष्मानगर, एल.टी.रोड़, बोरीवली, मामलतदार, योगीनगर आदि क्षेत्रों में जन-जन की अंतश्चेतना जागृत हुई है। परिणामस्वरूप हर क्षेत्र में प्रवचन की प्रभावना, त्याग-तप एवं व्रत-प्रत्याख्यानों के प्रति आबाल-वृद्ध सबकी प्रमोदजन्य भावनाएँ दृष्टिगत हो रही हैं।

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. प्रतिकूलता में अनुकूलता सर्जित करने वाले महापुरुष हैं। मुम्बई में भारी वर्षा के कारण मौसम की प्रतिकूलता पिछले कुछ दिनों से अनवरत बनी हुई है किन्तु आचार्यप्रवर प्रभृति संत-सतीवृन्द रत्नत्रय की साधना में रत रहते हैं। आचार्यप्रवर के पावन सान्निध्य में आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना के अन्तर्गत उच्च शिक्षा वर्ग के छात्रों का पंचदिवसीय शिविर रखा गया जिसकी रिपोर्ट अलग से दी जा रही है, पर शिविर की प्रमुख उपलब्धि रही कि छात्रों ने वैवाहिक बन्धन में बंधने के पूर्व ब्रह्मचर्य पालन का आचार्यप्रवर के श्रीमुख से नियम अंगीकार किया।

आचार्यप्रवर निःस्पृही साधक हैं। आचार्यप्रवर जहाँ पधारते हैं वहाँ समीपवर्ती सुदूरवर्ती क्षेत्रों के श्रद्धालुओं के साथ मुम्बई महानगर के भक्त सेवा का अपूर्व लाभ ले रहे हैं। पीपाड़ मूल के निवासी श्री दुलीचन्द जी भण्डारी, श्री बसन्तराज जी गाँधी, श्री सम्पतराज जी गाँधी, श्री दलपत जी मूथा तथा श्री दिलीप जी दक सहित कई गुरुभक्त अपना व्यवसाय छोड़कर अहर्निश सेवा में सन्नद्ध हैं। विचरण-विहार में कच्छ गुजराती परिवारों की सेवाएं भी प्रमोदजन्य रही। बहिन बेलाजी चेड़ा ने अपने परिवारजनों के साथ दर्शन-वन्दन प्रवचन-श्रवण सहित शिविरार्थियों के उत्साहवर्धन में भी भावनापूर्वक लाभ लिया।

आचार्यप्रवर समीपवर्ती क्षेत्रों को पावन कर चातुर्मासार्थ कांदिवली(ईस्ट) पधारें, ऐसी संभावना है।

परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा., मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. आदि ठाणा ४ समदड़ी, जेठन्तरी, कनाना, जानियाना आदि मध्यान्तर के ग्राम-नगरों में ज्ञान गंगा प्रवाहित करते हुए १६ जून को बालोतरा पधारे। बालोतरा भक्ति भावना वाला क्षेत्र है, अतः उपाध्यायप्रवर प्रभृति संत-सतीवृन्द के सहयोग से सत्संग-सेवा और संत-समागम का लाभ लेने हेतु बालोतरा के आबाल-वृद्ध सभी श्रावक-श्राविकाओं की भावना प्रेरणाप्रद रही। समीपवर्ती क्षेत्रों के श्रद्धालुओं ने भी बालोतरा पहुँचकर दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण, सत्संग-सेवा और व्रत-नियम अंगीकृत करने में सजगता का परिचय दिया है एवं समीपवर्ती-सुदूरवर्ती क्षेत्रों के श्रद्धालु निरन्तर सेवा-लाभ ले रहें है। उपाध्यायप्रवर का चातुर्मास सिवाना है, अतः बालोतरा से सिवाना की ओर विहार की संभावना है। उपाध्यायप्रवर के विचरण-विहार में संघसेवी युवारत्न श्री धर्मेशकुमार जी चौपड़ा एवं उनके सहयोगी सेवा का लाभ ले रहे हैं। सिवाना के सुज्ञ श्रावक भी दर्शन-वन्दन एवं भक्ति-भावना से सेवा-लाभ में सजग एवं सक्रिय हैं। संघसेवी श्रावकरत्न श्री पारसमल जी बागरेचा, श्री दीपचन्द जी मेहता जो सिवाना चातुर्मास व्यवस्था में सन्नद्ध हैं, समय-समय पर उपाध्यायप्रवर प्रभृति संत-सतीवृन्द की सेवा का लाभ लेते आ रहे हैं।

साध्वीप्रमुखा-शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा., महासती श्री चन्द्रकला जी म.सा. आदि ठाणा ६ जोधपुर के लक्ष्मीनगर क्षेत्र में विराजित हैं। साध्वीप्रमुखा जी म.सा. ११ जून को घोड़ों के चौक स्थानक से विहार कर, सोजती गेट और हाईकोर्ट रोड़ होते हुए १३ जून को पावटा स्थित वर्द्धमान भवन पधारे। साध्वीप्रमुखा महासती मण्डल का १६ जून को लक्ष्मीनगर स्थित कांकरिया पौषधशाला भवन में पदार्पण हुआ। लक्ष्मीनगर क्षेत्र के समीपवर्ती शक्तिनगर, शिवशक्ति नगर, महावीर नगर, तिलकनगर, राजीव नगर, दाधीच नगर, और महामन्दिर आदि क्षेत्रों के श्रद्धालु महासती मण्डल के प्रवचनों से लाभान्वित हो रहे हैं।

सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. व्याख्यात्री महासती श्री मनोहरकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ४ भैंरुदा विराजमान हैं। किशनगढ़ से

रूपनगर,परबतर, राबड़ीवास, जावला, आदि-आदि क्षेत्रों में जिनवाणी का पान करवाकर महासती मण्डल चातुर्मासर्थ वैशाली नगर-अजमेर की ओर अग्र विहार रत है।

- **व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा., महासत्ती श्री सुमनलता जी म.सा. आदि ठाणा ७-** विर्दभ क्षेत्र में धर्मप्रभावना करते हुए अमरावती चातुर्मास हेतु विहार कर रहे हैं। विदर्भ में गुरु हस्ती के सामायिक-स्वाध्याय एवं गुरु हीरा के व्यसन त्याग सन्देश को गाँव-गाँव और नगर-नगर में प्रचारित करते हुए महासती मण्डल का विहार चल रहा है। सेवाभावी महासती श्री विमलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ५ का विचरण भी अमरावती के समीप चल रहा है। महासती मण्डल ठाणा १२ का चातुर्मास अमरावती घोषित हुआ है।

- **तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. महासती श्री दर्शनलता जी म.सा.आदि ठाणा ४-** किशनगढ़-दूदू क्षेत्रों को पावन कर प्रदेश की राजधानी गुलाबी नगरी-जयपुर सुख-शांति पूर्वक पधार गये हैं। तत्त्वचिंतिका महासती जी म.सा. के मुखारविन्द से श्री सुरेन्दकुमार जी टांक एवं श्री गुलाबचंद जी खोह वाले ने शीलव्रत के खंद किये। महासती मण्डल का चातुर्मास मानसरोवर-जयपुर स्वीकृत हुआ है। मानसरोवर एशिया की सबसे बड़ी कॉलोनी है और वहाँ पहली बार महासती मण्डल चातुर्मास स्वीकृत हुआ है।

- **विदुषी महासती श्री सुशीला कंवर जी म.सा.,व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ५-** का चातुर्मास बेलगाँव स्वीकृत हुआ है। महासती मण्डल बेलगाँव के समीप पहुँच गया है, जिनके यथासमय चातुर्मासार्थ प्रवेश की संभावना है।

- **विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा.,महासती श्री सुश्रीप्रभा जी म.सा आदि ठाणा** ४ महुआ विराजमान हैं, जिनके हिण्डौन चातुर्मासार्थ अग्र विहार की संभावना है।

- **व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर म.सा.,महासती श्री समर्पिता जी म.सा. आदि ठाणा** ५ हरसोलाव-गोटन के आसपास विहार चल रहा है जिनके यथा समय मेड़तासिटी चातुर्मासार्थ पधारने की संभावना है।

- **व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा., महासती श्री मुदितप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ४** का दुन्दाड़ा से जोधपुर की ओर विहार चल रहा है।

महासती मण्डल का चातुर्मास शास्त्रीनगर, जोधपुर है।

- **सेवाभावी महासती श्री विमलावती जी म.सा., महासती श्री शांतिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ४** दुन्दाड़ा से चातुर्मासार्थ पाली की ओर विहार कर रहे हैं।
- **व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा., महासती श्री भाग्यप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ३** हावेरी से चातुर्मासार्थ शिमोगा की ओर बढ़ रहे हैं।
- **व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलता जी म.सा., महासती श्री प्रतिष्ठाप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ४** का आगवाड़ा क्षेत्र से बागलकोट की ओर विहार चल रहा है। महासती मण्डल का चातुर्मास बागलकोट घोषित हुआ है।
- **व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा., महासती श्री श्रुतिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ४** का विहार मुम्बई के उपनगरों में चल रहा है। महासती मण्डल का चातुर्मास कांदिवली (ईस्ट) घोषित हुआ है।
- **महासती श्री इन्दिराप्रभा जी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ५** का विहार बागलकोट से बीजापुर सुख-शांतिपूर्वक चल रहा है। महासती मण्डल यथा समय चातुर्मासार्थ बीजापुर पधारें, ऐसी संभावना है।
- **व्याख्यात्री महासती श्री सुमतिप्रभा जी म.सा., महासती श्री विवेकप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ३** का दुन्दाड़ा से चातुर्मासार्थ सिवाना की ओर विहार चल रहा है।

शिविर-समाचार

छात्रवृत्ति योजना के अन्तर्गत उच्च शिक्षा वर्ग के छात्रों का शिविर

मुम्बई- उष्मानगर, एवरसाइन रोड़, मलाड (पश्चिम) मुम्बई में आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना से लाभान्वित उच्च शिक्षा वर्ग के छात्रों का पंचदिवसीय शिविर १५ से १९ जून, २००८ तक आयोजित किया गया। जिसमें २७ छात्रों ने भाग लिया। शिविरार्थियों को परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री बलभद्र मुनि जी म.सा., व्याख्यानी महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. ने एवं शिक्षकों ने अपने उद्बोधन से आदर्श नीतिवान एवं पापप्रवृत्ति से रहित निर्व्यसनी जीवन जीने की

प्रभावी प्रेरणा प्रदान की।

शिविरार्थियों को संघ संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराज जी मुणोत ने सामायिक-प्रतिक्रमण की प्रेरणा तो की ही संघ के प्रति समर्पित रहने का आह्वान किया। शासन सेवा समिति के संयोजक श्री रतनलाल जी बाफना ने भी शिविरार्थियों को सद्सीख प्रदान की। श्री शिखरचन्द जी भण्डारी ने व्यक्तित्व विकास, श्री टीकमचन्द जी हीरावत ने सुखी जीवन कैसे जीएँ विषय पर सुन्दर विचार रखे। शिक्षकों ने २५ बोल, दशवैकालिक, प्रतिक्रमण, बारह व्रत का अध्ययन करवाया। युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री कुशल जी गोटेवाला, कार्याध्यक्ष श्री बुधमल जी बोहरा, स्वधर्मी वात्सल्य कार्यक्रम प्रभारी श्री राजेश जी कांकरिया ने साक्षात्कार के माध्यम से चयन प्रक्रिया पूरी की। प्रतियोगियों में सर्वश्रेष्ठ मेधावी छात्र के रूप में श्री दीपक चोरड़िया सुपुत्र श्री सोहनलाल जी चोरड़िया, रणसीगांव-जोधपुर का चयन किया गया।

शिविरार्थियों ने पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के मुखारविन्द से जब तक वैवाहिक बन्धन में नहीं बंधे तब तक ब्रह्मचर्य पालन का नियम अंगीकार किया। शिविर व्यवस्था को सुचारु बनाए रखने हेतु श्री पारसचन्द जी हीरावत युवक परिषद्, मुम्बई के अध्यक्ष श्री अजय जी हीरावत एवं उनके सभी सहयोगियों का सेवा-व्यवस्था में सहयोग अनुकरणीय रहा।

वीतराग ध्यान साधना शिविर सम्पन्न

जोधपुर- अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ और सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा संचालित अष्ट दिवसीय **'वीतराग ध्यान साधना शिविर'** जयपुर से समागत जैन दर्शन के तत्त्ववेत्ता श्री कन्हैयालालजी लोढ़ा एवं ध्यान साधक श्री संजय जी अग्रवाल के निर्देशन में १५ से २२ जून, २००८ तक शाही बाग, जोधपुर में आयोजित किया गया। इस शिविर में २७ साधकों ने प्रतिदिन आठ घंटे निरन्तर ध्यान करके अनित्यता का बोध जगाया और समत्व भाव को पुष्ट किया।

शिविर समापन कार्यक्रम में शिविर की रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए समाज सेविका और ध्यान साधिका श्रीमती सुशीला जी बोहरा ने बताया कि प्रातः ४.३० से लगाकर रात्रि ९.३० बजे तक व्यवस्थित, अनुशासित व समयबद्ध कार्यक्रम चला जिसमें दिल्ली, मुम्बई, जयपुर, लखनऊ और जोधपुर से आये हुए साधकों ने मौन रखते हुए ध्यान प्रक्रिया का पूर्ण निष्ठा एवं लगन से अभ्यास किया और अपने अन्तर में

रहे हुए दोषों को जानकर उनसे मुक्त होने का प्रयास किया। सलमान भाई, श्रीमती लाड़बाई हीरावत, श्रीमती रतन कर्णावट, श्रीमती पुष्पा जैन, श्री इन्द्रचन्द कर्णावट, श्री प्रेमचन्द जैन, श्री पारस गिड़िया, डॉ.श्वेता कोटड़िया, श्रीमती विमला लोढ़ा, श्रीमती अकलकंवर मोदी आदि साधकों ने अपनी साधना के अनूठे अनुभवों को अभिव्यक्त किया।

प्रमुख ध्यान-साधना शिक्षक एवं विद्वान् श्री कन्हैयालाल जी लोढ़ा ने वीतराग ध्यान साधना को आज के इस तनावयुक्त जीवन में प्रसन्नचित्त रहने के लिये आवश्यक बताया। उन्होंने कहा कि यह ध्यान प्रक्रिया शारीरिक शिथिलीकरण से संबंधित नहीं है, बल्कि जीवन की अनित्यता का बोध कराते हुए राग-द्वेष, विषय-विकार का उन्मूलन बनने की प्रक्रिया है। इससे स्वतः ही कई शारीरिक व मानसिक रोगों का निवारण हो जाता है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि चेन्नई निवासी श्री पी.एम. चोरड़िया ने ऐसे ध्यान शिविरों का संचालन सम्पूर्ण देश में करने का आग्रह किया। श्री जैन रत्न संघ के कार्याध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में शिविर की सफलता की बधाई के साथ श्री राजेन्द्र जी कुम्भट को शाही बाग का शान्त व प्राकृतिक स्थान निःशुल्क उपलब्ध कराने हेतु धन्यवाद ज्ञापित किया। उन्होंने कहा कि साधकों के अनुभवों को सुनने से ऐसा लगता है कि इस शिविर में उन्हें बहुत आनन्द आया। विशिष्ट अतिथि श्री राजेन्द्र जी कुम्भट ने भविष्य में ऐसे ध्यान शिविरों के लिये निःशुल्क स्थान उपलब्ध कराने का आश्वासन दिया।

महामंत्री श्री नवरतन सा डागा ने आये हुए अतिथियों का स्वागत किया। शिविर-संयोजिका श्रीमती शान्ता मोदी ने अन्त में धन्यवाद ज्ञापित किया। संचालन श्री धर्मचन्द जैन, रजिस्ट्रार, अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर ने किया।

-श्रीमती शान्ता मोदी, शिविर संयोजक

पंचदिवसीय स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

सवाईमाधोपुर- श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के तत्त्वावधान में २२ जून से २६ जून २००८ तक महावीर भवन, सवाईमाधोपुर में पोरवाल, पल्लीवाल एवं जयपुर के स्वाध्यायियों का क्षेत्रीय स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया, जिसमें सवाईमाधोपुर एवं उसके आसपास के क्षेत्रों के लगभग ६७ स्वाध्यायियों ने भाग लिया। शिविर में श्री फूलचन्द जी मेहता-उदयपुर, श्री पदमचन्द जी मुणोत-जयपुर, श्रीमती मोहनकौर जी जैन-जोधपुर, श्री त्रिलोकचन्द जी जैन-सवाईमाधोपुर,

श्री धर्मेन्द्र जी जैन-सवाईमाधोपुर, श्री प्रकाश जी सालेचा-जोधपुर, श्री त्रिलोक जी जैन-जयपुर ने प्रशिक्षण कार्य में तथा श्री कमलेश मेहता ने संचालन कार्य में अपना अमूल्य सहयोग प्रदान किया।

शिविरार्थियों की भोजन एवं आवास व्यवस्था सवाईमाधोपुर श्रीसंघ द्वारा की गई। सवाईमाधोपुर श्री संघ के पदाधिकारियों ने शिविर प्रारम्भ से लेकर शिविर समापन तक अपनी सक्रियता प्रदर्शित की। *- चंचलमल चोरड़िया, संयोजक*

श्राविका मण्डल का ज्ञानाभ्यास शिविर

जोधपुर- प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जोधपुर के तत्त्वावधान में घोड़ों के चौक स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन में २३ जून से २९ जून तक सप्त-दिवसीय ज्ञानाभ्यास शिविर आयोजित किया गया,जिसमें १९२ शिविरार्थियों ने अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड के पाठ्यक्रमानुसार कक्षा प्रथम से कक्षा नवम तक ज्ञानाभ्यास किया। अलग-अलग कक्षाओं में महिलाओं एवं छात्राओं ने नित्यप्रति १ से ४ बजे तक सुयोग्य शिक्षकों के मार्गदर्शन में ज्ञानाभ्यास किया। शिविर में जोधपुर शहर एवं उपनगरों की बहिनों ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर शिविर को सफल बनाया। शिविर में घोड़ों के चौक स्थानक विराजित महासतियाँ जी महाराज ने भी प्रश्नोत्तर के माध्यम से सरल भाषा में बहिनों को मार्गदर्शन देकर उन्हें त्याग-तप में आगे बढ़ने की प्रभावी प्रेरणा प्रदान की।

-सौ. शशि टाटीया

आवासीय शिविर सफलतापूर्वक सम्पन्न

भरतपुर- श्री जैन रत्न युवक परिषद्, भरतपुर के तत्त्वावधान में ८ जून से १४ जून तक आवासीय शिविर लगाया गया जिसमें पल्लीवाल क्षेत्र के १५० शिविरार्थियों ने श्री जैन रत्न महावीर भवन, भरतपुर में रहकर ज्ञानाभ्यास किया। शिविर में हिण्डौन, गंगापुर, खेरली, नदबई, पहरसर, डहरामोड़ क्षेत्रों से आए शिविरार्थियों ने तीन वर्गों में ज्ञानाभ्यास किया। प्रथम द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले सफल प्रतियोगियों को पुरस्कृत किया गया। विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा ४ ने भी शिविरार्थियों का मार्गदर्शन किया, ज्ञानाभ्यास करवाया और व्रत-प्रत्याख्यान अंगीकार करने की प्रभावी प्रेरणा प्रदान की। १४ जून को समापन समारोह में अपर मुख्य सत्र न्यायाधीश श्रीमती शोभा जी चौधरी मुख्य अतिथि के रूप में पधारीं। प्रो वी.के. जैन का सान्निध्य भी प्राप्त हुआ। प्रवचन सभा में करीब ३०० दर्शनार्थियों ने

उत्साहपूर्वक भाग लिया।

जयपुर में धार्मिक शिक्षण शिविर

प्रतिवर्ष की भांति श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जयपुर के तत्त्वावधान में बालक-बालिकाओं में धार्मिक संस्कार जागृत करने हेतु निम्नलिखित स्थानों पर शिविर आयोजित किए गये :-

१. एस.एस. जैन, सुबोध बालिका विद्यालय	१६ मई से १५ जून, २००८
२. महावीर जैन साधना भवन, महावीरनगर	२५ मई से १५ जून, २००८
३. प्राकृत भारती अकादमी, मालवीय नगर, जयपुर	२५ मई से १५ जून, २००८
४. श्री जैन रत्न स्वाध्याय भवन, नित्यानन्द नगर	२५ मई से १५ जून, २००८
५. तिलक नगर	०१ जून से १५ जून, २००८
६. आराधना भवन, श्यामनगर	२५ मई से १५ जून, २००८
७. ४११, अलंकार प्लाजा, विद्याधरनगर	०१ जून से १५ जून, २००८

-सुनील मोहनोत

अन्य शिविर

जोधपुर- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं श्री जैन रत्न युवक परिषद् के तत्त्वावधान में १८ मई से ८ जून तक नैतिक आध्यात्मिक शिक्षण शिविर जोधपुर शहर के घोड़ों के चौक, सिंहपोल, पावटा, लक्ष्मीनगर, नेहरु पार्क, प्रतापनगर, चौपासनी हाउसिंग बोर्ड एवं सरस्वती नगर क्षेत्रों में प्रातः ७.३० बजे से ९.३० बजे आयोजित हुए। शिविर में १०२४ बालक-बालिकाओं ने ज्ञानाभ्यास किया। दिनांक ८ जून को ओसवाल कम्यूनिटी सेंटर में प्रातः ७.१५ बजे शिविर का समापन रखा गया, जिसमें शिविरार्थियों के अलावा संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं के पदाधिकारियों तथा शिविरार्थियों के अभिभावकों ने भाग लिया। समापन-समारोह में वरिष्ठ स्वाध्यायी सुश्रावक एवं अहिंसक चिकित्सा पद्धति के पोषक श्री चंचलमल जी चोरड़िया तथा वरिष्ठ स्वाध्यायी एवं प्रबुद्ध चिन्तक श्री रंगरूपमल जी डागा ने शिविरार्थियों को जीवन में सद्गुण वृद्धि हेतु प्रभावी प्रेरणा प्रदान की। प्रत्येक कक्षा में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त शिविरार्थियों के उत्साहवर्धन हेतु पारितोषिक प्रदान किया गया। सभी शिविरार्थियों को प्रेरणा स्वरूप प्रोत्साहन पुरस्कार दिया गया।

मानसरोवर-जयपुर- ग्रीष्मावकाश के सदुपयोग के लक्ष्य से महावीर भवन, मानसरोवर, जयपुर में ८ जून से १७ जून तक धार्मिक शिविर में ९५ शिविरार्थियों ने सामायिक, प्रतिक्रमण के साथ व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त किया। *-सुशीला लोढ़ा*

बैंगलोर- अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं स्वाध्याय संघ चेन्नई के स्वाध्यायियों के दिशा-निर्देशन में विजयवाड़ा में पहली बार ग्रीष्मकालीन अष्टदिवसीय नैतिक सुसंस्कार एवं धार्मिक शिक्षण शिविर २५ मई से १ जून, २००८ तक आयोजित हुआ। शिविर में ८५ शिविरार्थियों ने ज्ञानाराधन-तपाराधन-धर्माराधन किया। "जैन धर्म परिचय" पुस्तक पर आधारित खुली किताब परीक्षा रखी गई। १३ शिविरार्थियों ने निर्दोष भिक्षुदया का भी आराधन किया। चेन्नई के स्वाध्यायियों के साथ विजयवाड़ा के स्वाध्यायियों ने अध्यापन कार्य करवाया।

-निर्मल कुमार कोठारी

हैदराबाद- श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ ग्रेटर हैदराबाद एवं आन्ध्रा जैन स्वाध्यायी संघ, हैदराबाद के संयुक्त तत्त्वावधान में पूनमचन्द गाँधी जैन स्थानक काचीगुड़ा में १७ से २५ मई तक धार्मिक शिक्षण शिविर आयोजित किया गया। शिविर में ३०० शिविरार्थियों ने ज्ञानार्जन किया। अंताक्षरी, भाषण, कविता, भजन और प्रश्न-मंच के विविध कार्यक्रमों से शिविर अधिक सफल रहा। *-अनिल कुमार जैन*

राष्ट्रपति द्वारा वितरित किए गए भगवान महावीर अवार्ड

भगवान् महावीर फाउण्डेशन, चेन्नई के ११ वें एवं १२ वें भगवान् महावीर पुरस्कार दिल्ली में महामहिम राष्ट्रपति प्रतिभा देवीसिंह पाटील ने अपने कर कमलों से प्रदान किए। अहिंसा एवं शाकाहार के क्षेत्र में ११वें व्यक्तिगत पुरस्कार से श्री भरत अमृतलाल कोठारी ग्राम राजपुरडेरा, जिला बनासकांठा (गुजरात) को, शिक्षा एवं स्वास्थ्य के क्षेत्र में डॉ. शिवकुमार सरीन, निदेशक, जी.बी.पंत हॉस्पिटल, नई दिल्ली को एवं समाज-सेवा के क्षेत्र में आचार्य डॉ. किशोर कुणाल, पटना को सम्मानित किया गया।

इसी प्रकार १२वें संस्थागत पुरस्कार अहिंसा एवं शाकाहार हेतु एक्शन फॉर प्रोटेक्शन ऑफ वाइल्ड एनिमल्स, उड़ीसा को शिक्षा एवं स्वास्थ्य सेवा हेतु महात्मा गांधी चिकित्सा विज्ञान संस्थान, सेवाग्राम महाराष्ट्र को तथा समाज एवं समुदाय सेवा हेतु अमर सेवा संगम, अईकुडी, तिरुने लवेली (तमिलनाडु) को प्रदान किये गये।

फाउण्डेशन के प्रबन्ध न्यासी श्री सुगालचन्दजी जैन ने महामहिम राष्ट्रपति का स्वागत किया। भगवान् महावीर फाउण्डेशन के चेयरमेन श्री रामनिवास जी मिर्धा ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

दिल्ली में जैन समाज को मिला धार्मिक अल्पसंख्यक का दर्जा

दिल्ली जैन महासंघ के सतत प्रयासों से दिल्ली सरकार ने दिल्ली के जैन समुदाय को धार्मिक अल्पसंख्यक समाज का दर्जा प्रदान किया है। महासंघ के अध्यक्ष श्री आनन्दप्रकाश जी जैन एवं महामंत्री श्री सुरेश जी जैन ने मुख्यमंत्री श्रीमती शीला दीक्षित का आभार ज्ञापित किया। धार्मिक अल्पसंख्यक का दर्जा मिलने पर धर्मस्थानों, तीर्थों, शिक्षण संस्थाओं और समाज की संस्थाओं के प्रबंध एवं संचालन में कुछ विशेष अधिकार प्राप्त हो सकेंगे। जैन शिक्षण संस्थाओं में बच्चों को धार्मिक शिक्षा देने में एवं प्राथमिकता से उन्हें प्रवेश देने की सुविधा भी प्राप्त हो जायेगी। किसी राज्य के जैन समाज को कोई जानकारी चाहिये तो वह दिल्ली महासंघ से सम्पर्क करें। फोन नं. ०११-२७३४३१७०, फैक्स २७३४३२७०

-सुरेशकुमार जैन, महामंत्री-९३१३१ ७६८२१

पंचगव्य पद्धति से ब्रेन ट्यूमर का उपचार

सेठ रसिकलाल माणिकचन्द धारीवाल पंचगव्य आधारित केंसर हॉस्पिटल, बलसाड़(गुजरात) में केंसर, ब्रेन ट्यूमर, किडनी रोग एवं सोरायसिस के रोगियों का निःशुल्क उपचार किया जाता है। *सम्पर्क सूत्र- कामधेनू जीवदया औषधि केन्द्र, रतलाम, फोन नं. ०७४१२-'२३४९५७*

श्री वीरचंद्र राघवजी गांधी स्कोलरशिप

अमरीका के शिकागो शहर में १८९३ में आयोजित हुई पहली विश्व धर्म परिषद् में जैन धर्म के प्रतिनिधि के रुप में उपस्थित रहकर भगवान् महावीर का पाश्चात्य देशों को पहली बार संदेश देने वाले श्री वीरचंद राघवजी गांधी की स्मृति में अमरीका स्थित **जैना** संस्था द्वारा जैन धर्म में उच्च अभ्यास करने वालों को वार्षिक छात्रवृत्ति दी जाती है। जैन धर्मदर्शन, साहित्य शिल्प, स्थापत्य, इतिहास, आगम, भाषा आदि में **M.A., M.Phill, Ph.D.** करने वाले विद्यार्थी, **www.jaina.org/VRG Committee** से एप्लीकेशन फार्म (अर्जीपत्रक) डाउनलोड करके, विषय का उल्लेख, तथा मान्यता प्राप्त संस्थाओं एवं विश्वविद्यालय के प्रमुख के हस्ताक्षर तथा स्टेम्प लगाकर ३१ जुलाई

२००८ से पहले इस पते पर भेजें ।- **श्री प्रवीण हिम्मतलाल संघवी**, अे-९, सरदार पटेल सोसायटी, नेहरु रोड, विलेपार्ले (पूर्व), मुंबई - ४०००५६, मोबाइल-९३२४२ ४२३२४ E-mail - phsanghavi@yahoo.com

संक्षिप्त समाचार

बैंगलोर- श्री कर्नाटक जैन स्वाध्याय संघ, स्वाध्याय युवक मण्डल तथा महिला मण्डल द्वारा संचालित युवा परिवार संस्कार विकास कार्यशाला ३० मई एवं १ जून, २००८ को कनकपुरा स्थित जैन इण्टरनेशनल रेजिडेंशियल स्कूल, बैंगलोर में सम्पन्न हुई। कार्यशाला में ६९ परिवारों ने भाग लिया। ६९ दम्पतियों एवं १०८ बालक-बालिकाओं सहित २४६ सदस्य कार्यशाला से लाभान्वित हुए। कार्यशाला में सुयोग्य विद्वान शिक्षकों द्वारा जैन धर्म एवं दर्शन के सिद्धान्तों की जानकारी करवाई गई। परिवार संस्कार विषयक प्रभावी कार्यक्रम आयोजित हुए। कार्यशाला के समापन पर जैन कॉलेज एवं जैन ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूट के चेयरमेन श्री चैनराज जी छाजेड़ ने एवं संघाध्यक्ष श्री चेतनप्रकाश जी डूंगरवाल, मंत्री श्री अशोक जी गादिया ने विचार रखे। युवा मंत्री श्री माणक जी लूंकड़ ने कार्यशाला की जानकारी प्रस्तुत की।

- शांतिलाल बोहरा, संयोजक

जयपुर- दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी द्वारा संचालित अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर के वर्ष - २००८ के स्वयंभू पुरस्कार के लिए अपभ्रंश से संबंधित विषय पर हिन्दी अथवा अंग्रेजी में रचित रचनाओं की चार प्रतियाँ ३० सितम्बर, २००८ तक आमन्त्रित हैं। इस पुरस्कार में २१००१/- की राशि एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जायेगा। ३१ दिसम्बर, २००५ से पूर्व प्रकाशित तथा पहले से पुरस्कृत कृतियाँ सम्मिलित नहीं की जायेंगी। नियमावली तथा आवेदन पत्र का प्रारूप प्राप्त करने के लिए अकादमी कार्यालय, दिगम्बर जैन नसियाँ भट्टारकजी, सवाई रामसिंह रोड़, जयपुर-४ से पत्र व्यवहार करें। *-डॉ. कमलचन्द सोगाणी, संयोजक*

बैंगलोर- लुणावत परिवार द्वारा संचालित लुणावत जैन स्थानक, लुणावत जैन भवन एवं लुणावत जैन डिस्पेन्सरी का शुभारंभ ९ जुलाई को बैंगलोर में सम्पन्न हुआ।

- छगनमल लुणावत

अजमेर- श्री जिनदत्तसूरि मण्डल दादावाड़ी पाल बीचला, अजमेर-३०५००७ अपनी स्थायी योजना वर्ष १९६० से स्वधर्मी जैन मेधावी छात्र/छात्राओं को उच्च

शिक्षार्थ छात्रवृत्ति प्रदान करता है। समाज में निराश्रित स्वधर्मी जैन बन्धुओं और बहिनों को भी सहयोग राशि प्रतिवर्ष दी जाती है। वर्ष २००८-२००९ के लिए ३०.८.०८ तक आवेदन आमन्त्रित हैं। *-महेन्द्र कुमार पारख, मानद मंत्री*

बधाई/चुनाव

श्री गुमानमल जी चोरडिया

श्री विमलचन्द जी डागा

जयपुर- श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ(रजि.),लाल भवन, जयपुर, के त्रिवार्षिक चुनाव २ जुलाई २००८ को सम्पन्न हुए। चुनाव में अग्रांकित महानुभाव निर्वाचित हुएः- **अध्यक्ष**- श्री गुमानमल जी चोरड़िया, **उपाध्याक्ष**- श्री विनयचन्द जी बम्ब, **मंत्री**- श्री विमलचन्द जी डागा, **संयुक्तमंत्री**- श्री सुरेशचन्द जी कोठारी, **कोषाध्यक्ष**- श्री अशोक कुमार जी सेठ। पदाधिकारियों के अलावा १० कार्यकारिणी सदस्य निर्विरोध चुने गये। *-सुरेशचन्द कोठारी*

अहमदाबाद- युवारत्न डॉ. मोहित पी. गाँधी सुपुत्र श्रीमती योगिता जी श्री पदमचन्द जी गाँधी (थांवला वाले) का हेल्थ मैनेजमेंट में एम.बी.ए. करने हेतु टाटा इंस्टिट्यूट ऑफ सोशियल साइन्स, मुम्बई में चयन हुआ है। डॉ. मोहित ने ऑल इंडिया में १४ वां स्थान प्राप्त किया है।

जोधपुर- मास्टर कृश सुपुत्र श्री विक्रान्त जी कर्नावट एवं सुपौत्र स्व. श्री रिखबराज जी कर्नावट मात्र 4½ वर्ष की आयु में NDTV Imagine के सिरियल "मैं तेरी परछाई हूँ" में काम कर रहा है। मास्टर कृश को बेस्ट न्यू चाइल्ड अवार्ड प्राप्त हुआ है।

सवाईमाधोपुर- कुमारी शमिता जैन सुपुत्री श्री ज्ञानचन्द जी जैन श्यामपुरा वाले ने

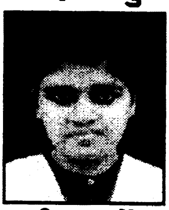

केन्द्रिय विद्यालय संगठन से कक्षा दसवीं की परीक्षा में ९७ प्रतिशत अंक अर्जित कर जोन में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। प्रतिभाशाली छात्रा का भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने शैक्षणिक भ्रमण के लिए थाईलेण्ड भेजने हेतु चयन किया है।

अलीगढ़(टोंक)- श्री वर्द्धमान श्रावक संघ, अलीगढ़ के चुनाव में श्री चन्द्रप्रकाश जी

जैन अध्यक्ष एवं श्री जसकरण जी जैन मंत्री चुने गये। दिनांक ११ मई को कार्यकारिणी सदस्यों को भी सर्व-सम्मति से मनोनीत किया गया।

ब्यावर- श्री स्थानकवासी जैन वीर संघ, ब्यावर के द्विवार्षिक सत्र २००८-२०१० के लिए अग्रांकित महानुभाव निर्विरोध निर्वाचित हुएः-**अध्यक्ष**-श्री फतेहलाल जी कावड़िया,**उपाध्यक्ष**- श्री मिलापचन्द जी बुरड़ एवं श्री शांतिलाल जी सुराना, **मंत्री**- श्री महेन्द्रकुमार जी गोलेच्छा, **सहमंत्री**-श्री महावीरचन्द जी भण्डारी, **कोषाध्यक्ष**- श्री नरेन्द्रसिंह जी मेड़तवाल,**सामान मंत्री** -श्री भागचन्द जी छाजेड़।

भोपालगढ़- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, भोपालगढ़ के २७ मई, २००८ को चुनावों में अग्रांकित महानुभाव सर्व सम्मति से निर्वाचित हुएः-**अध्यक्ष**-श्री शिभूलाल जी चोरड़िया, **उपाध्यक्ष**- श्री सोहनलाल जी बोथरा,**मंत्री**- श्री नेमीचन्द जी कर्नावट, **सहमंत्री**- श्री गौतमचन्द जी कांकरिया, **कोषाध्यक्ष**-श्री बी. गौतमचन्द जी चोरड़िया।

शिवमोगा- श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ शिवमोगा के चुनाव सम्पन्न हुए, तदनुसार श्री केवलचंद जी मेहता- **अध्यक्ष**, श्री मोहनकरण जी मेहता एवं श्री अशोक कुमार जी तलेसरा-**उपाध्यक्ष**, श्री हरकचन्द जी विनायकिया-**मंत्री**, श्री हंसराज जी कवाड़-**सहमंत्री**, श्री मोहनकुमार जी बोहरा-**कोषाध्यक्ष** एवं श्री मूलचन्द जी बोहरा-**सहकोषाध्यक्ष** चुने गये। कार्यकारिणी के आठ सदस्य भी निर्वाचित किए गये।

-हरकचद विनायकिया-मंत्री

श्रद्धाञ्जलि

जयपुर- संघसेवी श्राविकारत्न श्रीमती जतनदेवी जी कोठारी धर्मपत्नी स्व. श्री

सुमेरचन्द जी कोठारी का २४ जून,२००८ को स्वर्गवास हो गया। श्राविकारत्न के जीवन पर आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. प्रभृति संत-सतीवृन्द का विशेष प्रभाव रहा। श्राविकारत्न के सुपुत्र श्री जीतमल जी, शांतिलाल जी, सुमतिचन्द जी, सुनील जी, सुरेशजी धर्मनिष्ठ श्रावक हैं। श्री सुमतिचन्द जी कोठारी सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के उपाध्यक्ष सहित क़ई पदों को सुशोभित कर चुके हैं। संत-सतीवृन्द की सेवा में उनकी रुचि प्रेरणादायी है। श्री सुरेशचन्द जी कोठारी रत्नसंघ के क्षेत्रीय प्रधान का दायित्व निर्वहन करने के अनन्तर

वर्तमान में जयपुर संघ के सहमंत्री पद को सुशोभित कर रहे हैं। श्राविकारत्न की गुरु के प्रति निष्ठा, संघ के प्रति समर्पण और धर्म के प्रति लगाव अनूठा था।

जोधपुर- दृढ़धर्मी सेवाभावी सुश्राविका श्रीमती गुमानकंवर रतन बोहरा धर्मपत्नी

स्व.श्री आसूलालजी रतन बोहरा का १२ जून को संथारे के साथ स्वर्ग-गमन हो गया। वे रत्नसंघ की सुज्ञ श्राविका थीं। उनकी गुरुभक्ति, संघनिष्ठा और सेवा-धर्म की साधना में विशेष रुचि थी। सामायिक, प्रतिक्रमण, दया-संवर, उपवास-पौषध आदि धर्म साधना में सजग श्राविकारत्न ने मरण के पूर्व संथारा अंगीकार करने की भावना रखी तो परिवारजनों ने संथारे के प्रत्याख्यान करवाकर नमस्कार महामंत्र का जाप प्रारम्भ किया। आत्मचिन्तन में लीन श्राविकारत्न ने संथारा अंगीकार करने के पश्चात् करीब दो घंटे में नश्वर देह का परित्याग कर दिया। वे प्रतिदिन १० सामायिक, दोनों समय प्रतिक्रमण एवं स्वाध्याय करती थीं। संस्कारवती श्राविका के सुपुत्रों ने अन्तिम संस्कार पश्चात् शोकादि सांसारिक कार्यक्रम नहीं रखे। रतन बोहरा परिवार रत्नसंघ का समर्पित परिवार है।

सूरत- सिवाना मूल की धर्मनिष्ठ श्राविका श्रीमती मेथी बाई जी मेहता धर्मपत्नी

स्व.श्री गिरधारीलाल जी ढ़ेलड़िया मेहता का ७२ वर्ष की आयु में २ जून, २००८ को स्वर्गवास हो गया। वे तप साधिका थी। उन्होंने दो बार वर्षीतप की साधना की। आचार्यप्रवर पूज्य श्री देवेन्द्रमुनि जी म.सा. के सिवाना चातुर्मास में भक्ति-भावना से सेवा करने वाली श्राविका की मनोकामना थी कि इस वर्ष उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. प्रभृति संत-सतीवृन्द के चातुर्मास में साधना-आराधना में सक्रिय रहेगी, किन्तु नियति को यह मंजूर नहीं था। उन्होंने २५ अठाइयों के साथ पांच, आठ, दस पन्द्रह तक की कई तपश्चर्याएँ की। वे सरल स्वभावी श्राविका थीं। वे अपने पीछे भरापूरा संस्कारित परिवार छोड़कर गई हैं।

जोधपुर- दईकड़ा मूल के निवासी संघसेवी-संतसेवी श्रावकरत्न श्री दीपचन्द जी

कुम्भट का ७८ वर्ष की आयु में २५ जून,२००८ को स्वर्गवास हो गया। वे रत्नसंघ के समर्पित श्रावक थे। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द जी म.सा,परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. प्रभृति संत-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में

अग्रणी रहने वाले श्रावक का जीवन सरलता, सादगी, उदारता, मधुरता जैसे सद्गुणों से ओतप्रोत था। वे विगत कुछ अर्से से अस्वस्थ थे, किन्तु उनका स्मरण-भजन का अनवरत क्रम अन्त समय तक बना रहा। श्रावकरत्न की धर्मसहायिका श्रीमती किरणदेवीजी रत्नसंघीय साध्वीप्रमुखा महासती श्री लाडकंवर जी म.सा. की सांसारिक बहिन थी। उनके भ्राता श्री मांगीलाल जी कुम्भट संत सेवा में एवं धर्म-साधना में सक्रिय हैं वहीं उनके सुपुत्र श्री पन्नालाल जी, बादलचन्द जी, राजेन्द्र जी संघ सेवा में सन्नद्ध हैं।

सूरत- जोधपुर मूल की सुज्ञ श्राविका श्रीमती शशिजी गांग धर्मपत्नी सुश्रावक श्री

प्रवीण जी गांग पुत्रवधू दृढ़धर्मी श्रावकरत्न श्री नवरतनमल जी गांग का ८ जून २००८ को लघुवय में अकस्मात् दुर्घटना में असामयिक देहावसान हो गया। श्रीमती शशि के साथ उनकी १४ वर्षीय सुपुत्री सुश्री अमिता गांग के दुःखद निधन से गांग परिवार में माँ-बेटी की क्षति देखकर सबका दिल पसीज गया। गांग परिवार रत्नसंघ का समर्पित परिवार है। गुरु भक्ति, संघनिष्ठा और सेवा में सजग गांग परिवार के प्रमुख श्री नवरतनमल जी गांग गुरु हस्ती-गुरु मान के प्रति अटूट आस्थावान श्रावक हैं। श्री मक्खतूरमल जी गांग की निःस्वार्थ भाव से वर्षों से की जा रही समाज-सेवा अनुकरणीय तो है ही, अनुमोदनीय एवं अभिनन्दनीय भी है।

भुवनेश्वर- संघसेवी सुश्राविका श्रीमती विमलेशजी धर्मपत्नी सुश्रावक स्व० श्री

पानमल जी सुराना का ५ जून को आकस्मिक स्वर्ग-गमन हो गया। उनका जीवन सहज, सरल एवं सादगी से परिपूर्ण था। देव-गुरु-धर्म के प्रति आस्थावान श्राविकारत्न अपने पीछे भरापूरा संस्कारित परिवार छोड़ कर गई हैं।

बैंगलोर- यशवन्तपुरा निवासी दानवीर सुश्रावक श्री कांतिलाल जी जैन सुपुत्र स्व.श्री बंशीलाल जी धोका का ५१ वर्ष की अल्पायु में २४ जून २००८ को चंडीगढ़ में स्वर्गवास हो गया। वे धर्मनिष्ठ श्रावक थे। कंदमूल एवं रात्रि-भोजन त्यागी श्रावकरत्न ने बारह व्रत अंगीकार कर रखे थे। सामायिक,स्वाध्याय, ध्यान, मौन, चिंतन-मनन में समय व्यतीत करने वाले श्रावक ने ध्यान, योग एवं स्वाध्याय शिविरों में भाग लिया। श्रावक रत्न की दो बहिनें महासती श्री प्रगति श्री जी म.सा.एवं महासती

श्री प्रतिभा श्री जी म.सा. संयम-साधना में रत हैं। -*नरेश जैन-पटियाला*

उदयपुर- समाज सेवी सुश्रावक श्री चुन्नीलाल जी धर्मावत का ८७ वर्ष की आयु में १५

जून २००८ को समाधिभावों के साथ स्वर्गवास हो गया। वे अनेक धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं के पदाधिकारी थे। आचार्य देवेन्द्र श्रुत सेवा सम्मान से सम्मानित श्रावकरत्न अपने पीछे भरापूरा संस्कारित परिवार छोड़कर गये हैं। -*वीरेन्द डांगी*

इन्दौर- संघहितैषी सुश्रावक श्री पुखराज जी टाटिया का १३ जून,२००८ को ८१ वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। सरलता, मृदुता, उदारता, सहिष्णुता जैसे सद्गुणों से ओतप्रोत उनका जीवन प्रेरणादायी था। सुश्रावक के सांसारिक भाणेज श्री विनयमुनि जी म.सा. एवं सांसारिक भाणजी महासती श्री धीरजकंवर जी म.सा. शासन की प्रभावना कर रहे हैं। - *शांतिलाल बड़ेरा*

आलनपुर- श्रद्धानिष्ठ सुश्रावक श्री राधेश्याम जी जैन का ६८ वर्ष की आयु में २७ मई २००८ को स्वर्गवास हो गया। वे रत्नसंघ के सुज्ञ श्रावक थे। प्रतिदिन सामायिक,स्वाध्याय, जप,तप में रत रहने वाले श्रावकरत्न ने उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के मुखारविन्द से शीलव्रत के खंद किये थे। वे लम्बे समय तक आलनपुर संघ के अध्यक्ष रहे।

जोधपुर- रत्नसंघ के सुश्रावक श्री पदमचन्द जी, मदनचन्द जी, गौतमचन्द जी, शांतिचन्द जी कांकरिया के बहनोईसा सुश्रावक श्री किशोरकुमार जी मेहता का १ जुलाई,२००८ को स्वर्गवास हो गया। वे धर्मनिष्ठ श्रावक थे।

बालोतरा- संघसेवी सुश्रावक एवं रत्नसंघीय दीक्षा समिति के सह-संयोजक श्री मीठालाल जी 'मधुर' की बहिन सुश्राविका श्रीमती सुखीदेवी जी का ८ जून, २००८ को स्वर्गवास हो गया। वे धर्मनिष्ठ श्राविका थीं।

मलकापुर- धर्मनिष्ठ उदारमना सुश्रावक श्री सरदारमल जी संचेती का ६३ वर्ष की

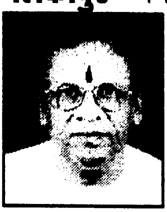

आयु में ९ जून, २००८ को अकस्मात् स्वर्गवास हो गया। वे सामाजिक,धार्मिक एवं व्यावसायिक संस्थाओं से सम्बन्धित रहे। सरल स्वभावी, मृदुभाषी, सेवाभावी सुश्रावक ने व्यापारी संघटना के ३५ वर्षों तक अध्यक्षीय दायित्व का निर्वहन किया। मरणोपरान्त नेत्रदान कर उन्होंने अनुकरणीय आदर्श उपस्थित किया।

दिल्ली- चाँदनी चौक के अग्रणी सुश्रावक श्री पन्नालाल जी नाहटा का १४ मई,

२००८ को आकस्मिक निधन हो गया। सुश्रावक के देहावसान के २१ दिन पूर्व उनकी धर्म सहायिका श्रीमती विमलादेवी जी नाहटा का स्वर्गवास हुआ था। संत-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति के साथ पशु-पक्षियों की दयाभाव से सहयोग करने वाले श्रावकरत्न ने ३० वर्ष पूर्व शीलव्रत का खंद कर लिया। प्रतिदिन पाँच सामायिक करने वाले श्रावकरत्न का जीवन प्रेरणादायी था। आपके सुपुत्र श्री विनयकुमार जी जैन बारादरी के महामंत्री एवं जैन कांन्फ्रेंस के कार्यकारिणी सदस्य हैं।

भीलवाड़ा- सुश्रावक श्री प्रवीण प्रकाश जी मेहता सुपुत्र श्री सौभाग्यमल जी मेहता का ६ जून, २००८ को रतलाम में असामयिक निधन हो गया। गुरु हस्ती-गुरु हीरा के प्रति आस्थावान श्रावकरत्न का व्यवहार मधुर था। रतलाम में उनकी अच्छी लोकप्रियता थी।

सुनाम(पंजाब)- सुश्रावक श्री दीपचन्द जी सुपुत्र श्री रलाराम जी का ८४ वर्ष की आयु में २२ घंटे के तिविहार संथारे के साथ ४ मई २००८ को स्वर्गवास हो गया। वे वर्षों से रात्रि चौविहार एवं जमीकंद त्यागी थे। विगत २८ वर्षों से बड़ी स्नान नहीं करने वाले श्रावकरत्न का जीवन प्रेरणादायी था।

-राजीव नाहर

बेटी

सजा नहीं सपना होती है बेटी,
गैरों के बीच अपनी होती है बेटी।
रंगों से सजाती है आगमन घरों के,
आंगन की अल्पना होती है बेटी।।

वेदना नहीं वरदान होती है बेटी,
आस्था और अरमान होती है बेटी।
वजूद उसका कभी मिट नहीं सकता,
भार नहीं जीवन का सार होती है बेटी।।

सुख की सुबह हो या गम की शाम,
बिन कहे हर पल साथ होती है बेटी।
जीवन की उलझी राहों के बीच,
एक सहज संवेदना होती है,बेटी।।

हक होता है पर हक माँगती नहीं,
हकीकत और हसरतों का इन्द्रधनुष होती है बेटी।
आँखों में रखकर पलकों से सजाती है जीवन,
सच पूछो तो कभी सीता कभी चन्दना होती है बेटी।।

-प्रेषक : श्री प्रवीण कुमार जैन, विराट् नगर, बजरिया, सवाईमाधोपुर

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

५००/- रुपये जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

११५०६ Shri Gulab Chand ji Pasariya, BANGALORE (Karnataka)
११५०८ Shri Prem Chand ji Singvi, AMBUR, Vellore (Tamilnadu)
११५१० श्री प्रवीणचन्द जी छाजेड़, श्री कंवर कॉलोनी, बड़वाह, खरगौन (मध्यप्रदेश)
११५११ जस्टिस श्री मनीष जी भंडारी, बापू नगर, जयपुर (राज.)
११५१२ श्री राजेन्द्र कुमार जी जैन, अजमेर रोड़, जयपुर (राज.)
११५१३ Shri Suresh Chand Ji, BANGALORE (Karnataka)
११५१४ Shri Ashok ji Golecha, Shiva ji nagar, MUMBAI (M.H.)
११५१५ श्री राजेश जी कोठारी, तिलकनगर, जयपुर (राज.)
११५१६ श्रीउगमराज जी भंसाली, सरदारपुरा, जोधपुर(राज.)
११५१७ श्री रघुनाथ जी भंसाली, लखारा बाजार, जोधपुर (राज.)
११५१८ श्री सम्पतराज जी कछारा, महिला आश्रम के पास, भीलवाड़ा (राज.)
११५१९ श्री संजय जी अलावत, निर्मल बिहार, उदयपुर (राज.)
११५२० श्री सुरेन्द्र कुमार जी जैन, गोपालपुरा बाईपास, जयपुर (राज.)
११५२१ श्री गणेशलाल जी मेहता, अशोक नगर, उदयपुर (राज.)
११५२२ श्री अक्षय सिंह जी बोरदिया, डोरे नगर, उदयपुर (राज.)
११५२३ श्री मुकेश कुमार जी जैन, आलनपुर, सवाई माधोपुर (राज.)
११५२४ श्री जेठमल जी बोहरा, जय स्तम्भ चौक, राजनाँदगाँव (छतीसगढ़)
११५२५ Shri Chandra Raj ji Mehta, Worli, MUMBAI (M.H.)
११५२६ Shri Raguvendra Raj ji Mehta, Worli, MUMBAI (M.H.)
११५२७ श्री बी. आनन्दराज जी पगारिया, हिम्मतनगर, हैदराबाद (आन्ध्रप्रदेश)
११५२८ श्री पी. अजयकुमार जी बाफणा, कोठी, हैदराबाद (आन्ध्रप्रदेश)
११५२९ श्री निर्मल कुमार जी ललवाणी, सिकन्दराबाद (आन्ध्रप्रदेश)
११५३० श्री एस. मूलचन्द जी छाजेड़, हिंगोली (महा.)
११५३१ श्री एम. महावीरचन्द जी संचेती, हैदराबाद (आन्ध्रप्रदेश)
११५३२ श्री लहरचन्द जी लोढ़ा, जम बाग, हैदराबाद (आन्ध्रप्रदेश)
११५३३ Shri Rajesh ji Kiyawat, Essamia Bazar, HYDERABAD (A.P.)
११५३४ श्री गजराज जी कवाड़, एस.आर.नगर, हैदराबाद (आन्ध्रप्रदेश)
११५३५ श्री भीकमचन्द जी पोकरणा, काचीगुड़ा, हैदराबाद (आन्ध्रप्रदेश)
११५३६ श्री सरदारमल जी बांठिया, ओल्ड घासमंडी, सिकन्दराबाद (आन्ध्रप्रदेश)
११५३७ श्री बी. बसन्त कुमार जी बाफना, हैदरगुडा, हैदराबाद (आन्ध्रप्रदेश)

११५३८ Shri Laxmipat ji Baid, Ramgopal Pet, SECUNDERABAD (A.P.)
११५३९ श्री भोपालसिंह जी कावड़िया, सेन्ट नगर, हैद्राबाद (आन्ध्रप्रदेश)
११५४० श्री मंगलचन्द जी कटारिया, पोट मार्केट, सिकन्दराबाद (आन्ध्रप्रदेश)
११५४१ Shri Rajendra ji Khivsra, Rasoolpura, SECUNDRABAD (A.P)
११५४२ Shri Uttam chand ji Damrani, HYDERABAD (A.P.)
११५४३ Smt. Rashmi ji Lodaya, Sulthan Bazar, HYDERABAD (A.P.)
११५४४ Shri Dhanraj ji Surana, Alwal, SECUNDRABAD (A.P.)
११५४५ Shri Suresh Chand J. Mehta ji, SECUNDRABAD (A.P.)
११५४६ Shri Kishore Chand ji Gothi, Jam Bagh, HYDERABAD (A.P.)
११५४७ Shri Dinesh ji Makhana, Shivaji Nagar, SECUNDRABAD (A.P.)
११५४८ Shri Darshan Kumar ji Nahar, UTTAR VADUNA, YEWATMAL
११५४९ Shri Vijay ji Surana, Clive Row, KOLKATTA (W.B.)
११५५० Mrs. Anupama ji Jain, Saket, INDORE (M.P.)
११५५१ श्री कमलेश जी पोरवाल, सूरजपोल के अन्दर, उदयपुर (राज.)
११५५२ Shri Prashant ji Bhansali, S.k. Ahire Marg, MUMBAI (M.H.)
११५५३ श्री व्यवस्थापक महोदयजी, महात्मा गाँधी सार्वजनिक वाचनालय, बोराड़ी, धुळे (महा.)
११५५४ श्रीमती सुशीला जी टाटिया, न्यू पॉवर हाऊस रोड़, जोधपुर (राज.)
११५५५ श्री अजय जी सुराणा, वनस्थली, टोंक (राज.)
११५५६ Smt. Lalita Bhidkachya, Sowcarpet, CHENNAI (Tamilnadu)
११५५७ Smt. Bhanwar Lal ji Bhatewada, CHENNAI (Tamilnadu)
११५५८ Shri Gyan Chand ji Lunavat, Shenoy Nagar, CHENNAI (Tamilnadu)
११५५९ श्री राकेश जी नन्दावत, उदयपुर (राज.)
११५६० श्री उदयप्रकाश जी गिरी, उदयपुर (राज.)

श्री आर. पदमचन्द जी बाघमार, चेन्नई के सौजन्य से

११५०७ श्री विशेश्वर लाल जी अग्रवाल, डिग्गी मौहल्ला, ब्यावर (राज.)
११५०९ श्री हर्षित जी जैन, सिटी पुलिस के पास, जोधपुर (राज.)

जिनवाणी हेतु साभार

५१००/- श्री देवेन्द्र कुमार जी, महेन्द्र कुमार जी बडेर, जयपुर, श्री हरीशचन्द्र जी बडेर का दि. ५.०३.२००८ को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्यस्मृति में भेंट।

३१००/- श्री आनन्द जी, धनपत जी, सुरेश जी भंसाली, मुम्बई, स्व. श्री विजयलाल जी भंसाली की प्रथम पुण्य तिथि दि. २८.०४.२००८ के उपलक्ष्य में भेंट।

३०००/- श्री उमरावमल जी सुराणा, चेन्नई, मुम्बई में पूज्य आचार्यप्रवर के एवं संत-सती मंडल के दर्शन लाभ लेने की खुशी में सप्रेम भेंट।

२१००/- श्री प्रकाशचन्द जी दिलीप जी लूणियाँ, पल्लीपेट-चेन्नई, पूज्य पिताजी श्री जवरीलाल जी लूणियाँ की पुण्य स्मृति में सपरिवार मुम्बई में पूज्य आचार्यप्रवर के दर्शनलाभ लेने के उपलक्ष्य में भेंट।

२१००/- श्री जीतमल जी, शांतिचन्द जी सुमतिचन्द जी, सुनील जी, सुरेश जी कोठारी परिवार, जयपुर, पूज्या मातुश्री श्रीमती जतनदेवी जी कोठारी धर्मपत्नी स्व. श्री सुमेरचन्द जी कोठारी का दिनांक २४.०६.२००८ को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

२०००/- कु.करिश्मा जी सुराणा सुपुत्री श्री श्रीपाल जी सुराणा सुपौत्री श्री उमरावमल जी सुराणा, चेन्नई, कु. करिश्मा जी का बैंकटेश्वर इन्जिनियरिंग कॉलेज, चेन्नई में द्वितीय वर्ष में प्रथम स्थान प्राप्त करने की खुशी में सप्रेम भेंट।

११००/- श्री जयचन्द जी, रमेशचन्द जी लूणियाँ, पल्लीपेट-चेन्नई, पूज्य पिताश्री जवरीलाल जी लूणियाँ की पुण्य स्मृति में सपरिवार मुम्बई में पूज्य आचार्यप्रवर के दर्शन लाभ लेने की खुशी में भेंट।

११००/- श्री सूर्यप्रकाश जी, शशिप्रकाश जी, शरदप्रकाश जी सुराणा, भुवनेश्वर, पूज्य माताश्री श्रीमती विमलेश जी सुराणा धर्मपत्नी स्व. श्री पानमल जी सुराणा का दिनांक ०५.०६.२००८ को स्वर्गवास होने पर पुण्य स्मृति में भेंट।

११००/- श्रीमती केसरकंवर जी व श्री मूलराजजी धारीवाल, जोधपुर, अपने सुखी दाम्पत्य जीवन के ७५वें वर्ष में प्रवेश करने की खुशी में सप्रेम भेंट।

१०००/- श्री छगनमल जी लुणावत, बैंगलोर द्वारा लुणावत जैन स्थानक भवन के उद्घाटन के शुभ प्रसंग पर छगनमल शांतिलाल लुणावत परिवार(लूणी निवासी)द्वारा सप्रेम भेंट।

७५०/- श्री मोहनलाल सा जीरावला, जोधपुर, साध्वीप्रमुखा मैनासुन्दरी जी म.सा. के ७५ वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

७५०/- श्री जगदीश जी कोठारी, जोधपुर, साध्वी प्रमुखा मैनासुन्दरी जी म.सा. के ७५ वे जन्म दिवस के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

७०१/- श्री शान्तिचन्दजी, कान्तिचन्दजी, राजेशजी, संतोषजी, राकेशजी बोहरा, जोधपुर, अपनी पूजनीया माताजी स्व. श्रीमती गुमानकंवर जी धर्मपत्नी स्व. श्री आसुलाल जी रतन जी बोहरा का दि. १२.०६.०८ को संथारा पश्चात् स्वर्गगमन होने पर उनकी पावन स्मृति में भेंट।

७००/- श्री जैन रत्न विद्यालय संस्थान, भोपालगढ, भोपालगढ़ में नैतिक एवं धार्मिक शिक्षण शिविर के सफलतापूर्वक सम्पन्न होने पर सप्रेम भेंट।

६००/- श्री चंचलमल जी गांग, जोधपुर, अपने विवाह की ४२वीं वर्षगांठ एवम् सुपौत्र राहुल सुपुत्र श्रीमती योगिता एवं श्री राजेश जी गांग के १३ वें जन्मदिन दिनांक ११.०६.२००८ के उपलक्ष्य में भेंट।

५००/- श्री कवलराज जी मेहता, जोधपुर, अदिति मेहता (सुपौत्री श्रीमती सुशीला एवं श्री

कवलराज जी मेहता व सुपुत्री श्रीमती नूतन एवं श्री नरेन्द्र जी मेहता महाप्रबन्धक महानगर टेलीफोन निगम दिल्ली) के सी.बी.एस.सी. की दसवीं परीक्षा-२००८ में ९३.२ प्रतिशत अंक प्राप्त कर देहली पब्लिक स्कूल-दिल्ली क्षेत्र, रोहिणी में प्रथम स्थान प्राप्त करने के उपलक्ष्य में भेंट।

५००/- श्री रविन्द्र राज ज्ञानचन्द दुगड़, जोधपुर, श्रीमती विजयलक्ष्मी दुगड़ धर्मपत्नी स्व. श्री सम्पतराज सा दुगड़ की वर्षीतप की तपस्या के उपलक्ष्य में भेंट।

५००/- श्री नौरतनमल जी गांग, सुरत, स्व. श्रीमती किरण कंवर गांग की द्वितीय पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में भेंट।

५००/- श्री नौरतनमल जी गांग, सुरत, अपनी पुत्रवधू श्रीमती शशिजी गांग धर्मपत्नी श्री प्रवीणजी गांग व सुपौत्री सुश्री अमिता गांग सुपुत्री श्री प्रवीण जी गांग का दि. ०८.०६.२००८ को देहावसान होने पर उनकी स्मृति में भेंट।

जीव दया हेतु साभार

२१००/- श्री शरद जी, दलपत जी सिंघवी, प्रतापनगर, जोधपुर, अपने पूज्य पिताजी श्री प्रसन्नचंद जी सिंघवी एवं माताश्री श्रीमती कमला जी सिंघवी के वैवाहिक जीवन की ५० वीं वर्षगाठ के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

११११/- श्री उमरावमल जी सुराणा एवं श्रीमती ललिता जी सुराणा, जोधपुर, पूज्य पिताजी श्री सुजानमल जी सा सुराणा एवं मातुश्री श्री सुकनकंवर जी सुराणा की पावन स्मृति में सप्रेम भेंट।

११११/- श्री शान्तिचन्दजी, कान्तिचन्द जी रतन बोहरा, जोधपुर, अपनी पूजनीय माताजी के संथारा पश्चात् स्वर्गगमन पर दि. २०.०६.२००८ को सपरिवार उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के दर्शनलाभ एवं मांगलिक श्रवण के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

१०००/- श्री कल्याणमल प्रकाशमल चोरड़िया ट्रस्ट, चेन्नई द्वारा सप्रेम भेंट।

७५०/- श्री मोहनलाल सा जीरावला, जोधपुर, साध्वी प्रमुखा मैनासुन्दरी जी म.सा. के ७५ वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

७५०/- श्री ताराचन्द जी बाफणा, जोधपुर, साध्वी प्रमुखा मैनासुन्दरी जी म.सा. के ७५ वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

७५०/- श्रीमती पुष्पा जी मोहनोत धर्मपत्नी स्व. श्री सुमेरमल सा मोहनोत, साध्वी प्रमुखा मैनासुन्दरी जी म.सा. के ७५ वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

७५०/- श्रीमती सुशीला देवी बाफना धर्मपत्नी श्री राजेन्द्र जी बाफना, जोधपुर, साध्वी प्रमुखा मैनासुन्दरी जी म.सा. के ७५ वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

५०१/- श्री शान्ति जी मेहता, जोधपुर, स्व. श्री गौतमचन्द जी मेहता(लुणावत) की नवीं पुण्य तिथि पर सप्रेम भेंट।

५०१/- श्री गौतमचन्द जी गाँधी, भिस्तियों का बास, जोधपुर, श्रीमती स्व. विमला देवी जी गाँधी धर्मपत्नी श्री पदमचन्द जी गाँधी की छठी पुण्य तिथि के उपलक्ष्य में भेंट।

५००/- श्रीमती सविता जी कवाड़, भद्रावती (कर्नाटक) द्वारा सप्रेम भेंट।

५००/- श्रीमती प्रकाशवती जी जैन, सुनाम (पंजाब), सुश्रावक श्री दीपचन्द जी सुपुत्र श्री रलाराम जी का ८४ वर्ष की आयु में २२ घंटे के तिविहार संथारे सहित दिनांक ०४.०५.२००८ को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर को प्राप्त साभार

५१०००/- श्री शांतिलाल जी बागरेचा, हैदराबाद, सुश्री भावना जी बागरेचा की दिनांक ०७.०५.२००८ को मुम्बई में आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के मुखारविन्द से भागवती दीक्षा सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में भेंट।

५१०००/- श्री राजेन्द्र कुमार जी जैन, बड़ौदाकान, अलवर, सुश्री रितू जी जैन की दिनांक ०७.०५.२००८ को मुम्बई में आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के मुखारविन्द से भागवती दीक्षा सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में भेंट।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर को प्राप्त साभार

३५०००/- श्री स्वाध्याय समिति, चैन्नई (तमि.)

१००००/- श्रीमती अमृत कंवर कल्याणमल चोरड़िया ट्रस्ट, चेन्नई, श्री आलोक जी चोरड़िया को स्तम्भ सदस्य बनाने हेतु।

७०००/- सौ. चन्दाबाई जी धोका एवम् संजयकुमार व सुशीलकुमार जी धोका, जलगांव, पू. श्री मोहनमुनि जी म.सा. की दीक्षा के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

५०००/- रतनकंवर चंचलमल चोरड़िया चेरीटेबल ट्रस्ट द्वारा सप्रेम भेंट।

३५००/- श्रीमती रतन जी जैन, जोधपुर द्वारा सप्रेम भेंट।

२१००/- श्री मोहनलाल जी, शान्तिलाल जी बागरेचा, कल्याणपुरा, सुश्री भावना जी बागरेचा की दि. ०७.०६.२००८ को परम पूज्य आचार्यप्रवर १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के मुखारविन्द से जैन भागवती दीक्षा अंगीकार करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

२१००/- श्री किशोर कुमार जी, राजेन्द्रकुमार जी चौपडा, बालोतरा, अपने पिताजी स्व. श्री धनराज जी चौपड़ा की पावन स्मृति में स्वाध्यायी प्रवृत्ति हेतु भेंट।

१९८५/- श्रीमती कंचन जी मुथा, भोपालगढ़ द्वारा सप्रेम भेंट।

१६००/- श्रीमती इन्द्रा जी सालेचा, जोधपुर द्वारा सप्रेम भेंट।

१५००/- श्री रूपकुमार जी, मोहनराज जी, मदनराज जी, धर्मेश कुमार जी चौपड़ा, कवास वाले, बालोतरा, अपने पिताजी स्व. श्री खिवराज जी चौपड़ा की १६ वीं एवं माताजी स्व. श्रीमती आयचुकी देवी जी चौपड़ा की ८वीं पुण्यतिथि दि. ०६.०६.२००८ होने के अवसर पर उनकी पावन स्मृति में भेंट।

८००/- श्री सुनिल जी जैन, सुरत द्वारा सप्रेम भेंट।

७००/- श्रीमती राजकुमारी जी धर्मपत्नी श्री राजकुमार जी सर्राफ, कानपुर, विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. के जन्म-दिवस एवं विद्यानुरागी श्री शारदा जी म.सा. का आगरा में वर्षीतप सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

५००/- श्रीमान शंभुराज जी कर्णावट , जोधपुर, अपने सुपौत्र कृश कर्णावट के इण्डियन टेलीविजन एवार्ड में बेस्ट न्यू चाइल्ड अवार्ड प्राप्त होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)

दानदाता एवं दान एकत्रित करने वालों की सूची

२,५२,०००/- श्री धनपत जी भंडारी, मुम्बई

१,३२,०००/- श्री प्रकाशचन्द जी विमलचंद जी डागा एवं परिवार, जयपुर

१,०८,०००/- श्री दलीचंद जी कवाड़, चेन्नई

३६,०००/- श्री शांतिलाल जी बागरेचा, हैदराबाद, सुश्री भावना जी बागरेचा की दिनांक ७.०५.२००८ को मुम्बई में आचार्यप्रवर श्री हीराचंद जी म.सा. के मुखारविन्द से भागवती दीक्षा सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

२५,०००/- श्री विजय जी नाहर, इन्दौर

२४,०००/- श्री सौभाग्य चंदा बाई जी श्री संजय जी धोका, जलगांव, मुमुक्षु श्री मोहनलाल जी धोका की दिनांक ७.०५०८ को मुम्बई में आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के मुखारविन्द से भागवती दीक्षा सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

१२,०००/- श्री नरेन्द्रकुमार जी, सचिन जी जैन, हिण्डौन सिटी

१२,०००/- श्री दिलीप जी जैन, मुम्बई

छात्रवृत्ति योजना में इच्छुक दानदाता एक छात्रवृत्ति १२०००/- रु. के गुणक में जितनी छात्रवृत्तियाँ देना चाहें तदनुसार दानराशि 'गजेन्द्र निधि आचार्य श्री हस्ती स्कॉलर शिप फण्ड' योजना के नाम चैक या ड्राफ्ट से निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट करें- *श्री अशोक जी कवाड़, ३३, Montieth Road, Egmore, Chennai-600008 (Mob. 9381041097)*

आगामी पर्व

श्रावण कृष्णा ८	शनिवार, २६.०७.२००८	अष्टमी
श्रावण कृष्णा १४	गुरुवार, ३१.०७.२००८	चतुर्दशी
श्रावण कृष्णा ३०	शुक्रवार, १.०८.२००८	पक्खी, पूज्य आचार्य श्री शोभाचन्द जी म.सा. की ८२ वीं पुण्य तिथि
श्रावण शुक्ला ८	शनिवार, ९.०८.२००८	अष्टमी
श्रावण शुक्ला १४	शुक्रवार, १५.०८.२००८	चतुर्दशी

पर्युषण पर्वाराधना हेतु स्वाध्यायी आमन्त्रित कीजिए

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर विगत 62 से भी अधिक वर्षों से सन्त–सतियों के चातुर्मासों से वंचित गाँव/शहरों में 'पर्वाधिराज पर्युषण पर्व' के पावन अवसर पर धर्माराधन हेतु योग्य, अनुभवी एवं विद्वान् स्वाध्यायियों को बाहर क्षेत्र में भेजकर जिनशासन एवं समाज की महती सेवा करता आ रहा है। इस वर्ष भी उन क्षेत्रों में जहाँ जैन सन्त–सतियों के चातुर्मास नहीं हैं, स्वाध्यायी बन्धुओं को भेजने की व्यवस्था है। इस वर्ष पर्युषण पर्व 28 अगस्त से 04 सितम्बर 2008 तक रहेंगे। अतः देश–विदेश के इच्छुक संघ के अध्यक्ष/मंत्री निम्नांकित बिन्दुओं की जानकारी के साथ अपना आवेदन पत्र दिनांक 31 जुलाई 2008 तक इस कार्यालय को अवश्य प्रेषित करने का श्रम करावें। पहले प्राप्त आवेदन पत्रों को प्राथमिकता दी जायेगी।

1. गांव/शहरका नाम........................जिला.................प्रान्त..................
2. श्री संघ का नाम व पूरा पता..
3. संघाध्यक्ष का नाम, पता मय फोन नं...
....
4. संघ मंत्री का नाम, पता मय फोन नं...
....
5. संबंधित जगह पहुंचने के विभिन्न साधन...
....
6. समस्त जैन घरों की संख्या..
7. क्या आपके यहाँ धार्मिक पाठशाला चलती है?...
8. क्या आपके यहाँ स्वाध्याय का कार्यक्रम नियमित चलता है?.............................
9. पर्युषण सेवा संबंधी आवश्यक सुझाव..
10. अन्य विशेष विवरण..

आवेदन करने का पता-संयोजक/सचिव, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, प्रधान कार्यालय-घोड़ों का चौक, जोधपुर- 342001 (राज.) फोन नं. 2624891, फैक्स-2636763, मोबाइल-94141-26279

विशेष- दक्षिण भारत के संघ अपनी मांग श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ शाखा चेन्नई 24/25, Basin Water Works Street,Sowcarpet, Chennai-600079 के पते पर भी भेज सकते हैं। सम्पर्क सूत्र- सूरजमल जी भंडारी, फोन नं. 25295143 (स्वाध्याय संघ), 25381001, मो.9443336674

स्वाध्यायियों के लिये आवश्यक सूचना

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के समस्त स्वाध्यायी बन्धुओं से निवेदन है कि आप पर्युषण पर्व में अवश्य पधारकर अपनी अमूल्य सेवायें संघ को प्रदान करावें। बाहर गाँव पधारने से आपकी धर्म-साधना तो सुचारु रूप से होगी ही, अन्य भाई-बहिनों की साधना में भी आप निमित्त बन सकेंगे। आप अपनी पर्युषण स्वीकृति स्वाध्याय संघ कार्यालय, जोधपुर- के पते पर अवश्य भिजवाने का श्रम करावें।

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

कर्म निर्जरा का प्रबल साधन।
स्वास्थ्य वर्धक है पानी धोवन॥

With Best Compliments From :

SURANA
INDUSTRIES LIMITED

SIL

Manufacturers & Exporters of

Symbolises the Aspiration of Discerning Steel Buyers !

Premium Quality Steels, viz., HSD/CTD Bars, MS Rounds Structurals Like Flats, Channels Angles and Squares

Always Use SURANA STEELS to
Highlight your House/Industry

Regd. Cum Corporate Head Office
29, Whites Road, II Floor Royapettah, Chennai-600 014
Grams : **GURUHASTI**
Phone : 28525127 (3 Lines) Fax : 044 28521143
E-mail : suranast@vsnl.com
Website : www.suranaind.com

Works

F-67, 68 & 69 SIPCOT Industrial Complex
Gummidipoondi 601 201, Tiruvallur Dist. Tamilnadu
Ph.: 954119 222881 Telefax : 954119222880

Sales Yard

30, G.N.T. Road, Madhavaram, Chennai 600 110
Ph.: 25375531/32/33 Fax : 044 25375400

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का।।

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

With Best Compliments From :

पारसमल सुरेशचन्द कोठारी

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

प्रतिष्ठान

KOTHARI FINANCERS

27, Chandrappan Street
Chennai-600079 (T.N.) • Ph.# 42738436, 25298130

Branches :

Bhagawan Motors
Chennai-53, Ph.# 26251960

❖❖❖

Bhagawan Cars
Chennai-53, Ph.# 26243455/66

❖❖❖

Balaji Motors
Chennai-50, Ph.#26247077

❖❖❖

Padmavati Motors
Jafar Kan Peth, Chennai, Ph.#24854526

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

प्यास बुझाये,
कर्म कटाये,
फिर क्यों न अपनायें
- धोवन पानी

Courtesy :

Prithvi Exchange

A DIVISION OF PRITHVI SOFTECH LIMITED

33, Montieth Road, Egmore, Chennai-600008

Phone : 044-28553185, 42145478, 09381041097

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

A GLASS OF WATER WILL MAKE YOUR KARMA QUARTER

- धोवन पानी -

GURU HASTI GOLD PALACE

(Govt. Authorised Jewellers) (916. KDM)

22 Ct. Gold ! 24 Ct. Trust !

&

P. MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD

No. 4, 5 Car Street, Poonamallee, CHENNAI-600056

Hello-Hello

044-26272609, 55666555, 26272906, 55689588

अनछाना पानी-BAD। BAD॥

बिस्लरी पानी-OK। OK॥

छाना हुआ पानी-GOOD। GOOD॥

धोवन पानी-BEST। BEST॥

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

सहजता में धर्म का आधार।
धोवन पानी प्रथम आचार॥

Narendra Hirawat & Co.

Flat No. 1, Building No. 2, Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg, Matunga (West), MUMBAI-400016

Trin-Trin

Matunga Office : 022-24370713, 24380713, 66669707
Opera House Office : 022-30034282, 23669818
Mobile : 098210-40899

रत्नसंघ की विभिन्न संस्थाओं के प्रमुख पदाधिकारी

१.	**संयोजक-संरक्षक मण्डल**	022-30645000/23648004
	श्रीमान् मोफतराज जी मुणोत, मुम्बई	09820072724
२.	**संयोजक-शासन सेवा समिति**	
	श्रीमान् रतनलाल सी. बाफना, जलगाँव	0257-2225903/09823076551
३.	**गजेन्द्र निधि/गजेन्द्र फाउण्डेशन**	
	अध्यक्ष-श्रीमान् नवरतन जी कोठारी, मुम्बई	022-23673939/23698880
४.	**अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर**	**0291-2636763**
	अध्यक्ष-श्रीमान् सुमेरसिंह जी बोथरा, जयपुर	0141-2620571
		09414048830/09314048830
	कार्याध्यक्ष-श्रीमान् ज्ञानेन्द्र जी बाफना, जोधपुर	0291-2434355/09414093147
	महामंत्री-श्रीमान् नवरतन जी डागा, जोधपुर	0291-2654427/09828032215
५.	**सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर**	**0141-2575997, 2570753**
	अध्यक्ष-श्रीमान् पी. शिखरमल जी सुराणा, चेन्नई	044-25380387/25391597
		09884430000
	कार्याध्यक्ष-श्रीमान् नवरतन जी भंसाली, बैंगलोर	080-22265957/09844158943
	कार्याध्यक्ष-श्रीमान् आनन्द जी चौपड़ा, जयपुर	0141-3233318/09414090931
	मंत्री- श्रीमान् प्रेमचन्द जी जैन, जयपुर	0141-2212982/09413453774
६.	**अ.भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जोधपुर**	**0291-2636763**
	अध्यक्ष-श्रीमती (डॉ.) मंजुला जी बम्ब, जयपुर	0141-3292229/09314292229
	कार्याध्यक्ष-श्रीमती मधु जी सुराणा, चेन्नई	044-25293001/42765646
	मंत्री-श्रीमती आशा जी गांग, जोधपुर	0291-2544124
७.	**अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जोधपुर**	**0291-2641445**
	अध्यक्ष-श्रीमान् कुशल जी गोटेवाला, सवाईमाधोपुर	07462-233550/09414315098
	कार्याध्यक्ष-श्रीमान् प्रमोद जी हीरावत, जयपुर	0141-2742665/09314507303
	कार्याध्यक्ष-श्रीमान् बुधमल जी बोहरा, चेन्नई	044-26425093/09444235065
	महासचिव-श्रीमान् महेन्द्र जी सुराणा, जोधपुर	0291-2546501/09414921164
८.	**श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर**	**0291-2624891**
	संयोजक-श्रीमान् चंचलमल जी चोरडिया, जोधपुर	0291-2621454/09414134606
	सचिव-श्रीमती मोहनकौर जी जैन, जोधपुर	0291-3296033/09351590014
९.	**अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर**	**0291-2630490**
	संयोजक-श्रीमती सुशीला जी बोहरा, जोधपुर	0291-5108799/09414133879
	सचिव-श्रीमान् राजेश जी कर्णावट, जोधपुर	0291-2549925/09414128925
१०.	**अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र, जोधपुर**	**0291-2622623**
	संयोजक-श्रीमती विमला जी मेहता, जोधपुर	0291-2435637/09351421637
	सचिव-श्रीमान् सुभाष जी हुण्डीवाल, जोधपुर	0291-2555230/09460551096

JAI GURU HASTI JAI GURU HEERA JAI GURU MAAN

NO PAIN - ONLY GAIN – पियें धोवन पानी

With best compliments from :

SOHANLAL UMEDRAJ SURENDER HUNDIWAL

S.UMEDRAJ JAIN (HUNDIWAL)

098407 18382

2027 'H' BLOCK 4th STREET,12TH MAIN ROAD,
ANNA NAGAR, CHENNAI-600040
044-32550532

BRANCHES

APPOLO BRIGHT STEELS PVT LTD.
S.P.59, 3 rd MAINROAD
AMBATTUR ESTATE CHENNAI-600058
044-26258734, 9840716053, 98407 16056
FAX: 044-26257269
E-MAIL: appolobright@yahoo.com

APPOLO CORRUGATORS PVT LTD.
NO.400 NORTH PHASE, SIDCO INDUSTRIAL ESTATE,
AMBATTUR CHENNAI-60098
FAX: 044-26253903, 9840716054
E-MAIL:appolocorrugators@yahoo.com

SAPNA PACKAGING INDUSTRIES
NO.410 NORTH PHASE INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR, CHENNAI-600098
044-26241041

PENINSULAR PACKAGINGS
NO.25 SIDCO INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR CHENNAI-600098
044-26250564

आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-018/2006-08
वर्ष : 65 ★ अंक : 7 ★ मूल्य : 10 रु.
15 जुलाई, 2008 ★ आषाढ़ सं. 2065

धोवन पानी - निर्दोष जिन्दगानी

Stop existing.
Start Living.

Kalpataru brings you residences that embody the essence of lifestyle living. A space you will be proud to call home.

KALPATARU AURA
L.B.S. Road, Ghatkopar (W)

KALPATARU ESTATE
On Jogeshwari-Vikhroli Link Road, Andheri (E)

KAMDHENU
At Hari Om Nagar, Mulund (E)

SIDDHACHAL
Pokhran Road No.2, Thane (W)

KALPA-TARU®
101, Kalpataru Synergy, Opposite Grand Hyatt, Santacruz (E), Mumbai 400 055
Tel: 3064 3065, Fax: 3064 3131. E-mail: sales@kalpataru.com. Visit: www.kalpataru.com

Properties professionally managed by PROPERTY SOLUTIONS (I) PVT. LTD. www.propertysolutions.co.in

स्वामी-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिये मुद्रक संजय मित्तल द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, एम.एस.बी. का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशक प्रेमचन्द जैन, बापू बाजार, जयपुर से प्रकाशित। सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन।